विद्या भारती प्रदीपिका

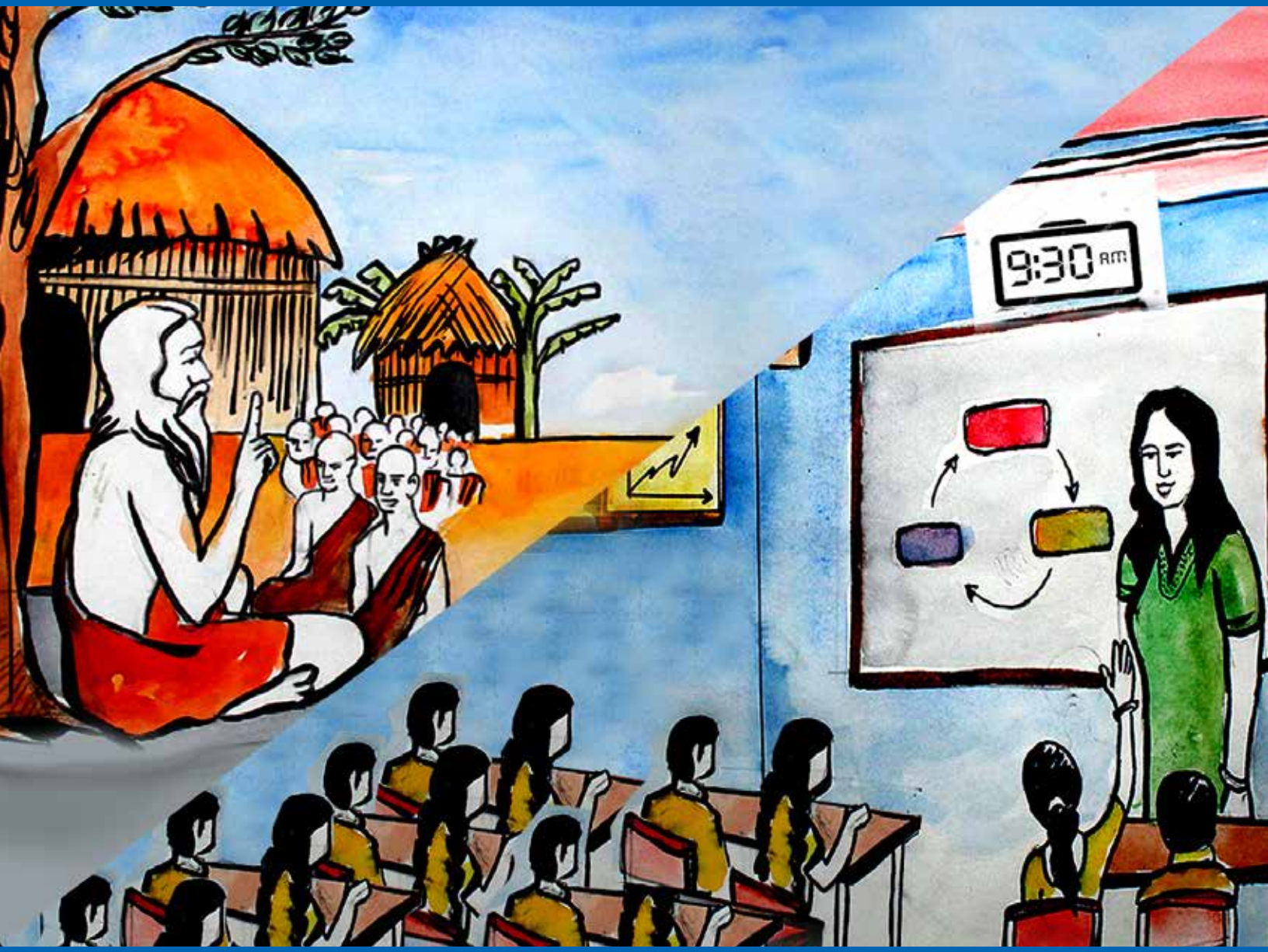

vk"kk< ls Hkknzin] foØe lor 2076] ;qxkCn 5121

tqykbZ ls flrEcj 2019 o"kZ 39 vad 4 eY; 35@&#

विद्या भारती प्रदीपिका

¼fo|k Hkkjrh vf[ky Hkkjrh; f'k{kk lLFkku dh =ekfld if=dk½

जुलाई से सितम्बर २०१९ मूल्य ३५/-रु. आषाढ़ से भाद्रपद, विक्रमी संवत् २०७६, युगाब्द ५१२१

मार्गदर्शक
डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा
श्री डी.रामकृष्ण राव
श्री दिलीप बेतकेकर
डॉ. रमा मिश्रा
डॉ. रवीन्द्र कन्हेरे

सम्पादक
श्रीमती सविता कुलश्रेष्ठ

सम्पादक मण्डल
श्री राजेन्द्र सिंह बघेल
डॉ. अरुण मिश्र
श्री वासुदेव प्रजापति
डॉ. पवन शर्मा

संपादन सहायक
कौशलेश कुमार उपाध्याय
आवरण सज्जा- मारियाप्पा मार्टिन

प्रकाशन कार्यालय
प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे.सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली -110065
फोन न. 011-29840126,29840013
ईमेल-vbpradeepika@yahoo.co.in

सदस्यता शुल्क
वार्षिक शुल्क- 120/-रु.
दस वर्षीय शुल्क- 800/-रु.

शुल्क राशि 'विद्या भारती प्रदीपिका' के बचत खाता क्र. 1130307980 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया IFSC-CBIN0283940 ब्रांच नेहरू नगर, नई दिल्ली में जमा कर पत्र द्वारा कार्यालय को सूचित करें।

मुद्रण- नक्षत्र आर्ट , बी-255, नारायणा इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110028

प्रदीपिका में प्रकाशित विचार रचनाकारों के हैं, पत्रिका की सहमति आश्वयक नहीं है।

vuØef.kdk

चाँद के पार चलो (सम्पादकीय)		4
शिक्षा की हमारी संकल्पना	डॉ. मोहनराव भागवत	5
भारतीय शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि	डॉ. शिव कुमार शर्मा	10
भारत के बनें और भारत को बनाएँ	श्री तपन कुमार	13
क्षमता का विकास कैसे करें?	श्री अवनीश भटनागर	21
कक्षा में शैक्षिक परिणाम -एक अनुभव	श्री राजेन्द्र सिंह बघेल	23
राष्ट्र सर्वोपरि	श्री संजय पांडेय	26
कारगिल याद रहे !	श्री आलोक गोस्वामी	28
भारतीय अंतिरक्ष के विश्वविख्यात वैज्ञानिक	श्री विष्णु शर्मा	31
कितनी मंदी-कितनी चिन्ता	श्री अश्वनी महाजन	34
देश भक्ति व ज्ञान का अद्भुत खजाना भारत दर्शन गलियारा	श्री संदीप जोशी	37
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की कार्यकारिणी बैठक दिल्ली		40
पर्यावरण संरक्षण व भारतीय दृष्टि	श्री रवि कुमार	44
शिक्षा स्वरूप, सरोकार और राष्ट्रीय आकांक्षा	श्री अरुण मिश्र	46
सर्वस्वदानी भारतरत्न नाना जी देशमुख	श्री कौशलेश कुमार उपाध्याय	48
The Reasearch of Moon is -'Chandrayaan-2'	S.K. VATTA	50
Mr. Chaman lal ji - Great contributetor of RSS	Raj Kumar Bhatia	54
"A Model School in Each District is our Priority" Interview Yatindra Kumar	Pramod Kumar	56
Piyong Temjen Jamir	Pankaj Sinha	61

सम्पादकीय

चाँद के पार चलो

22 जुलाई 2019 को दोपहर 2:45 बजे चन्द्रयान-2 के लाँच का समाचार देखते-देखते सत्तर के दशक में आई फिल्म पाकीज़ा का गीत ''चलो दिलदार चलो, चाँद के पार चलो'' मन में कौंध गया। कितना अद्‌भुत समीकरण, कवि कल्पना करता है और वैज्ञानिक साकार करता है। यूँ तो सृष्टि के प्रारम्भ से मानवीय जिज्ञासा अत्यंत प्रबल रही है। उसी जिज्ञासा ने मनुष्य को अपने पास अद्‌भुत अकल्पनीय सत्य के उद्‌घाटन की प्रेरणा दी है। इस सृष्टि का प्रत्येक जीव स्वयमेव सीखने की प्रक्रिया मे संलग्न रहा है। यद्यपि पशुओं के लिए कभी औपचारिक व्यवस्था नहीं रही परन्तु ईश्वर की रचना की महानतम कृति मानव अपने मस्तिष्क का पर्याप्त उपयोग करते हुए स्वयं को जंगली जीवन से इस आधुनिकतम सभ्यता व तकनीकी संसार तक पहुँचाया है।

यह पृथ्वी जो सबकी थी उसको अपनी-अपनी रुचि, आवश्यकता और जीवन यापन प्रणाली के अनुसार भौगोलिक रूप से बाँट लिया। द्वीप बने, शहर बने, देश बने। अपना-तेरा, संघर्ष और समाधान; इस प्रकार विभिन्न सभ्यताओं को जन्म हुआ।

सीखने की प्रक्रिया इतनी प्रबल होती गई कि मानव के जीवन में चिंतन-मंथन और सोच-विचार ने विशेष जगह ले ली। अपने-अपने भौगोलिक स्थानानुसार शिक्षा और उसकी व्यवस्था पर चिंतन-मंथन हुआ। अपने-अपने भाग में अनुशासन, नियम, विधि-विधान पर विचार हुआ। शिक्षा प्रणाली का जन्म हुआ परन्तु मौलिक प्रवृत्ति, स्पर्धा-ईर्ष्या ने मनुष्य को नहीं छोड़ा। यदि यह संघर्ष कहीं और लड़ाई-झगड़े का कारण बना तो इसने प्रतियोगिताओं को भी जन्म दिया। एक दूसरे से सीखने, सिखाने व सहयोग की भावना आई। प्रत्येक समाज पर उसकी जलवायु, भौगोलिक वातावरण का भी व्यापक प्रभाव रहता है अतः इसके कारण अलग-अलग संस्कृतियों का भी जन्म हुआ।

भारत में शिक्षा का अर्थ केवल सीखने की प्रक्रिया से ही नहीं है अपितु अपनी सनातन परम्परा व धरती से ऊपर ब्रह्मांड को जानने के लिए आतुर जिज्ञासा रही है। अतः भारतीय शिक्षा-दर्शन अध्यात्मिक उपलब्धि तक पहुँचने की प्रेरणा देता रहा है। हमारे ऋषि-मुनियों ने सदा एकान्त व शान्त स्थान में अज्ञात की खोज में अपना जीवन लगा दिया और हमारे ज्ञान के प्रकाशित सबूत वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों के रूप में हमारे समक्ष है। अपने ग्रंथों का अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होता है कि हमारे देश का प्रत्येक कर्म धर्माधारित होने की ओर इंगित करता है। अर्थात् भौतिकवाद हमारी परम्परा नहीं रही बल्कि हमारी शिक्षा का प्रयोजन धर्म रहा है।

समय के साथ-साथ जैसे अन्य परिवर्तन होते रहते हैं वह हमें संकेत करते हैं कि हमारी शिक्षा पद्धति में भी आवश्यकतानुसार परिवर्तन होना चाहिए परन्तु अपने मूलभूत सिद्धान्तों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर। अतः हमें ज्ञानार्जन में सम्पूर्ण सृष्टि से तादात्म्य स्थापित करने की सीख मिलती रही है। इसीलिए हमने सदा सबके हित की बात कही, जब हमनें अपने से अधिक विकसित देशों को अंतरिक्ष में खोज करते देखा। रूस और अमेरिका की चन्द्र यात्राओं का समाचार जाना तो हमारे भाभा और साराभाई जैसे वैज्ञानिकों ने एड़ी-चोटी का जोर लगा कर भारत को इस ऊचाई तक पहुँचाया कि हम भी चन्द्रयात्रा के लिए उत्सुक हुए और अब चन्द्रायन-2 की सहायता से इस स्वप्न को सहज ही 7 सितम्बर 2019 तक साकार कर लिया।

अपनी कहावत के अनुसार 'जितनी चादर उतने ही पैर पसारो' को ध्यान में रखकर मितव्ययता से हमने इस अभियान को सफल बनाया है और भारत की परम्परा, स्थिति, संस्कृति को सम्मान देते हुए हम निरंतर ब्रह्मांड की खोज में खोज में आगे बढ़े ऐसी मेरी ईश्वर से प्रार्थना है। अभी तो चाँद पर कदम रखेंगे उसकी जानकारी लेंगे परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं चाँद के आगे भी अंतरिक्ष है। सम्पूर्ण ब्रह्मांड खोजना है बहुत काम बाकी है जो हमें अपनी क्षमता के अनुसार निरंतर प्रयोग करते हुए अपने देश की अस्मिता को अक्षुण्ण रख कर करने हैं। इसके लिए शिक्षा को निरन्तर परिवर्तन से गुज़रना होगा परन्तु इसके लिए अपने आधारभूत सिद्धान्तों की बलि न चढ़े इस पर नज़र रखनी होगी । प्रसाद की पंक्तियाँ नित्य प्रेरणा बनकर हमारे साथ हैं

इस पथ का उद्देश्य नहीं
शांत भवन में टिक रहना ।
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं।।

अतः चाँद के पार ही जाना होगा ।

– सम्पादक

शिक्षा की हमारी संकल्पना

मार्गदर्शन

(परमपूज्यनीय सरसंघचालक माननीय ***डॉ. मोहन भागवत*** जी द्वारा दिए गए भाषण का संकलित।)

आप सभी शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत लोगों के समक्ष 'शिक्षा हमारी संकल्पना' इस विषय पर चर्चा करना मेरे लिए जरा कठिन कार्य है। शिक्षा का यह विषय सभी मनुष्यों से सम्बन्धित है। संकल्पना से सम्बन्धित कुछ मूलभूत बाते हैं जो अध्ययन करने वालों को पता ही हैं, लेकिन जो अध्ययन नहीं करते उन्हें जीवन–अनुभव से पता चलता है।

पशुओं की शिक्षा मनुष्यों को दी जाने वाली शिक्षा जैसी नहीं होती क्योंकि पशु में विचार नहीं है। जन्म लेने के बाद पशुओं को मरते दम तक जीना है और जीने के लिए मजबूरन जो-जो सीखना पड़ता है वह पशु सीखता ही है। पशु को मनुष्यों जैसी शिक्षा देने का प्रयास होता है तब फिर उनमें विकृति आती है, वह सर्कस का पशु बनता है। ऐसे प्रयोग भी हुए हैं। जंगल के सिंह आदि घर में पाले गए और बड़े होने के बाद कानून के तहत उन्हें जंगल में छोड़ने की बात आई तब पाया गया कि वह जंगल में जीने के लायक नहीं रहे। शिक्षा देने का उल्टा परिणाम वहाँ पर होता है। जो शिक्षा लेनी है वह पशु स्वतःस्फूर्ति से लेते हैं क्योंकि उनको केवल जीना है। आहार, निद्रा, भय, मैथुन इसमें पशुओं की कहानी समाप्त; उनके जीवन में और कुछ नहीं होता। विचार नहीं है, इसलिए जीवन में कुछ करना है ऐसी इच्छा उनके मन में जगती ही नहीं। मनुष्य ऐसा नहीं है। मनुष्य को इसके अतिरिक्त जीवन में बहुत कुछ करना होता है, करने की इच्छा उसमें होती है और सृष्टि में विचार करने वाला सबसे बुद्धिमान प्राणी होने के नाते सारी सृष्टि से सीखना उसका दायित्व बनता है। क्योंकि अगर वह नहीं सीखा तो जो नहीं सीखना चाहिए वह सीखेगा। पशु तो पशुत्व के धरातल पर आकर रुक जाएगा, उसके आगे नहीं जाएगा परन्तु मनुष्य वहाँ रुकेगा नहीं। सीखेगा नहीं तो, पशु बना रहेगा या उससे भी बदतर हो जाएगा। जड़ भी बन सकता है, हिंसक पशु के समान भी बन सकता है अथवा राक्षस प्रवृत्ति उसमें आ सकती है। इसलिए मनुष्य का उन्नयन हो उसका जीवन स्तर वास्तव में मनुष्य जीवन वाला हो, इसलिए शिक्षा आवश्यक है। हर व्यक्ति के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है, इसलिए शिक्षा का चिंतन सनातन है। आज यह चिंतन हम पहली बार कर रहे हैं ऐसी बात नहीं है, जब से मनुष्य दो पैरों पर चलने लगा तब से उसने सोचना, सीखना प्रारम्भ किया और सीखते-सीखते यहाँ तक आ गया। सीखने से सोच बढ़ती है और सोचने से सीखना बढ़ता है। सोचते-सोचते मनुष्य सीखने लगा है, सीखते-सीखते सोचने लगा। इस प्रकार सनातन काल से शिक्षा का चिंतन चल रहा है।

सात संघर्ष

सामान्य रूप से आज जो परिस्थिति है वो मनुष्य के कारण बनी है, उसके बारे में यूनेस्को की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। मुझे उसमें एक उदाहरण मिला, उसमें कहा

गया है आज के मनुष्य के जीवन में सात प्रकार के संघर्ष हैं, जिससे वह सात प्रकार के तनाव में जीता है। पहला संघर्ष है-

वैश्विक बनाम स्थानिक

दोनों का मेल नहीं है, दोनों तरफ खीचंतान चल रही है। स्थानीय लोग अपने बारे में सोचते हैं और वैश्विक चिंतन की तरफ ध्यान नहीं देते। वैश्विक चिंतन और स्थानीय चिंतन एक साथ दोनों नहीं चल सकते, इसलिए आपस में तनाव है। ऐसे ही वैश्विक हित की कल्पना और व्यक्तिगत हित की कल्पना में संघर्ष है। एक व्यक्ति को सुखी होना होता है तो विश्व के हित की बलि देनी होती है। विश्व को सुखी होना है तो मनुष्य को अपने हित को दबाना पड़ेगा ऐसा मानकर दुनिया चल रही है। इसलिए वहाँ भी **संघर्ष** है। परम्परा से जो चलता आया है और आधुनिक जो कहा जाता है उनमें विरोध है। एक दूसरे के साथ नहीं चल सकते।

मनुष्य के स्वभाव में परम्परा का हिस्सा भी है जो उससे अलग नहीं किया जा सकता है। साथ ही मनुष्य की चाह आधुनिकता की ओर रहती है वह उससे भी अलग नहीं हो सकता। इन दोनों का संघर्ष ही उसका तनाव है। दूरदृष्टि और तात्कालिक दृष्टि दोनों एक साथ नहीं चल सकती। तात्कालिक मोह से दूर का घात होता है और दूरदृष्टि से हाथ में सुख नहीं लगता, इसलिए तनाव है।

स्पर्धा का संघर्षः स्पर्धा है दुनिया में लेकिन समता की आवाज भी उठ रही है, परन्तु दोनों का मेल नहीं है। समता लाने का प्रयास होता है तो स्पर्धा निरुत्साहित होती है। स्पर्धा को प्रोत्साहन देते हैं तो समता का तत्त्व मार खाता है, इसलिए संघर्ष चल रहे हैं। ज्ञान बढ़ रहा है, लोग कहते हैं कि ज्ञान का विस्फोट हो रहा है, परन्तु उसे पचाने के लिए ताकत न होने के कारण मनुष्य का जीवन सुखी होने के बजाय अधिक दुःखी बन रहा है। **'नॉलेज एक्सप्लोजन' है लेकिन 'नॉलेज एसिमिलेशन'** नहीं है। ज्ञान को पचाने में अगर हम वक्त लगाएँगे तो ज्ञान प्राप्त करने की गति कम हो जाएगी। इन दोनों में विरोध है।

अध्यात्म और भौतिकवाद का संघर्षः

दिखने वाली जो दुनिया है उसका आनन्द या उपभोग प्राप्त करें तो फिर इस संसार से परे कुछ अस्तित्व है इसका विस्मरण हो जाता है, जीवन दुःखी हो जाता है। उसकी खोज में लगो तो दुनिया का सुख छोड़ना पड़ता है। इन दोनों का जो संघर्ष है वह भी मनुष्य को दुःखी बनाता है। ऐसे सात तनाव आज दुनिया में हैं। दुनिया में विकास तो बहुत हुआ, ज्ञान तो बहुत बढ़ा, लेकिन समाधन नहीं मिला। क्या इस यात्रा में मनुष्य आज स्वयं ही अपने हाथों से सृष्टि और स्वयं का विनाश कर लेगा? ये भी प्रश्न बार-बार चिंतकों के मन में उठ रहे हैं। तो इतने दिनों में मनुष्य ने क्या सीखा?

मनुष्य के जीवन की तरफ देखते हैं तो गाँधी जी ने जो सात पाप बताए हैं आज चारों ओर की परिस्थिति में उन्हीं का प्रादुर्भाव हमें दिखाई देता है। राजनीति तत्त्वहीन है। सम्पत्ति बिना परिश्रम के इक्ट्ठा करने का प्रयास चल रहा है। काम करने वाले मजदूर होते हैं मालिक नहीं। बिना परिश्रम की सम्पत्ति से सुख है लेकिन विवके नहीं है। सुखों का अविवेकी भोग । ज्ञान जिसके पास है, चरित्र का उसके पास अभाव सा है। व्यापार चलता है, उसमें नीति नहीं। विज्ञान है, लेकिन उसमें मानवता का स्पर्श नहीं। पूजा त्याग के बिना हो रही है। जीवन में त्याग का अभाव है। मनुष्य ऐसा आज बन गया है। इसलिए शिक्षा का चिंतन सनातन है । आज हमने जो आयोजन किया है समयानुकूल समस्याओं को लेकर समयानुकूल चिंतन शिक्षा पद्धति के बारे में यह समयोचित है।

प्रचलित शिक्षा पद्धति

आज दुनिया में जो प्रचलित शिक्षा पद्धति है उसमें मानव दिखने लिए तो प्रगति कर रहा है, लेकिन दूसरी ओर विनाश के कगार पर पहुँच गया है। विनाश को टालने के लिए शिक्षा मानव को कैसे दें ? प्रचलित शिक्षा पद्धतियों में हमारी परम्परा पर आधारित शिक्षा अधिकृत रूप से दी जा रही है ऐसा नहीं है और दुनिया के चिंतक ऐसा मानते हैं कि भारत की परम्परा में आपको आज की समस्याओं का उत्तर मिलेगा। एक फ्रेंच विद्वान् हैं लिखा कि ये सारी जो विनाशलीला चल रही है उसे टालने का एक ही उपाय है- ''नैतिक सरोकारों के प्रति जागरूकता होनी चाहिए, आध्यात्मिकता होनी चाहिए और नीतिपूर्ण जीवन होना चाहिए।'' वे आगे कहते हैं कि ''ये तीनों एक साथ भारत के पास ही मिलेंगे। इसलिए सारी दुनिया को भारत से शिक्षा लेनी चाहिए।'' परन्तु भारत में जो शिक्षा चल रही है वह इस तरह से चल रही है क्या? दृश्य तो विपरीत है। हम शीघ्र, अतिशीघ्र अपनी परम्परा की शिक्षा से दूर होकर मानव समाज में तनाव, समस्याएँ पैदा करने वाली शिक्षा पद्धति को अपनाने की चेष्टा कर रहे हैं। इसलिए हमें यह सोचना पड़ेगा कि हम अपनी शिक्षा को

न छोड़े अपितु उसे लागू करें।

दुनिया में ऐसी शिक्षा का उदाहरण रखें जो मानव के विकास को साधेगी और सृष्टि को विनाश से बचाएगी।

शिक्षा पद्धति

जब मैं कहता हूँ तब उसके विस्तार में मैं नहीं जा रहा हूँ। लेकिन शिक्षा पद्धति में विषय में कई बार मैंने चर्चा सुनी, ज्यादा चर्चा इस बात पर हुई कि दस प्लस दो प्लस तीन या आठ प्लस दो प्लस दो रखना अथवा सात प्लस पाँच रखना। केवल खाका बदलने से शिक्षा में बदलाव से बात नहीं बनेगी। खाका कुछ भी रखो, शिक्षा जो मिलती है वह शिक्षा देने के पीछे जो दृष्टि होती है वो उससे मिलती है क्योंकि मनुष्य सिखाए कुछ भी, उसको सुनकर लोग नहीं सीखते, उसको देख कर लोग सीखते हैं। मनुष्य मुँह से बात कुछ भी करे, करेगा वही जिस पर उसने अपनी आदत को ढाला है और आदत बनती है मनुष्य के अपने विचारभूमि से।

जीवन दृष्टि शिक्षा का आधार

विचारों की पृष्ठभूमि क्या है? उसमें जब तर्क और फर्क नहीं करते, मूल संकल्पना को ही नए सिरे से नहीं सोचते तब तक शिक्षा में अपेक्षित परिवर्तन आना सम्भव नहीं है। शिक्षा मनुष्य के मन में प्रश्न जागने से शुरू हुई। मनुष्य के मन में मूलभूत प्रश्न बहुत दिनों से चल रहे थे मनुष्य और सृष्टि का स्वरूप क्या है? उसका आपस में सम्बन्ध क्या है? और उसका पर्यवसान क्या होने वाला है? इसके सम्बन्ध में जो दृष्टि का अंतर रहा उसके कारण ही शिक्षा की कल्पनाओं में अंतर आता है। एक दृष्टि प्रचलित है मनुष्य और सृष्टि का स्वरूप जड़ मानती है। ऐसा क्यों है इस पर जाओ मत, क्योंकि वह सहज एक संयोग है। परमाणु थे, उसमें कोई एक ही बोसोन आ गया उसने उसको वस्तुमान दे दिया, गति मिल गई और उसके संयोग वियोग जो बने उसके चलते मनुष्य नाम का विचारशील प्राणी उत्पन्न हो गया, उसका विचार करना भी कणों की प्रक्रिया है, आपस में टकराने की, आपस में जुड़ने की और अलग होने की। नितांत जड़ प्रक्रिया है, इसके होने का अर्थ ही नहीं तब इसके समाप्त हाने का अर्थ भी नहीं। इसलिए जब तक वह है तब तक जियो और सुख से जियो। जीवन का प्रयोजन है सुख से जीना, जितना जीवन जिये उतने समय तक सुख से जिये। पशु के जीवन की प्रेरणा भी ऐसी ही रहती है। मृत्यु जब तक गर्दन पकड़कर उसको लील न जाए तब तक वह जीने का प्रयास करता है। आहार, निद्रा, भय, मैथुन उसी के लिए जीवन है और किसी से प्रयोजन कुछ भी नहीं। ऐसे में शिक्षा का प्रयोजन क्या है? जीवन के संघर्ष में खरा उतरे और बने तक पहला बन जाए, रेस में सबसे आगे दौड़े, हम कहते हैं कि हमारा जीवन कुछ अलग है। लेकिन वास्तव में अलग क्या है? अलग कुछ भी नहीं है। हाँ, जरा ज्यादा क्षमता होने के कारण हम विभिन्न क्षेत्रों के उपभोग चाहते हैं। पशु उन्हीं चार मूलभूत उपभोगों पर निर्भर करता है उससे अलग उसकी कोई चाह नहीं है। परन्तु हमको चाह है इसलिए तृष्णा है। अपनी दौड़ चलती रहती है, जीवनभर हम दौड़ते रहते हैं।

हमारी दृष्टि

आज की पीढ़ी के बारे हम कहते हैं, पीढ़ी तो ठीक है उसमें गड़बड़ नहीं है। लेकिन आज उसको जो दृष्टि दी जा रही है शिक्षा में और घर में भी कि भाई ज्यादा कमाओ, ज्यादा से ज्यादा दौड़ना है तुमको, सबसे आगे रहना है तुमको। क्यों? अपने सुख के लिए, उसके सुख के लिए। यह परम्परा चली तो सृष्टि विनाश के कगार पर आ गई। क्योंकि तनाव उत्पन्न हो गए, सम्बन्ध कुछ नहीं। साथ चलने की एक ही शर्त है हमारा सौदा पूरा करो। इसलिए तनाव और संघर्ष अपने आप आ गया। सरवाइवल ऑफ द फिटेस्ट! यानि फिटेस्ट एनिमल बनो। लेकिन एनिमल ही रहो। हमारे यहाँ कहा गया है कि ''आहार, निद्रा, भय, मैथुनंच, सामान्यमेतत् पशुर्भिनराणाम्।'' मनुष्य को जीना है तो यह चाहिए, लेकिन आगे कहा गया है 'धर्मो हि तेषां अधिको विशेषः, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।' हमने सृष्टि में जो सारी अलग-अलग चीजें हैं उसको जोड़ने वाला तत्व खोजा। मनुष्य के शरीर, मन और देह को जोड़ने वाली हमने आत्मा खोजी। अनुभव किया, बनाया नहीं। वह आत्मा इन तीनों को समन्वित रूप से चलाता है।

हमने मनष्य, समूह और सृष्टि को जोड़ने वाला परमात्मा देखा और कहा कि आत्मा उसी का अंश है। परमात्मा के कारण ही सारी दुनिया जुड़ी हुई है। इसलिए अर्थ, काम की उपलब्धि द्वारा तुम अपने पशु सदृश्य भावों को तृप्त करने का प्रयास करो, लेकिन ध्यान रहे कि तुम सब परमात्मा के अंग हो। इसलिए उस चक्कर में बाकी विनाश न हो, सबका विकास तुम्हारे साथ हो। इसलिए अर्थ, काम, मोक्ष तीनों बातों को जोड़ने वाला एक धर्म है उस पर चलो। मनुष्य अकेले रोटी खाकर

नहीं रह सकता, सबको मालुम है दुनिया में। ऐसा नहीं है कि दुनिया में मुक्ति की कल्पना नहीं है। दुनिया में सर्वत्र मुक्ति की कल्पना है। लेकिन अर्थ, काम और मुक्ति इन तीनों का मेल कैसे करें। हमारे यहाँ कहा गया है कि धर्म से सब प्राप्त होता है 'धर्मात् अर्थश्च कामश्च सधर्मं कि न सेव्यते।' आप कितना भी ज्ञान प्राप्त कर लें, मोक्ष का ज्ञान भी प्राप्त कर लें, लेकिन धर्म का ज्ञान प्राप्त नहीं करोगे तो आपको वो शाश्वत सुख नहीं मिलेगा।

धर्म : शिक्षा का प्रयोजन

शिक्षा का प्रयोजन धर्म है। शिक्षित व्यक्ति धारण करने वाला बने। धारण करने वाले शास्त्र को जानने वाला बने, जो गिरने नहीं देता सबको इक्ट्ठा रखता है और उन्नत करता है। धरणा धर्म से होती है, जिससे इहलोक में और परलोक में दोनों ओर सुख की प्राप्ति होती है। ''यतो अभ्युदय निश्रेयस सः सिद्धिः'' जो प्रत्येक वस्तु के स्वभाव को समझकर, सृष्टि को चलाने में सबके कर्तव्य को निर्धारित करता है उस धर्म का ज्ञान शिक्षा से मिले। मानव तो औपचारिक शिक्षा प्रारम्भ होने के पहले इतिहास के प्राचीन काल में भी रहता था। समूह बनाकर रहता था, टोलियाँ बनाकर रहता था और जीवन जीता था। शिकार करना सीख लिया था। लेकिन आज दुनिया भर में और हमको यहाँ पर शिक्षा पद्धति पर चिंतन करने की जरूरत क्यों पड़ी?, इसलिए कि मनुष्य का जीवन मनुष्य जैसा होना चाहिए और यह सृष्टि का जीवन चलना चाहिए। यह धर्म का प्रयोजन है। धर्म सबको जोड़ता है, इस विचार के कारण हमारे यहाँ कोई समस्या अनुत्तरित नहीं रही। हमारे यहाँ जड़ और चेतन इसमें कोई तनाव नहीं है। हमारे यहाँ कहा गया है आस्तिक बुद्धि रखो, ज्ञान और विज्ञान दोनों को जोड़ने से ये तीन गुण एक व्यक्ति में आवश्यक है। ''ज्ञानम् विज्ञानम् आस्तिक्यम्।'' हमारे यहाँ कहा गया है कि अविद्या से मृत्यु को तर जाओ और विद्या से अमृत की प्राप्ति कर लो। ''अविद्यया मृत्युं तीर्वां विद्ययाऽमृतमश्नुते।'' एक तरफ मत झुको क्योंकि यह सब जुड़ा हुआ है। पेट भी भरना चाहिए, शरीर की आवश्यकता भी पूरी होनी चाहिए और दूसरी तरफ दुनिया भी चलनी चाहिए, इसीलिए परोपकारी भी बनना है। यह समग्र ज्ञान की एकात्म दृष्टि ही हमारी विशेषता है। इसके आधर पर शिक्षा के बारे में सारी बातें हमने प्राचीन समय से निर्धारित करके रखी हैं। शिक्षा का प्रयोजन क्या है? फिटेस्ट एनिमल बनना, यह नहीं है। हमारे यहाँ कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति इस दुनिया में सत्य है। सारी दुनिया जुड़ी है। विविधता में एकता है और वहीं मैं हूँ। मेरा भी वास्तविक स्वरूप वह है। अपने स्वरूप के सत्य में पक्की धरणा बनाकर हम सत्य पर खड़े रहें और उसके आधर पर पर उस स्वरूप के तंत्र में चलें, किसी के गुलाम नहीं रहें। जिद्दु कृष्णमूर्ति कहते थे कि मनुष्य मात्र के जीवन में वास्तविक स्वतंत्रता लाना ये मेरा ध्येय है। उन्होंने अपना जीवन इस कार्य में लगा दिया। वास्तविक स्वतंत्रता क्या है? मनुष्य अपने तंत्र पर अपने स्वरूप में अवस्थित होकर चलें। मुक्ति कैसे मिलेगी तो विद्या द्वारा ''सा विद्या या विमुक्तये''।

मनुष्य मात्र को बंधनों से जो मुक्त करती है वह विद्या है। इसलिए शिक्षा क्या है? 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।' यानि इससे हम असत्य से सत्य की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर प्रस्थान करते हैं। सत्य को जानने के लिए असत् से गुजरना पड़ता है, परमेश्वर को पाना है तो जगत से गुजरो, माया मिलेगी, मिथ्या मिलेगी इन सब से गुजरना पड़ेगा। तमस् है, उसको भेद कर प्रकाश को पाना होगा तब मृत्यु के पार जाकर तुम अमरता को पा लोगे; यही शिक्षा है। शिक्षा में अपने अंदर एक तत्त्व है जो सबको जोड़ता है, जो कर्ता है, जो भर्ता है, धर्ता है और जब प्रसंग आता है तब नाश भी करता है, हर्ता भी है। वो तुम बनो। तुम वह हो, तुम वह बन जाओ। तुम भ्रम में हो, वैसा नहीं चल रहे हो, वैसा चलो। ऐसा मनुष्य को प्रभुता देने वाली, मनुष्य को निर्मिति की क्षमता देने वाली उसको कहा जाता है शिक्षा। इसलिए हमारे यहाँ शिक्षा की पद्धति में पहली बात कहा गई है-'प्रयोग तो करो' शिक्षा दो प्रकार की हो गई, जो देख रहे हो उसकी शिक्षा और देखने से जो परे है उसकी शिक्षा। इसलिए प्रयोग तो करना ही होगा। जड़ को भी समझना होगा, उसको भी जानना होगा।

श्रद्धा

प्रयोग श्रद्धा के साथ करना चाहिए। श्रद्धा कहने से मन में अंधश्रद्धा आ जाती है। किन्तु श्रद्धा और अंधश्रद्धा में कोई सम्बन्ध नहीं है। खूब परखो, लेकिन विश्वासपूर्वक परखो। हर बार खूब प्रश्न करो, किसी से भी, अपने कक्षा कक्ष में शिक्षक पर भी विश्वास मत करो मैंने एक अँग्रेजी में लेख पढ़ा है कि शिक्षा पद्धति कौन सी अच्छी? जो कहती है कि ये जो शिक्षक आया है न, आज क्लास लेने के लिए, सिखाने के लिए वो हमको ठगने वाला है। उसको हम दस सवाल करेंगे। उदाहरण दिया-एक शिक्षक आया है क्लासरूम में। उसने पूछा ज्यूलॉजी

की क्लास हो गई आपकी? हाँ, हो गई, तो बोरगैटो-सारस नाम का एक पशु है उसका नाम सुना है क्या आपने? कौन बता सकता है? तो किसी को मालूम नहीं था। इसलिए फिर उसने कहा तो फिर सब कहो हमको ये मालूम नहीं। उसने कहा ऐसा कभी मत करना क्योंकि बोरगैटो-सॅारस नाम का प्राणी ही नहीं है। ध्यान रखो तुमको जो सिखाने वाला आता है न, वो तुमको झूठ पढ़ाने वाला है ऐसा मानकर उससे तुम प्रश्न करो। तुम में से एक भी खड़ा होता है और कहता है कि हममें से किसी एक ने भी ये नाम सुना नहीं, आप कहाँ से लाए? तो मुझे आनंद होता। प्रश्न करो। आप यह नाम कहाँ से लाये? यह भी पूछो 'लेकिन बताने वाला भरोसे का व्यक्ति है ऐसा मानकर पूछो। स्वामी विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के यहाँ गए और उन्होंने पूछा क्या भगवान् को आपने देखा है? उनको भी यह सारे तर्क मालूम थे। वो स्वयं कहते हैं कि उस समय तक उनका भी विश्वास नहीं था क्योंकि न देखा हुआ बताने वाले बहुत मिले। देखा हुआ बताने वाला कोई नहीं मिला। सारे प्रमाण तो इसके खिलाफ हैं और इसलिए रामकृष्ण परमहंस जब बताने लगे, तो उन्होंने पूछा कि महाराज आप जो इतनी बातें बता रहे हैं तो बताइए, आपने भगवान को देखा है? उसके पीछे भाव यह नहीं था कि क्या बातें बना रहे हो। यह प्रश्न पूछूँगा तो बोलती बंद हो जाएगी। ऐसा नहीं था। लेकिन क्या वो वास्तव में ऐसा है, आप कह रहे हैं। मेरी परम्परा कह रही है इतने हजारों वर्षों से चला आ रहा है देश में ये असत्य तो नहीं होगा। लेकिन कोई बताए तो सही। जब उनको बताया गया कि हाँ देख रहा हूँ, तुम्हें जैसा देख रहा हूँ उससे भी स्पष्ट देख रहा हूँ। उससे बात भी करता हूँ । तुम भी कर सकोगे। मेरे बताए हुए रास्ते पर चलोगे तो तब वे शिष्य बन गए। प्रयोग करो, श्रद्धापूर्वक प्रयोग करो। बाहर के अनुभवों पर पूरा विश्वास करो इसे ही निरीक्षण कहा गया है। विद्वानों ने कहा है कि अपनी परम्परा में यदि वेद भी कहता है कि आग में हाथ डालने से हाथ नहीं जलेगा तो विश्वास मत रखो क्योंकि यह अनुभव नहीं है।

तर्क प्रमाण है, अनुभव प्रमाण है। लेकिन अंतःप्रमाण भी है। वह भी प्रकट होता है। सारी की सारी रसायन सेन्द्रिय रसायन प्रणाली से निकली पर उसका उद्‌गम कैसे हुआ? रचना क्या है अणुओं की? ये मिल नहीं रहा था। सारे तर्क, सारे गणित असफल हो गए। केक्युले नाम के एक शास्त्राज्ञ थे वे विचार करते-करते सो गए और सपने में उनको दो साँप एक दूसरे की पूँछ निगलते दिखे। स्वप्न दिखा और उससे एक कदम सूझा कि ये रचना हो गई। 'बान्डिंग ऑफ एटम्स' तब से निकला और उसमें से सारी रसायन शास्त्र की रचना हुई। किसी प्रयोग से नहीं, स्वप्न में मिली अंतश्चेतना से हुई। उस अंतश्चेतना पर भरोसा रखो और जो भी तुम्हारे निष्कर्ष हैं अनुभव के आधर पर देखो और परखो। उस पर जीवन में चलकर देखो, उसमें से जो खरा उतरता है उसको स्वीकार करो। चाणक्य ने अर्थनीति लिखी उसमें कई जगह मिलता है कि अमुक-अमुक एक प्रश्न है, इस सम्बन्ध में भीष्माचार्य का यह कहना है, शुक्राचार्य का यह कहना है, परन्तु मुझे अपने अनुभव से लगता है कि यह सही नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि वह उस जमाने के लिए उपयुक्त होगा परन्तु अब नहीं है। उनके प्रति मेरा अनादर का भाव नहीं है, परन्तु ये कालबाह्य है। मैंने इस पर चलकर देखा है इसलिए मेरा अनुभव ऐसा है क्योंकि मैंने ये प्रयोग करके देखा है। मैंने इस पर चलकर देखा है। अतः मुझे लगता है कि यह सही नहीं है। चाणक्य ने जीवन के सारे प्रयोग करने के बाद ही ग्रंथ लिखे। केवल पढ़ाया ही नहीं था विद्यापीठ में, अपितु जीवन के हर क्षण अनुभव करके साधा था। इसलिए तो यह ग्रंथ मगध साम्राज्य की स्थापना करवाने के बाद लिखा गया है। इस प्रकार की शिक्षा पद्धति में केवल जानकारी ही नहीं होती बल्कि जीवन के अनुभव भी होता है। जीवन में उसकी सार्थकता को सिद्ध करने के मिले अवसरों को परखा जाता था, तभी उसकी व्यावहारिकता सार्थक सिद्ध होती थी। इसलिए आज भी अवसर मिलने पर उसे सिद्ध करना चाहिए। व्यावहारिक बात है कि इसलिए ये बहुत ज्यादा अमान्य नहीं होती। आज भी तो इन्टर्नशिप करनी पड़ती है, ज्यूनियरशिप, इन्टर्नशिप, आर्टिकलशिप तो करनी ही पड़ती है। क्यों करनी पड़ती है?, पुस्तकों में तो सब है लेकिन अनुभव व आचरण से ही सिखना पड़ता है। इसलिए लागू करके देखो, प्रमाणित होने के बाद उसको करो। ऐसी कई व्यावहारिक बातें अपनी पद्धति में होनी चाहिए।

जिस संयम के द्वारा इच्छाशक्ति का प्रवाह तथा विकास वश में लाया जाता है और फलदायी होता है, उसे शिक्षा कहते हैं।

-स्वामी विवेकानन्द

भारतीय शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि

चिंतन

डॉ. शिवकुमार शर्मा
रसायन शास्त्र में पी.एच.डी.
भारतीय दर्शन, समाज, संस्कृति का गहन अध्ययन-चिंतन।
अनेक शोध लेख, विश्वविद्यालयों में सारगर्भित वक्तव्य
भारतीय शिक्षा पर पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य
सम्प्रति : विद्या भारती अखिल भारतीय मंत्री

वैदिक काल से लेकर १८वीं सदी तक भारत में शिक्षा की भूमिका मुक्ति प्रदायक रही है। प्राचीन शिक्षा पद्धति का अध्ययन करने से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षा संज्ञा नहीं, अपितु क्रिया रूप में दृष्टिगोचर होती थी। संज्ञा के रूप में विद्या शब्द व्यवहृत होता था। वेदों के अध्ययन के छः अंगों में से शिक्षा एक अंग है। शिक्षा का निरूपण अनेक ऋषियों ने किया, इसलिए यह उनके नाम से जानी गई। यथा वशिष्ठीय शिक्षा, पाणिनीय शिक्षा आदि।

भारतीय शिक्षा का स्वरूप

वर्तमान में शिक्षा के कुल ३२ ग्रंथ उपलब्ध हैं, इनमें अध्ययन और अध्यापन पर बल दिया गया है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि शिक्षा मात्र क्रिया रूप में प्रयुक्त होती थी न कि संज्ञा रूप में। फिर संज्ञा क्या थी? संज्ञा थी विद्या। विद्या शब्द पर भारतीय ऋषियों ने अनेकानेक उपनिषदों, पुराणों एवं नीतिग्रंथों में विस्तार से प्रकाश डाला है। विद्या वह है जो मुक्ति प्रदान करे। मुक्ति किससे? मुक्ति अज्ञानता से, प्रपंचों से, जड़ता से, अंधकार से, जन्म-मृत्यु के चक्कर से, द्रारिद्रय आदि से। विद्या शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की विद् धातु; (विद् व क्यप् तथा टाप्) से हुई है। जिसका अर्थ होता है जाना हुआ अर्थात् ज्ञान का अधिगम। इस प्रकार जो जानने योग्य है या जाना हुआ है, विद्या की श्रेणी में आता है। वेदों में भी उस परम सत्य को यथेष्ट रूप से जानने के विषय को विद्या शब्द के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

विद्या और अविद्या में भेद

इस प्रकार विद्या से अभिप्राय उस ज्ञान से है जो न केवल भौतिक दृष्टिकोण से प्राणिमात्र का कल्याण करे, अपितु उसको सम्पूर्ण सृष्टि के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए अभिप्रेरित भी करे। विद्या न केवल इस लोक के कल्याण की बात को प्रश्रय देती है अपितु मनुष्य या प्राणी मात्र के परलोक और अगले जन्मों की भी उन्नत करने के दृष्टिकोण को सक्रिय करती है। इसलिए मुण्डकोपनिषद् में विद्या के अर्थ से अभिप्राय परा और अपरा से है।

''द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च।''

अपरा से अभिप्राय वेद और वेदांग तथा परा से अभिप्राय परमात्मा के ज्ञान से है। इस प्रकार अपरा में जो विषय सम्मिलित हैं उनमें इस भौतिक जगत् का ज्ञान होता है, किन्तु परा के माध्यम से सम्पूर्ण जगत् के सृष्टि और लय को समझा जा सकता है। जो मनुष्य इन दोनों को मूल से जान लेता है, वही सही मायने में ज्ञानी है और इन दोनों को जानने से ही सृष्टि मात्र का कल्याण होता है। वैशेषिक दर्शन में कणाद ऋषि ने इसे कुछ इस प्रकार प्रकट किया है-

'यथोऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिः सः धर्मः।'

यानि जिससे इस लोक और परलोक

की सिद्धि हो, वही धर्म है। इस प्रकार जो भारतीय विद्या है, वह न केवल अर्थोपार्जन पर बल देती है, अपितु उसके आधर पर अपने अभीष्ट यानि परमात्मा में विलीन होने के लक्ष्य को भी साधती है। भारतीय दृष्टिकोण में जन्म का हेतु पृथ्वी के भोगों को भोगना मात्रा नहीं है, बल्कि उन भोगों को भोगकर अपने परलोके को सुधारना भी है। इसलिए धर्म इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता है। कणाद यहाँ पर जिस धर्म की बात करते हैं, वह धर्म कर्मकाण्ड से परे है। यहाँ पर धर्म से अभिप्राय मानवशास्त्र में वर्णित धर्म से है यथा-

धृतिः क्षमां दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधोदशकं धर्म लक्षणम् ।।

यानि धैर्य, क्षमा, दम (विकार का हेतु उपस्थित होने पर भी मन को उसमें न लगाना ही दम है), अस्तेय (पराये धन में आसक्ति न होना), शौच (पवित्रता), इन्द्रिय निग्रह (इन्द्रिय नियंत्रण), धी (विवेकवती बुद्धि), विद्या (अपरा और परा की समझ, क्योंकि इसी से व्यष्टि से समष्टि के भाव की प्रतीति होती है। यदि इसका ज्ञान नहीं तो सब कुछ व्यर्थ है), सत्य तथा क्रोध का नियमन (क्योंकि क्रोध ही समस्त विकारों का उत्पादक है) ये दस धर्म के लक्षण हैं। स्मृतिकार कहते हैं कि यदि मनुष्य इन गुणों से विभूषित नहीं है, तो वह धर्मिक नहीं कहा जा सकता। यह सनातन धर्म है। यदि ऐसा होता है तो मनुष्य सम्पूर्ण जगत में ईश्वर की अनुभूति करता है। ईश उपनिषद् का मुख्य हेतु यही है कि सम्पूर्ण जगत में ईश्वर की प्रतीति की जाए।

ईशावास्यमिदम् सर्वम् यत् किंचित् जगत्यामजगत्।

तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद धनम् ।।

इसी उपनिषद् में ऋषि -विद्या की परिभाषा कुछ इस प्रकार करते हैं कि जो केवल अविद्या (कम) की उपासना करते हैं, वे (अविद्या रूपी) घोर अंधकार में प्रवेश करते हैं और जो केवल विद्या (उपासना और ईश्वर भक्ति) में ही रत हैं, वे मानो उससे भी गहरे अंधकार में प्रवेश करते हैं-

अंध्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।

ततो भूय इव मे तमो ये उ विद्ययांरताः।।

इस श्लोक में ऋषि अति पर विराम लगाते हैं यानि न तो मात्र उपासना और न मात्र भोग में प्रवृत होने से परमात्मा की प्राप्ति होती है, बल्कि दोनों के समन्वय से ही परमात्मा की प्राप्ति संभव है। इस प्रकार समन्वय सृष्टि का ही नियम है अति नहीं। भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवत् गीता में इसी को 'अनासक्ति भाव' कहा है। ऋषि यहाँ पर विद्या और अविद्या दोनों के भेद को न केवल स्पष्ट करते हैं, बल्कि उसके परिणाम की भी व्याख्या करते हैं। यहाँ पर ऋषि आगे कहते हैं -

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदो भयंसह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।

यानि जो विद्या और अविद्या दोनों को एक साथ जानता है, वह अविद्या से मृत्यु को पार करके विद्या से अमृतत्व प्राप्त करता है। अर्थात् किसी भी मनुष्य के लिए विद्या और अविद्या के भेद को समझे बिना उसे व्यवहारिक रूप से क्रियान्वित किए बिना न तो जन्म बंधन के चक्र से उसे मुक्ति मिल सकती है और न ही वह अपने प्रारब्ध को उन्नत कर सकता है। अतः विद्या न केवल इह लोक को पुष्ट करती है, बल्कि परलोक को भी पुष्ट करती है। पुराणकार इसी बात को कुछ इस तरह से समझाते हैं -

विद्या बुद्धिर्विद्यायाम ज्ञानात्तात जायते।

बालोऽग्निं किं नद खद्योतमरेश्वरमन्यते।।

अर्थात् अज्ञान के कारण ही मनुष्यों के द्वारा अविद्या में विद्या को बुद्धि जाना जाता है। क्या बालक अज्ञानता वश खद्योत (जुगनू) को ही अग्नि नहीं समझ लेता है? यहाँ पर ऋषि उन पर कटाक्ष करता है जो अविद्या को ही विद्या के रूप में माने हुए हैं। क्या समकालीन शिक्षा व्यवस्था ऐसा ही नहीं कर रही है? और यही कारण है कि वर्तमान की समस्याओं का समाधन शिक्षा में अनेक प्रयोग करने के बाद भी निकल नहीं रहा। यह विडम्बना नहीं तो और क्या है?

'सा विद्या या विमुक्तये'

पुराणकार विद्या की व्याख्या कुछ इस प्रकार करते हैं यथा

तत्कर्म यन्न बंधाय सा विद्या या विमुक्तये ।

आयासायापरं कर्म विद्यान्या शिल्पनैपुणम् ।।

यानि कर्म वही जो बंधन का कारण न हो और विद्या वही है, जो मुक्ति की साधिका हो। इसके अतिरिक्त और कर्म तो परिश्रम रूप तथा अन्य विद्याएँ कला-कौशल मात्र ही हैं। यह स्पष्ट है कि कोई कर्म बंधन कारक है तो वह कर्म नहीं है। ठीक उसी प्रकार से जैसे यदि कोई विद्या आपको आसक्त कर देती है, तो वह विद्या नहीं है क्योंकि जैसे ही कर्म का स्वभाव बन्धनों से मुक्ति होता है वैसे ही विद्या का परिणाम समस्त वासनाओं से मुक्ति है। यदि ऐसा नहीं होता है तो यह मानना चाहिए कि न

वह कर्म, कर्म है और न ही वह विद्या, विद्या तो फिर वह क्या है? ऋषि उस कर्म को जो बंधनकारी है, मात्र श्रम मानता है तथा उस विद्या को जो वासनाओं से युक्त हैं उसे मात्र कला-कौशल मानता है। यही कारण है कि आधुनिक शिक्षा हमको मुक्त नहीं करती क्योंकि वह अपने में समग्र नहीं है, वह मात्र प्राणी/पूँजी के संख्यात्मक वृद्धि वाले पक्ष पर बल देती है न कि समग्र रूप में चिन्तन करती है। इसी कारण शिक्षा को प्राप्त करने के बावजूद भी मनुष्य सुखी नहीं हो पाता। हितोपदेश जिस सुख की बात करता है, उसका मूल हेतु विद्या ही है। हितोपदेश का रचयिता स्पष्ट कहता है -

'विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्राताम्।

पात्रात्वाद् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्।।'

यानि विद्या से मनुष्य विनम्र होता है, विनम्रता से उसमें पात्रता आती है, उस पात्रता से वह धन अर्जित करता है और इस प्रकार अर्जित किए हुए धन से वह अपने विहित कर्मों का पालन करता है और तब वह सुख प्राप्त करता है। यह विद्या और सुख का जो अन्तर्संबन्ध है वह एकात्म है। आधुनिक शिक्षा में मात्र सुख की प्राप्ति के एकांगी भाव के बारे में सोचा गया, जो अपने में अपूर्ण है, इसलिए शिक्षा भी है, सुख का आभास भी है। परन्तु मनुष्य फिर अनेक प्रकार के विकारों से क्लांत है। क्योंकि वह 'स्वकेन्द्रित मनुष्य अपने आप को नहीं जानता, वह सदैव अपने से अपरिचित ही रहेगा। जिस भाग को मनुष्य का मनुष्यपन कहा जाता है वह तो तभी ज्ञात हो सकता है जबकि मनुष्य के समाज और समय की सीमा में फैला उसका पूरा नाटक अपनी समग्रता में मनुष्यों के सामने किसी तरह संगठित हो सके। यहाँ पर समग्रता से अभिप्राय केवल रिश्तों को जोड़ना मात्र नहीं है और उसकी आंशिक समझ के लिए भी एक ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव आवश्यक है, जो प्रतीकात्मकता और उपमाओं की अपेक्षा रखता है। यहाँ पर जो बात चिंतक कहता है, आधुनिक शिक्षा में उन प्रतीकात्मकताओं और उपमाओं के आभाव के कारण शिक्षा सुखकारी नहीं बन सकी, इसलिए सम्पूर्ण विश्व में अधिक दुःख व्याप्त है।

विद्या भोगकरी, यशकरी, सुखकरी

भर्तृहरि नीतिशतक में विद्या को भोगकरी, यशकरी, सुखकरी बताते हैं। भारतीय परम्परा में भोग, सुख तथा यश में अन्तर्सम्बन्ध है। कर्ता को ज्ञान तो बहुत है यदि वह कल्याणकारी नहीं है, तो व्यर्थ है। छान्दोग्य उपनिषद् भी इसी बात की ओर इंगित करता है कि यदि विद्या और अविद्या के मर्म को नहीं जाना, तो सब व्यर्थ है। १८वीं शताब्दी तक भारतीय शिक्षा की समग्र पाठ्यचर्चा इसी विद्या और अविद्या जिसको उपनिषद्कार विद्या के रूप में मानता है से आच्छादित थी। इसलिए मनुष्य अपने विहित कर्मों का विधिपूर्वक पालन कर सकने में समर्थ था, किन्तु कालान्तर में यह चक्र परिवर्तित हुआ, इसलिए अनेकानेक प्रकार की समस्याएँ प्रकट होनी शुरू हुईं, क्योंकि विद्या के पीछे जो मूल हेतु समष्टिगत कल्याण निहित था, वह व्यक्तिगत स्वार्थ में परिवर्तित हो गया। महाभारतकार इस श्लोक के माध्यम से कुछ इस प्रकार की कामना व्यक्त करता है -

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं ना पुनर्भवम्।

कामये दुःख तप्तानाम् प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

यानि ऋषि कहता है कि न मुझे राज्य चाहिए, न मुझे स्वर्ग चाहिए, न ही मुझे मुक्ति की इच्छा है बल्कि इस सम्पूर्ण जगत् में नाना प्रकार के दुःखों से यह प्राणी जगत् तप्त है, मैं उनके दुःखों की निवृत्ति चाहता हूँ। लौंगाक्षी स्मृति भी ऐसा ही कहती है -

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भ्रदाणि पश्यन्तु, मा कश्चितद् दुःख भाग्भवेत्।।

यानि सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, इस संसार में कोई भी मुझे दुखी न दिखे। यहाँ पर ऋषि प्राणियों की बात करते हैं। प्राणियों से अभिप्राय जो भी इस जगत में प्राणवन्त है उन सबके सुख की कामना। ईश उपनिषद् सृष्टि के कण-कण में ईश्वर की व्याप्ति देखता है। इसलिए सम्पूर्ण सृष्टि ही प्राणवन्त है और यही कारण है कि विद्या में समष्टिगत चिन्तन किया गया है जबकि शिक्षा में व्यक्तिगत।

पाश्चात्य चिंतन मात्र व्यक्ति में भी कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की ही चिन्ता करता है जैसे अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख। जबकि भारतीय विद्या व्यवस्था प्राण के आधर पर सबको एक साथ लाती है। आधुनिक शिक्षा व्यक्ति और व्यक्तियों में भेद के आधार पर उनमें दूरी का निर्माण करती है। यही दूरी शोषण, दुःख, विषाद और स्वार्थ की जन्मदात्री है जबकि भारतीय परम्परा समग्रता में सोचने की क्षमता की पक्षधर रहने के कारण सर्वकल्याण की बात करती है। आधुनिक शिक्षा इससे अछूती है।

भारत के बनें और भारत को बनाएँ

विचार प्रवाह

तपन कुमार,
एल. एल. बी., होटल मैनेजमेंट,
एम.बी.ए. उपाधिधारी,
समाज कार्य का विशेष अनुभव
विद्या भारती, मेरठ प्रांत
संगठन मंत्री

हमारे सामने एक प्रश्न उपस्थित है, प्रश्न से एक नए प्रश्न का निर्माण होना स्वाभाविक है। इस विषय को समझते हुए कुछ प्रश्न उठते हैं कि-यदि भारत का बनना है तो हम भारत के कैसे बने?, हमें भारत का बनना है तो वह कौन सिखाएगा कि हम भारत के कैसे बने? कहाँ से हम सीखें कि भारत के कैसे बनें? और जब भारत को बनाना है तो कैसे बनाना है? वह कौन बताएगा?

क्या भारत पहले से नहीं है जो उसको बनाने की आवश्यकता है? हमें जिस भारत का बनना है यदि वह पहले से ही है तो फिर हमें कौन सा भारत बनाना है? उसे कैसे बनाया जाए? क्या गारे-मिट्टी से कोई भवन निर्माण करना है या किसी विशेष प्रकार की कालोनी बनानी है?

कुछ प्रश्नों का सीधा उत्तर भी कठिन है? और कुछ टेढ़े प्रश्नों का उत्तर खोजने में भी आनन्द आता है। इसके पीछे मनुष्य का स्वाभाविक मनोविज्ञान है। प्रश्न एक अभिरुचि है और उत्तर दृष्टिकोण। दृष्टिकोण से आशय है कि हम प्रश्न का उत्तर किस सन्दर्भ में खोज रहे हैं। यदि उत्तर जिज्ञासावश खोज रहे हैं तो वह उत्तर कल्याणकारी होगा।

अपने प्रश्न की खोज में चलने से पहले रामधरी सिंह दिनकर जी के उस भाव को याद करते हैं जहाँ 'आधुनिकता और भारतधर्म' के विषय में कहते हैं कि 'प्रत्येक समय में समाज के सामने हमेशा से यह चुनौती रही है कि वह किस समाज को आदर्श माने? वह किस समाज को आधुनिक मानकर आगे बढ़े? क्या उसके सामने किसी आदर्श समाज का कोई मापदंड है या वह सिर्फ दिवा-स्वप्न है। इसका उत्तर उन्हें 'भारतीय समाज' में मिलता है।

यह हम सभी स्मरण रखें जब परिवर्तन के लिए समय कुलांचे भरता है तो भारत-भूमि के ऋषि 'भारतीय युवाओं' का आह्वान करते हैं। ये दो शब्द स्मरण रहे-'भारतीय समाज, भारतीय युवा'। मैंने स्मरण रखने का आग्रह इसलिए किया है कि हम अपने विषय का समग्र चिंतन की धरा में प्रवाहमान होकर अनुसंधान करेंगे।

सामान्यतः किसी भी विषय को समझने के दो माध्यम हैं -

विषयानुगत अर्थात् सैद्धान्तिक, बाह्य, वस्तुपरक या थ्योरीटिकल। दूसरा व्यावहारिक अर्थात् प्रायोगिक, आंतरिक, आत्मनिष्ठ या प्रैक्टिकल।

अध्ययन या अनुभव प्राप्ति के दो मार्ग सर्वथा प्रचलित हैं थ्योरी (सैद्धान्तिक) और प्रैक्टिकल (प्रायोगिक)। अपना विषय समझने में जितना सरल है, इसका पालन करना उससे भी अधिक सरल है। पानी का ठहर जाना सरल है उसका बह जाना? पानी रोकने के लिए प्रयास करना पड़ता है किन्तु बह जाना उसकी प्रवृत्ति है। उसी प्रकार भारत को विषयानुगत अर्थात् थ्योरी

को समझने का प्रयास करना पड़ेगा किन्तु इस भारत के व्यावहारिक अथात् प्रैक्टिकल रूप में जाए तो मेरा अनुभव कहता है कि हमें कोई प्रयास नहीं करना है।

जब हम भारत को विषय मानकर समझेंगे तब भारत को शास्त्रार्थ करते हुए तर्क के आधार पर जानेंगे और जब भारत को जीवंत मानकर व्यवहार के माध्यम से समझेंगे तो अनुभूति के आधार पर जानेंगे। तर्क में हम अलग-अलग घटनाओं को आधार मानकर भारत की व्याख्या करने का प्रयास करेंगे और अनुभूति में भारत अपने जीवन में आत्मसात करेंगे।

समग्र चिंतन की इस धारा में इसके दोनों पहलुओं 'वर्तमान और इतिहास' पर विचार करेगें। जो समय बीत गया, वह इतिहास हो गया। वर्तमान की यात्रा तक हम इतिहास को भी देखेंगे कि किस मार्ग से होते हुए हम यहाँ पहुँचे? वर्तमान की बात करते हुए ''आधुनिकता तथा जीवन की आवश्यकताओं' की बात करेगें और इतिहास की बात करते हुए मूल्यों और संस्कारों की बात करेगें।

इतिहास में जहाँ नैतिकता, सौन्दर्यबोध, आध्यात्म, ज्ञान और संस्कार का बाहुल्य है वही वर्तमान में राजनीति, रोजगार, सत्ता-शासन, सुविधा, आधुनिकता और परिभाषाहीन विद्रोह की चर्चा का ही आवरण है। इतिहास में जहाँ भारत जीवन की सम्रगता की ओर चलता है वही वर्तमान भारत आधुनिकता के नाम पर विद्रोही परिवर्तन की ओर चलता है। जीवन की गति बढ़ चुकी है। हमें स्वयं की अनुकूलता तत्काल चाहिए। वर्तमान भारत अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, सामाजशास्त्र, विज्ञान, तकनीक, रोजगार, सैन्य व्यवस्था, अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध और व्यापार की बात करता है। आर्टिकल ३७० की चर्चा करता है, वह परम्पराओं और रीति-रिवाजों में स्थापित मान्यताओं की सीमाओं को खिसकाना चाहता है।

समय और समाज अपनी गति से चल रहा है लेकिन लोगों का सामूहिक रूप से जीवन के लक्ष्यों के प्रति दृष्टिकोण समाज में आचरण का निर्माण करता है जो देश का तत्कालिक स्वरूप निर्धारित करता है। बहुधा इसी आचरण के कारण से संधिकाल का निर्माण होता है। जिस कारण समाज समाज का स्वरूप बदलता हुआ दिखाई देता है। अब यही चुनौती हमारे सामने आती है कि किस भारत के बनें? और कौन सा भारत बनाएँ? इतिहास में गए तो आधुनिकता की दौड़ में अछूते रह जाएँगें, पिछड़े कहलाएँगे, पोंगापंथी और न जाने कौन-कौन से आभूषण पहना दिए जाएँगे और वर्तमान के हिसाब से चलें तो औद्योगीकरण का पर्यावरण पर आघात, दूषित मानसिकता के कारण बढ़ते अपराध, उपभोक्तावाद का कुटिल-चक्र का रोग हमारे और आने वाली पीढ़ी के लिए अभिशाप बन रहे हैं? यदि इन सब विषयों पर हम व्यावहारिक या आत्मनिष्ठ रूप से चलें तो विज्ञान-विरोधी और अंधविश्वासी कहा जाएगा और यदि विषयानुगत या वस्तुपरक रूप से चले तो समुद्र की किनारे बैठ कर तैराकी सीखने जैसी कल्पना मात्रा होगी। हम इन्हीं उलझनों से बाहर निकलेंगे।

पहले हम भारत को एक विषय मानकर समझते हैं, बौद्धिक रूप से, विषयानुगत तरीके से जैसे अनाज का उत्पादन करने के लिए बीज, हवा, पानी, खाद, सूर्य के प्रकाश जैसे अन्य तत्त्वों के 'उपयुक्त संयोग' की आवश्यकता होती है उसी प्रकार भारत को विषयानुगत तरीके से समझने के लिए कुछ संयागे समझने होंगे। जब इन संयोगों को समझ लेंगे तब भारत के बन जाएँगे। लेकिन हमारे बनने के बाद हम भारत को कैसा बनाएँगे? इसके लिए हमें समझना होगा कि जब यातायात के नियमों का ज्ञान होने के बाद भी लोग गलत दिशा में चलते हैं या वाहन चलाते हैं तो वो जानते हैं कि इस वजह से जाम लगेगा, एक्सीडेंट हो सकता है? दुर्घटना हो जाएगी, चालान कट सकता है फिर भी ये सिलसिला रूकता नहीं है और कुछ इस वजह से दुःख पाते हैं। वैसे ही जब तक भारत के बन जाने के बाद भी हम भारत को अपने जीवन में नहीं उतारेंगे या उसके अनुरूप नहीं जीएँगे तो भारत को बना नहीं पायेंगे और भारत की उपयोगिता को समझे बिना उसे बचा नहीं पाएँगें। यदि हमने भारत की महत्ता अपने जीवन में समझ ली तो हमें किसी प्रकार का द्वंद नहीं रहेगा।

सभी सम्भव प्रश्न भारत के विषय में पूछे जा सकते हैं कि भारत क्या? कब? कैस? किसका? कौन? कब से? आखिर किसी भी विषय को समझने का प्राथमिक माध्यम है प्रश्न पूछना। जब प्रश्न है तो उसका उत्तर भी है या खोजा जाएगा और जहाँ उत्तर होगा वहाँ तर्क भी होगा। हमें तो तर्क को समझने और समझाने की क्षमता भी उत्पन्न करनी होगी क्योंकि तर्क को समझने के बाद भी विरोधी के मनोस्थिति को बदलना कठिन ही होता है।

इस तार्किक वार्तालाप को विषयानुगत तरीके से आगे बढ़ाते हैं जो भारत शब्द है इसके अलग-अलग अर्थ हमें पता है, जो प्रकाश की ओर रत है वह भारत है या

शकुन्तला और दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम पर भारत पड़ा। क्यों पड़ा? क्योंकि उसने बचपन में ही शेर के मुँह को खोलकर दाँत गिन लिए थे। इसलिए पड़ा। हम सबने यह कहानी सुनी है। भौगोलिक स्वरूप की बात करें तो विष्णु पुराण कहता है ''उत्तरंयत् समुद्रस्य, हिमाद्रेवश्चैव दक्षिणं। वर्ष तद् भारतं नाम, भारती यत् संततिः।''

अर्थात् जो समुद्र के उत्तर में बर्फीले पर्वत हिमालय के दक्षिण में स्थित है उसका नाम भारत है और यहाँ के रहने वाले लोग उसकी संताने हैं। अरबों ने सिंधु नदी के नाम पर हिन्दू भूमि या हिन्दुस्तान कहा किन्तु बृहस्पति आगम कहता है ''हिमालयं समारभ्य यावदिन्दु सरोवरम्। तत्देव निर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते''। अर्थात् हिमालय से लेकर (इन्दु) हिन्द महासागर तक देव पुरूषों द्वारा निर्मित इस भूगोल को हिन्दुस्थान कहते हैं। सिंधु को अँग्रेजी में इंडस कहते हैं। जिसके कारण भारत को अँग्रेजों ने इण्डिया कहा। यह भी कहा जाता है कि यह आर्यों अर्थात् श्रेष्ठ लोगों की भूमि है इसलिए इसे आर्यावर्त कहा गया। इस सभी में भारत नाम अधिक प्रचलित हुआ लेकिन जिस देश या भूभाग पर राजा भरत के माता-पिता शकुन्तला और दुष्यंत रहा करते होंगे उस देश का नाम क्या था? नाम को लेकर एक तर्क आता है।

अगर हम इस प्रश्न में ज्यादा पीछे नहीं जाते हैं तो भी २३०० वर्ष पूर्व मौर्य, चोल, पांड्य/चालुक्य का साम्राज्य कहाँ हुआ करते थे? क्या वो सिर्फ साम्राज्य थे? क्या उस समय भारत नहीं था? शक, हूण जैसे बर्बर लोगों ने जिस भूमि पर आकर यहीं समा गए, किसके हुए? कहाँ विलीन हो गए?

आधुनिक इतिहास में हम पढ़ते हैं कि सन् १९४७ से पहले सौराष्ट्र, चित्तौड़, जयपुर, मालवा जैसी ५०० से अधिक अलग-अलग रियासतों हुआ करतीं थीं। जिनका १९४७ में भारतीय गणराज्य के रूप में एकीकरण हुआ जैसा कि कुछ तथाकथित पश्चिमी प्रभाव वाले इतिहासकार कहते हैं कि भारत का जन्म ही १९४७ में हुआ। जिस मानचित्र को हम देखते हैं क्या वही हमारा भारत है? किसी बच्चे से पूछें कि भारत क्या है तो सामान्यतः उत्तर देगा कि भारत एक देश का नाम है और एक कागज पर नक्शा बनाकर दिखा देगा कि देखो यह रहा भारत। लेकिन जो आज भारत की कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से परशुराम कुंड तक जो सीमाएँ हैं । आज से २३०० वर्ष पूर्व वह अफगानिस्तान से श्रीलंका और पश्चिम में फारस की खाड़ी से लेकर कम्बोडिया तक थी तो फिर वह क्या था? यदि वह भारत था तो आज का यह भारत का भौगोलिक स्वरूप कैसे कम हो गया? हम मृत्युंजय भारत कहते हैं क्या हम उस भौगोलिक स्वरूप को मृत्युंजय भारत कहते हैं जिसका स्वरूप यदाकदा बदलता रहा? जिसे विश्वगुरु भारत कहा गया वह क्यों कहा गया? और आखिर ये विश्वगुरु का स्थान किसने दिया और किसने वह स्थान ले लिया? या स्वयं हमने ही इसे खो दिया? आखिर किस भारत की सीमाएँ सिकुड़ गयी और किस भारत का विभाजन हुआ? और कौन सा भारत खो गया? जिसका हमें बनना है और जिसे हम बनाने की कोशिश में हैं। क्या ये सब एक निश्चित भौगोलिक स्वरूप को प्राप्त करने का प्रयास है?

यहाँ एक प्रश्न पर आपका ध्यान ले जाना चाहूँगा वह कि वो क्या कारण थे जिन वजहों से हम आज यह कहते हैं कि तब के भारत का विस्तार कितना बृहद् था आज के भारत की सीमाएँ सिकुड़ गईं। आखिर हम ऐसा क्यों कहते हैं कि बाहरी आक्रमणों ने भारत के सीमाओं को संकुचित कर दिया, भारत का विभाजन हो गया? क्या ये सच हैं?

क्या निश्चित भौगोलिक सीमाओं में बंधा हुआ भूभाग भारत है जिसे हमे फिर से प्राप्त करना है और इसी भूभाग का बनना है?

भारत को तर्क रूप में जानने-समझने के लिए ये सभी प्रश्न हमारे सामने आते हैं और आते रहेगें इसका उत्तर हमें खोजना है। यह खोज आवश्यक है।

जिस भारत-भूमि पर अवतरित यजुर्वेद ने कहा कि **श्यनो भूत्वापरां पत यज्ञमानस्य गहवान, गच्छ तन्नौ संस्कृतम्।** अर्थात् देशान्तर में जाकर ऐश्वर्य युक्त बनो और दूसरों को ऐश्वर्य युक्त बनाओ, जिस भारत में सम्पूर्ण पृथ्वी को कुटुम्ब वसुधैव कुटुम्बकम् की संकल्पना दी। जिसने पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाने कृण्वंतो विश्वमार्यम् का सिद्धांत दिया जो भूमि **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः का उद्घोष करती है।** उस भारत भूमि को किसी भौगोलिक सीमा में बांधना कितना उचित होगा यह निर्णय वर्तमान पीढ़ी पर को करना है। किन्हीं कारणों से जितने भी प्रश्न हमारे सामने आएं और जितने भी भावों, मूल्यों और संस्कारों को हमने अपने बड़ों से या परिवारों में सीखा है वह सब किसी सीमाओं में बंधे हुए भारत के नहीं हो सकते यदि हम भारत को सीमाओं में बांध देंगे तो तर्क से भी हम भारत को न जान पायेंगे, न समझ पायेंगे।

जितने भी प्रश्न हमारे मन मतिष्क में आते हैं उनका उत्तर इस भौगोलिक स्वरूप के तर्क-वितर्क से खोजना असंभव सा प्रतीत होता है। यदि तर्क या प्रश्न के आधार पर समझना हो तो कुछ घटनाओं को देखना होगा कि जब एक आचार्य केरल से चलकर काशी होते हुए बद्रीनाथ पहुँच कर शंकराचार्य पीठ की स्थापना करते हैं और उसे हर कोई स्वीकार करता है। जब एक चाणक्य एक सेवक के बालक को चन्द्रगुप्त के रूप में चक्रवर्ती सम्राट घोषित करता है। जब एक मर्यादा पुरुषोत्तम रूपी मनुष्य राम शबरी की कुटिया तक पहुँचते हैं। जब माँ जानकी बिना वीसा लिए अयोध्या आकर हम सबकी जननी कहलाती हैं। जब एक सुदामा कड़वे चने की वजह से बाल-स्वरूप योगेश्वर कृष्ण से झूठ बोलता है, जब भील सरदार एक मेवाड़ी महाराणा की रोटी के लिए अपनी बेटी का बलिदान देता है। जब जीजाबाई माँ इस सम्पूर्ण धरा के अपमान का बदला लेने के लिए भवानी माँ से अपने पुत्र रत्न का वरदान माँगती है। जो वीरांगना हाड़ा रानी इस भूमि की रक्षा के लिए युद्ध भूमि में जाने से पहले अपने पति के आसक्ति को अपने प्रति देखकर अपना शीश काटकर देती हैं। जिस तंजावुर आज भी काशी विश्वनाथ का श्रृंगार पिछले हजारों वर्षों से भेजता रहा है। कुम्भ जो इस धरती के करोड़ों की जनसंख्या को बिना किसी प्रश्न के समाहित कर लेता है। क्या उस भारत के तर्क के आधर पर भूमि पर सीमांकन करके जाना या समझा जा सकता है? कैसे राजा शिवि एक बाज से कबूतर को बचाने के लिए अपने शरीर का माँस काटकर तौलते हैं, कैसे गुरुगोविन्द सिंह उस सवा लाख अतताइयों से अपने उभरते हुए सुकोम ल सुकुमारों को लड़ने के लिए भेज देते हैं।

अभी तक यह समझ ही चुके होंगे कि ये जमीन के टुकड़े का विषय नहीं है। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है कि हमें भारत को ''समग्र'' रूप से समझना है।

तो अब हम परिभाषा पर आते हैं, हम भारत को राष्ट्र कहते हैं, हम भारत को जीवंत कहते हैं अर्थात् भारत एक नाम नहीं है जो राष्ट्र है। मूर्धन्य लेखक बाबू श्याम सुन्दर दास कहते हैं कि किसी राष्ट्र के निर्माण के मुख्यतः तीन घटक होते हैं - भूमि, लोग व संस्कृति । इन तीनों को व्यवस्थित समुच्चय से राष्ट्र का निर्माण होता है। फिर आप राष्ट्र को जो नाम दे दीजिए। इन तीनों में दो भौतिक हैं, दिखाई देते हैं। एक सूक्ष्म है दिखाई नहीं देता, अनुभव होता है। इसलिए मैंने कहा कि किसी भी विषय को समझने के दो माध्यम हैं अभी हम उन सभी प्रश्नों का विचार करें जो मैंने आपके सामने रखें हैं। उनका उत्तर ना भूमि में है ना लोगों में है। उनका उत्तर है संस्कृति में। ध्यान रहे रीति-रिवाज, बोलचाल, पहनावा, रूप-रंग, भाषा-बोली, पूजा-पद्धति इत्यादि से सब देशकाल और परिस्थिति के अनुसार सभ्यता का निर्माण करती है जो समय-समय पर बदलती रहती है। किन्तु संस्कृति अधिक सूक्ष्म है। संस्कृति इतनी सूक्ष्म है कि जैसे कि ईंधन में अग्नि। ईंधन बनने कितना वक्त लगता है, हजारों लाखों साल। वैसे ही हजारों लाखों साल की सभ्यताओं के सर्वश्रेष्ठ आचरण से संस्कृति का निर्माण होता है। अब यदि भारत के सांस्कृतिक रूप को समझना है तो कठोपनिषद् के एक सूक्त को ध्यान में रखकर राम के आचरण को समझना होगा। राम का आचरण समझने के लिए हमें स्वयं राम बनना होगा कठोपनिषद् कहता है कि **यानि अस्माकं सुचरितानि तानि त्वोपास्याति नो इतराणि।**

जिसमें जहाँ से जो अच्छा है स्वीकार कर लो, सुरक्षित कर लो, अहंकार मत करो। देखिए एक ही सूक्त से सारा द्वंद समाप्त हो गया। जितना तर्क लगाकर समझना है समझिए। उपनिषद् कहता है **ब्रह्माम्वैत ब्रह्म भवति** जिसने ब्रह्म को जान लिया वह ब्रह्म हो गया। फिर वह हमें बताने वापिस नहीं आएगा कि ब्रह्म का स्वरूप कैसा होता है। राम को जानना है तो राम के आचरण को पालन करने से राम बन जाएँगें। राम को पहचान जाएँगे पर राम को हम क्यो जानते हैं? राम को हम उनके गुणों के कारण ही जानते हैं। अर्थात् हमें उनके गुणों के समान गुण प्राप्त करने के लिए साधना करनी पड़ेगी। इसलिए तर्क सापेक्ष रूप में भारत को जानने के लिए भारत का बनना पड़ेगा और भारत का बनने के लिए स्वयं भारत हो जाना पड़ेगा और उन गुणों को स्वयं में धारण करना पड़ेगा। गुणों को धारण करने हेतु हमें उस आधार का निर्माण करना पड़ेगा जहाँ हम उस भव्यता को निर्माण करेंगे। उपनिषद् कहता है -

यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्व विभद्जती मा सर्वभावेन भारत। अर्थात् सर्व-भाव, सम-भाव में जीने वाला भारत।

इति गुह्यतमं शास्त्रामिदमुक्तं मयानघ। एतदबुद्धावा बुद्धिमानस्यात्कृतकृत्यचश्व भारत ।। अर्थात् बुद्धिमान, विवेकवानों का सम्मान करने वाला भारत ।

जब हम गुणों की साधना कर लेंगे, हम भारत के बन जायेंगे हम स्वयं ही भारत हो जायेंगे। यह हमारा भारत को जानकर भारत बनने और भारत को बनाने का सापेक्ष माध्यम होगा। यह हमने भारत के वस्तुपरक ढंग से तर्क के आधार पर इतिहास के दर्पण को समझने का प्रयास किया है। इसी सापेक्ष माध्यम में पर्यावरण, जल-जंगल, जमीन और उन प्रकृति उपहारों के साथ समन्वय बैठाकर आगे बढ़ना ही सर्वगुण सम्पन्न भाव से आगे बढ़ना है। ये पर्यावरण भारत भूमि का शृंगार है नदियाँ इसकी जीवनदायिनी है। जब हम भारत को तर्क के आधर पर समझते हैं तो हमारे आसपास पर्यावरण हमे उन महापुरुषों के आचरण का अनुसरण करने में सहायक सिद्ध होता है।

जब हम भारत को वस्तुपरक ढंग से तर्क के आधर पर वर्तमान में समझने का प्रयास करते हैं तो हम कुछ घटनाएँ पाते हैं कि कैसे राह गुजरते हुआ एक राहगीर आधी रात के अँधेरे में दरवाजा खटखटा कर पीने का पानी माँगता है तो गृहस्वामी अपनी गृहस्वामिनी से कहता है कि कुछ खाने को हो तो जल्दी बना दो। कही रात में खाली पेट पानी पीने से पेट न दुखने लगे। यह संस्मरण पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी लिखते हैं। ये जो भाव है इसे किसी तराजू पर तौला या मीटर से नापा नहीं जा सकता। पश्चिम यह समझ नहीं आयेगा कि इस काम के उसे कितने पैसे मिले। या बिना पैसे लिए ही उसने यह कार्य कैसे कर दिया। सडक़ पर २-२ रुपये में केले बेचने वाली महिला १० रु में ६ केले देने से मना करती है लेकिन वह एक भूखे बच्चे को देखकर २ केले उसे खाने को देती है और जब उसका एक ग्राहक पूछता है कि वह तुम्हारा रिश्तेदार था क्या? जो निःशुल्क में दे दिए तो महिला कहती है कि ''भूखा था इसलिए दे दिया, इसमें ज्यादा क्या सोचना। आईआईएम के प्रोफेसर को यह घटना समझ में नहीं आती, उसे समझ यह आती है कि अगर ऐसा होता रहा तो अर्थव्यवस्था कैसे चलेगी? अब आप इसकी क्या परिभाषा देंगे? यह परिभाषा बस भाव में समझी जा सकती है। लेकिन जब मार्गरेट नोबुल थैचर भगिनी निवेदिता बनकर भारत आती हैं तो भाव सिर्फ भारत का नहीं रहता ये भाव हर जगह हर कण-कण में विद्यमान हो जाता है और इसीलिए ये भारत की सीमाओं में न बस कर लोगों के हृदयों में बसता है। हम इतिहास की बात करें या वर्तमान की बात करें, तर्क के आधार पर हमें भारत एक सा दिखाई देता है। जब हम कुछ कटु-घटनाओं का उदाहरण देखते हैं तो उन घटनाओं के प्रतिकार में भी भारत के मौलिक सिद्धांत ही दिखाई देते हैं।

इसके उपरांत जब हम भारत की व्यावहारिक या आत्मनिष्ठ स्वरूप में समझते हैं तो हमें हमारे सभी प्रश्नों के उत्तर मिलते चले जाते हैं। प्राचीन इतिहास के वर्णन में जब फाह्यान भारत आया तो वो लिखता है कि भारत में घरों ताले नहीं होते, भारत में लोग शिक्षित हैं, चोरी नहीं करते। वो ज्ञान की खोज के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। इस प्रकार का लिखने वाला वह अकेला नहीं है, मैगस्थनीज से लेकर मैकाले तक ने न जाने कितने लोगों ने यह बात कही और लिखी। निश्चित ही यही वो बात रही होंगी जिसने भारत को विश्वगुरु का स्थान दिलाया था। अगर हम भारत के इतिहास में जाएँ तो हम यह सब के लिए एक प्रेरणा स्वरूप है।

पन्नाधाय भारत भूमि के लिए अपने पुत्र को किस प्रकार बलिदान कर देती है? कैसे एक प्रकांड आचार्य एक डोम को अपना गुरु स्वीकार करते हैं? कैसे आज जापान, अमेरिका और रसिया जैस देशों में भारत बसता है? कैसे गैर भारतवासी भी काशी व हरिद्वार के तटों पर जाकर डेरा बसाते हैं। अभी तक हमनें भारत को दूसरे के दृष्टिकोण से देखा है। हमने भारत की संकल्पना को पश्चिम की 'नेशन थ्योरी' से तुलना किया है। राष्ट्र की संकल्पना में भूमि, लोग और संस्कृति का संयोग ही राष्ट्र का निर्माण करता है। जब भारत आने वाले विदेशी यात्री से पूछते हैं तो वह कहते हैं अपनापन और स्वतंत्रता उन्हें यहाँ आकर अनुभूत होती है। वह कहीं और नहीं मिलती। यह सस्ता टूरिज्म नहीं है। यह हम सबके लिए एक मनुष्य के स्वभाव का अन्वेषण है कि कैसे शक, हूण, कुषाण इस भारत में विलीन हो गए। कैसे एक सिद्धार्थ राजसी जीवन को छोड़कर बुद्ध बन जाता है। भारत में आज वर्तमान में भी विश्व के लिए जो आश्चर्य किसी दिल्ली या मेट्रो, साइबर सिटी मे ना होकर, काशी की गलियों मे मिलने वाला प्रसाद, हरिद्वार की गंगा आरती, यहाँ का ज्ञान, संतोष, व्यवहार और अलग-अलग समाज में सैकड़ों उदाहरण देखता है। वह देखता है कि कैसे प्रयागराज कुम्भ में एक दिन के लिए विश्व का ६वाँ सबसे बड़ा देश बन जाता है। कैसे लोग एक दूसरे से मिलकर सुख -दुःख में साथ चलते हैं। कैसे लोग लेने से अधिक देने के भाव में विश्वास करते हैं। यह हमारा विश्व बन्धुत्व का ही भाव है जो सर्वसमावेश की बात करता है। यह वही भारत है जहाँ संघ के द्वितीय

सरसंघचालक सिर्फ एक कार्यकर्ता के प्रेम में वशीभूत होकर चाय पीना प्रारम्भ कर देते हैं। जहाँ मीरा के लिए विष का प्याला विष रहित हो जाता है। यह भारत को वर्तमान और इतिहास के दर्पण में व्यावहारिक रूप से अनुभूति है जहाँ हम स्वयं भारत बनकर जीते हैं।

भारत के जीवंत और गतिमान होने का अर्थ है कि भारत मे प्रत्येक क्षण नव सर्जना होना, नयी जिज्ञासाओं का जन्म होना। भारत क्यों विश्व गुरु हुआ? क्यों यहाँ की प्रकृति शश्यश्यामला हुई? कैसे बंकिमचन्द्र ने बंगाल को देखकर एक गीत में सम्पूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व कर दिया क्यों यहाँ संगीत की साधना की जाती है? क्यों यहाँ ज्ञान-विज्ञान की खोज निरंतर जारी है? क्यों हमने बर्बरता नहीं सिखी? क्यों अयोध्या के राम आज भी बंगाल के जन-जन में बसते है? क्यों भारत में महाभारत का उदय होता है?, कैसे झारखंड के जंगलों में धनुष-तीर को अपने आराध्य का प्रतीक मानकर पूजा करते हैं? कैसे देशभर के जन-समुदाय ने एक से भारत माता की जय बोलकर १३०० वर्षों की आक्रमणकारियों के करतूतों से मुक्ति पाई? कैसे द्वादश ज्योतिर्लिंग ने हममें एक सह-अस्तित्व का भाव जगया? इन सब विषयों के लिए हमें अपने मूल चिंतन में लौटना होगा। इसलिए पश्चिम की राष्ट्र की अवधारणा से भारत की राष्ट्र की अवधारणा अलग है। कैसे पश्चिम का फिलॉसफर भारत के दार्शनिक और चिंतक से भिन्न है? कैसे भारत का धर्म पश्चिम के रिलिजन से अलग है? इसीलिए जब हम भारत को मृत्युंजय भारत कहते हैं तो तब हमें यह बात समझ में आती है कि जब हम भारत को एक सांस्कृतिक इकाई बोलते हैं तब अभारतीय इस बात को नहीं समझ सकते। वह यह नहीं समझ सकते कि क्यों श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अपनी कविता में कहा -

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक ।

मातृभूमि पर शीश कटायें,
जिस पथ जायें वीर अनेक ।।"

वह स्वयं को एक फूल के रूप में मानने हुए कहते हैं कि राष्ट्र के वीरों के पथ पर मुझे न्योछावर कर देना। क्यों मैथलीशरण गुप्त लिखते हैं कि -

जिसको न निज गौरव तथा,
निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं है नर पशु निरा
और मृतक समान है।।

एक कवि ने कहा है -

जो भरा नहीं भावों से,
बहता जिसमें रस धर नहीं।

वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वेदश का प्यार नहीं।।

क्या यह भाव हम किसी पैमाने पर नाप सकते हैं क्या? इनका वजन तौला जा सकता है क्या? नहीं, बस इन भावों को जिया जा सकता है, अनुभूत किया जा सकता है।

भारत की कैसी सुन्दर परिभाषा है -

भारत माता का यह मंदिर है,
समता व संवाद जहाँ ।

सबका शिव कल्याण यहाँ,
पावे सभी प्रसाद यहाँ।।

जाति-धर्म या सम्प्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ।

सबका स्वागत सबका आदर,
सबका मान-सम्मान यहाँ।

यह धर्म हम ही समझ सकते हैं। जहाँ योगेश्वर कृष्ण युद्ध की विभीषिका में भी गीता का उपदेश सुनाते हैं। यह धैर्य का ज्ञान भी हमारे ही पास है। हम जानते हैं कि सठे साठ्यं समाचरेत् और शान्तं पापम् अद्वैतम् का सूक्ष्म विश्लेषण कर कैसे मध्यम मार्ग निकाला जाए। हम अर्पण-समर्पण, आख्या-व्याख्या का भेद जानते हैं तो निश्चित ही हम अपने निर्णयों में विवेक का महत्त्व भी जानते हैं।

जिस पतंजलि योगसूत्र ने सुक्ष्म स्तर पर अन्तर्मन की यात्रा करने का माध्यम प्रदान किया उसी माध्यम से हम भारत को अनुभव के स्तर पर समझ सकते हैं। क्योंकि यह ज्ञान प्राकृतिक रूप से सतत रूप से हमारी चेतना में विद्यमान है क्योंकि भारत का अनुभव के स्तर पर व्याख्या करना जितना कठिन है, अनुभव के स्तर पर उसे आत्मसात् कर लेना उतना ही सरल है।

अभी तक हमने भारत को जानने के विषयानुगत और व्यवहारिक माध्यम को इतिहास और साहित्य के दर्पण से मूल्यों और संस्कारों के पक्ष में जाना। अब भारत के इसी विषयानुगत और व्यवहारिक माध्यम को आधुनिकता तथा जीवन की आवश्यकताओं के पक्ष में जानने का प्रयास करेंगे। क्योंकि आज हम न्यू इण्डिया की बात करते हैं और इस न्यू इण्डिया में द्वंद का ही बोलबाला है। जो बातें मैंने भारत के ऐतिहासिक पक्ष के बारे में कही वह सब आज के समय में मध्यकालीन, पोंगापंथी या घिसे-पिटे विचार ही कहे जा सकते हैं। यदि

इस समय को विचारों का संक्रमण काल कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। हर चीज या विचार की उपयोगिता के आधार पर समीक्षा ''आधुनिक या बेकार अर्थात् आउटडेटिड'' कही जाती है। समाज में प्राथमिकताएँ बदल चुकी है, युवाओं के जीवन का दृष्टिकोण बदल चुका है। मनुष्य का जीवन नैतिकता, सौन्दर्यबोध और अध्यात्म से बदल कर राजनीति, रोजगार, सत्ता-शासन, जीडीपी, इडेक्स, आंतरिक और बाह्यसुरक्षा, अन्तरिक्ष अनुसंधान की ओर जा चुका है। युवा पीढ़ी क्रान्तिकारी ढंग से बदलाव चाहती है। वैश्विक षड्यंत्र हमारी स्वाभाविक गति को अवरूद्ध करते हैं। धर्मिक आतंकवाद और कट्टरता चुनौती के रूप में हमारे सामने है। पर्यावरण के कारण बदलता जलवायु परिवर्तन का चक्र प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है। उपभोक्तावाद की अंधी दौड़ में हम सब शामिल हो चुके हैं। आज युवा सैन्य व्यवस्था, लैण्ड रिफार्म, अर्थनीति, मौलिक अधिकारों, अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों, अन्तरराष्ट्रीय व्यापार जैसे मुद्दे पर बात करना चाहता है। आधुनिकता की दौड़ मे बने रहने के लिए हमें वैश्विक दौड़ में भी बने रहना है और अपने भारत को भी बनाना है। मध्यम मार्ग निकालना होगा। डरना नहीं है, संसार का कोई भी युग युद्ध, जय-पराजय या क्रान्ति के कारण आरम्भ नहीं होता वह नए लोगों के नए विचारों के प्रति समर्पण से होता है। जैसे पंडित मदनमोहन मालवीय जी डॉक्टर आंबेडकर जी के साथ खड़े हुए। जो लक्षण हमारे सामने है वो वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राथमिकता और प्राबल्य है क्योंकि उसने सुविधाभोगी जीवन दिया है, टेक्नॉलाजी और उद्योग इसी दृष्टि के परिणाम हैं। वर्तमान में हम सूचना क्रान्ति देखते हैं। हर व्यक्ति के पास हाथ में सूचनाओं का भंडार है और यह सूचना क्रान्ति का ही परिणाम है कि हम 'नेरेटिव' सेट करने के युग में प्रवेश कर चुके हैं। इस युग में जो धड़ा स्थापनाओं के विरूद्ध है वह चिंतन में निर्मम व निष्ठुर है। जो बात बुद्धि की पकड़ में नहीं आती वह उसे नहीं मानता। जो बुद्धि से सही दिखाई देती है वह उनकी खुली घोषणा करेगा चाहे वह धर्म के विरूद्ध ही क्यों न हो, चाहे वह नैतिकता के विरूद्ध जाती हो या उनमें समाज के प्रेम का तानाबाना खंडित होता हो। लेकिन यह बात सत्य नहीं है कि आधुनिकता या न्यू इण्डिया नैतिक नियमों की अवहेलना करने को विवश करता है। माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार भी न्यू इण्डिया नहीं है। मंदिरों में शराब या मांसाहार भी न्यू इण्डिया नहीं है।

यदि इन सब विषयों से ऊपर उठ कर हमें भारत का बनना है तो स्वयं में नेतृत्व क्षमता विकसित करनी होगी। यदि वो नेतृत्व राम और हनुमान का नेतृत्व है तो निश्चित ही हम भारत को भारत बनाएँगें। हमें पर्यावरण के प्रति जागरूक होना है। हम भारत के बनेंगे और भारत को बनायेगें। हमें अपने व्यवसाय में स्वयं भामाशाह बनकर खड़ा होना होगा तभी हम आधुनिक महाराणाओं को सहयोग कर पायेंगे। हमें शिक्षित होना होगा ताकि इस उपभोक्तावाद की दौड़ में भी हम स्वयं को सुरक्षित रख सकें। हमे जानना है कि वैचारिकता और निष्ठाओं में राष्ट्र को लेकर घटती चिंता और क्षुद्र राजनीति और निजी स्वार्थो के धुएँ के धुंध से कुंठित हो रही सोच को स्वतंत्र करना होगा तब हमारा भारत बनेगा। आज राष्ट्र की अवधारणा संकुचित करने हेतु एक वर्ग अपना ऊर्जा ज्यादा ही खर्च कर रहा है, उस राष्ट्र के प्रत्येक अयवय को पुनः जागृत करना होगा। जिसे यह लगता है कि राष्ट्र के अवधरणा खंडित किए बिना देश का विकास नहीं हो सकता ऐसे स्वयं की साधन से उदाहरण स्थापित करने होंगे। एक वर्ग यह समझाने में भी जुटा है कि राष्ट्र के बजाय एक खास विचारधारा के जरिए ही दुनिया में सुख-शान्ति लायी जा सकती है। लेकिन भारत की अपनी गति है वह देवतुल्य मानवों की देव भूमि है। बाह्य विचारों की पीड़ा यही है कि हम अपने अस्तित्व को इतिहास में खोज लेते हैं। क्योंकि जिसका जन्म पहले हुआ वहीं तो बड़ा होगा। तो पश्चिम के देश यह कैसे स्वीकार कर लें कि भारत बड़ा है। यदि हमें भारत का बनना है तो रक्षा, सुरक्षा, कृषि, व्यवसाय, खेल, निर्माण के क्षेत्र में हमें अपनी उपस्थिति दर्ज करानी होगी जहाँ खड़े होकर हम भारत का निर्माण कर सकें। स्वयं को प्रत्येक क्षेत्र में शक्तिशाली बनाना होगा ताकि न्याय का साथ दे सकें। हमारी अपनी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट होना चाहिए कि किस शिक्षा की हमें आवश्यकता है। अभी हमने रस्सी को सांप समझा है लेकिन सांप को रस्सी समझने की गलती ना करें। कर्तव्य और सदाचार मार्ग में आपका कोई बाधक नहीं है जो लोग किंकर्तव्यमूढ़ होकर बैठे हैं, उनके पास सिर्फ एक बहाना होगा कि हमारे पास साधन नहीं है या उद्यम की शक्ति नहीं है। ये साधन या उद्यम नहीं होना सिर्फ भाग्य के भरोसे बैठे रहने का परिणाम है ये भारत निरुद्यमी लोगों का भारत नही है भाग्य के विरुद्ध पुरुषार्थ की महिमा सदैव से रही है, कर्ण कहता है -

दैवायत्तम कुले जन्म मदयात्तम तु पौरुषम् ।

हमें एक पौरुष प्रधान समाज के

द्वारा भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना है। वर्ल्डकप जीतकर उसे स्वीकार करने से पहले शैम्पेन की बोतल खोलकर परिभाषा हीन अठखेलियाँ करना आधुनिकता या न्यू इण्डिया नहीं है। वह सरलता पूर्वक स्वीकार किया जा सकता है क्योंकि जो लोग उन्हें आदर्श मानते हैं वे उनके जैसा ही दिखाने का प्रयास करते हैं। इसीलिए हमने राम को भारत का आदर्श मानकर उन्हें जीवंत माना है। इस पूरे विषय को यदि संक्षेप में समझा जाए तो जब आप किसी प्रश्न का उत्तर खोजना प्रारम्भ करते हैं तब आप भारत के बन रहे होते हैं और आप उस ज्ञान-विज्ञान, आचार-विचार, व्यवहार, सदाचार को अगली पीढ़ी को उसकी पूर्ण शुद्धता में निष्ठा के साथ स्थानान्तरित कर रहे होते हैं तो तब आप भारत को बना रहे होते हैं।

इतना ही सरल है भारत। अब यह विचार हमें करना है कि जैसा हमें होना चाहिए वैसा हम हैं या किसी अन्य आवरण में जी रहे हैं। यदि ऐसा है तो हम इस आवरण से बाहर निकलें। हम भारत के बनें जहाँ ज्ञान-विज्ञान की व्याख्या न केवल सूत्रों से होती है बल्कि उसका प्रकृति के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव को हम स्वयं की चेतना से अनुभूत करते हैं। इसलिए भारत को बनाने के लिए कोई बाहर से नहीं आएगा हमें अपना दीपक स्वयं ही बनना होगा। ''आत्म दीपो भव''। हम स्वयं भारत के बनेंगे किन्तु इस सभी बातों को स्वीकार करते समय हमें ध्यान रखना होगा कि हम जिस भारत को बनाएँ वह सदा के भारत से, श्रेष्ठ हो सचमुच ही श्रेष्ठ हो उसमें केवल सुख-सुविधा, स्वतंत्रता और भोग की दृष्टि से ही श्रेष्ठ न हो बल्कि उसमें शान्ति और संतोष का भी प्राचुर्य हो।

यही नेतृत्व की साधना है जब एक वृक्ष से नया का जन्म होता है तो नए और पुराने वृक्ष में कोई भिन्नता नहीं होती। शत-प्रतिशत वही गुण लेकर प्रकृति के गुणों को सम्वर्धित करता हुआ इसी परम्परा को आगे बढ़ाता है जिससे सुन्दर वन का निर्माण होता है। यही हमारे वर्तमान भारत की प्रकृति होनी चाहिए।

मैं पुनः दोहरा देता हूँ कि जब आप किसी प्रश्न के उत्तर की खोज प्रारम्भ करते हैं तब आप भारत के बन रहे होते हैं। और जब आप उस ज्ञान-विज्ञान, आचार-विचार, व्यवहार, सदाचार के ज्ञान को अगली पीढ़ी को उसकी पूर्ण शुद्धतापूर्वक निष्ठा के साथ स्थानान्तरित कर रहे होते हैं तब आप भारत को बना रहे होते हैं। जैसे एक वैज्ञानिक को बड़ी खोज करने के लिए एक संसाधनों से परिपूर्ण एक प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है वैसे ही भौतिक और सापेक्ष प्रयोग हेतु हमें अखंड भारत भूमि की आवश्यकता है यही भारत के भौगोलिक स्वरूप का महत्त्व है। आंतरिक प्रयोग हेतु योग और अध्यात्म के ज्ञान से हम अपनी चतेना की संभावनाओं का अन्वेषण करते हैं। यही भारत के बनने और भारत को बनाने का मार्ग है। एक बात स्मरण रखना चाहिए 'यदि हम अपने विचारों से प्रभावित होते हैं तो हम वास्तव में भारत के युवा कहलाने के योग्य हैं। यदि आप में प्रश्न करने की जिज्ञासा है तो यही से प्रारम्भ होता है भारत। जिस स्थान पर भौतिक और आंतरिक अन्वेषण के प्रयोग चलते हो वह हमारा भारत है। एक उत्कृष्ट प्रश्न का नाम है-भारत। उसी प्रश्न के सुन्दर उत्तर की खोज का नाम है भारत। जितना सुन्दर प्रश्न होगा, उतना ही सुन्दर उसका उत्तर

होगा, उसी सुन्दर उत्तर की खोज का नाम है भारत। जो प्रतिभा-रत है, शोभा-रत है तथा जो प्रभा-रत है वही भारत है। हमें इसी भारत का बनना है और ऐसा ही भारत बनाना है, यह यात्रा चिरकाल तक चलती रहेगी। ॐ आनो भद्राः कृतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धसोऽपरीतासोद्भिदः। सरल भाषा में कहें तो...

भूलोक का गौरव,
प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ,
फैला मनोहर गिरि हिमालय
और गंगाजल कहाँ?

सम्पूर्ण देशों से अधिक
किस देश का उत्कर्ष है।

उसका कि जो ऋषि भूमि है,
वह केवल भारत वर्ष है।।

क्षमता का विकास कैसे करें ?

मंथन

अवनीश भटनागर
शैक्षिक चिंतक व विचारक,
अनेक विश्वविद्यालयों में
विविध विषयों पर उद्‌बोधन
विद्या भारती के
अखिल भारतीय मंत्री

क्षमता अर्थात् किसी-किसी में जन्मजात होती है, कोई-कोई विकसित करने का प्रयास करता है। उनमें भी कोई-कोई सफल होता है । किसी अन्य में परिस्थिति विशेष के कारण स्वतः जन्म लेती है-ऐसी है यह भाववाचक संज्ञा 'क्षमता'।

यदि आप भी बनना चाहते हैं आई.ए.एस. तो क्या करें?

एक रोचक तरीके से ध्यान करें इस बात को। अपने देश में, सरकार के तंत्र में, सर्वाधिक क्षमतावान माने जाते हैं आई.ए.एस. अधिकारी। वे जो आदेश कर देते हैं, देश के लिए नियम बन जाता है! बड़ी कठिन प्रतिस्पर्धा में से सफल होकर आते हैं वे!

क्षमता के तीन कारकों का विचार करें- रुचि (इन्टरेस्ट), योग्यता (एबीलिटी) तथा कौशल (स्कील) इन तीनों के पहले अक्षर जोड़ लीजिए आप भी बन गए आई .ए.एस. !! अर्थ स्पष्ट है, जो अपने कार्य या लक्ष्य के प्रति रुचि रखकर, अपनी योग्यता के क्षेत्र को पहचान कर और उस दिशा में कौशल का विकास करता है वह हो जाता है क्षमता सम्पन्न। जो दूसरों को देखा-सीखी में, बिना अपनी योग्यता को पहचाने, रुचि लिए बिना या मजबूरी में प्रयास करते हैं वे तो असफल होते हैं।

रुचि का क्षेत्र पहचानें -

संभव है कि आप इतने भाग्यशाली हों कि आपकी रुचि का क्षेत्र ही आपका कार्यक्षेत्र भी बन जाए। नहीं बना तो क्या? एक कहावत है Get what you like or like what you get. जो रुचि हो, वैसा पाने की कोशिश करें, और नहीं सम्भव हो तो जो प्राप्त हुआ, उसी में रुचि उत्पन्न करें अन्यथा जीवनपर्यन्त कुण्ठाग्रस्त रहना पड़ेगा।

क्षमता विकास के लिए क्षेत्र तय करें

जिस क्षेत्र में आप अपनी क्षमता वृद्धि करना चाहते हैं उसे सुनिश्चित करें, स्वाध्याय कर या जानकार व्यक्तियों से चर्चा के माध्यम से उस क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ संकलित करें। उसकी पृष्ठभूमि या वैचारिक अधिष्ठान समझे बिना क्षमता कैसे आएगी फिर उसको जीवन व्यवहार में लाने के लिए अपेक्षित कौशल सीखना होगा। उदाहरण स्वरूप तैरना सीखना हो तो पुस्तक पढ़कर, यूट्यूब पर वीडियो देखकर नहीं सीख सकते, पानी में उतरकर हाथ-पैर मारने ही होंगे और यह एक दिन में नहीं सीख पायेंगे। इसके लिए धैर्य पूर्वक प्रयास जारी रखने होंगे। निरन्तरता और ठीक दिशा में प्रयास के बिना सफलता कठिन है। यह आपके यदि एक गाँव में एक सौ फूट खोदने पर पानी निकलता है तो आपको लगातार उसी स्थान पर खोदना पड़ेगा। २० स्थानों पर पाँच -पाँच फूट खोदने से पानी नहीं मिलेगा। आखिर ''उत्तिष्ठत् जाग्रत'' भी ''प्राप्यवरान्निबोधायत्'' के बिना अपूर्ण है। परिस्थितियाँ अनुकूल हों, आवश्यक नहीं किंतु मनःस्थिति को ठीक

रख कर, समायोजन और संघर्ष करते हुए आगे बढ़ना होगा।

क्षमता बनाम साधन

क्षमता विकास के कुछ क्षेत्रों में तकनीकी पक्ष और उसकी बारीकियों को भी जानना आवश्यक है, जैसे कम्प्यूटर, वाहन, लेखन या पत्रकारिता, विज्ञान और तकनीक के विभिन्न क्षेत्र, खेल, योग आदि। कुछ क्षेत्रों में साधन भी आवश्यक होते हैं - पाश्चात्य खेल, आधुनिक वैज्ञानिक व तकनीकी क्षेत्र आदि। किन्तु क्षमता विकास अर्थात् साधनों का विकास नहीं। वाहन एक साधन है, किन्तु वाहन होने पर भी आप में यदि चलाने की क्षमता नहीं होगी तो वाहन अनुपयोगी रहेगा।

कुछ विचारणीय बिन्दु :

-लक्ष्य के अनुसार क्षमता अर्जित करना या क्षमता के अनुरूप काम करना। जितनी मेरी क्षमता है उतना ही तो कार्य करुँगा या जब काम का दायित्व स्वीकार किया है तो उसके लिए आवश्यक क्षमता भी तो मुझे ही विकसित करनी होगी। तभी लक्ष्य प्राप्त हो पाएगा।

-मेरा क्षेत्र आराम का या चुनौतीपूर्ण। लीक-लीक चलने वाला या नवीनताओं से पूर्ण। माक्षिका स्थाने माक्षिका यानि पिछले कागज पर मरी हुई मक्खी चिपकी है तो इस पर भी मक्खी मार कर चिपकाना या अपनी सूझबूझ से उसी काम को नई दिशा देकर सँवारना यह आपके सोच पर निर्भर है।

-यह करने की मेरी सिद्धता, मानसिक तैयारी कितनी है? इसके लिए मैंने प्रयास किया कितना? मान लिजिए बचपन से मैं दारा सिंह का प्रशंसक रहा हूँ। पहलवान मुझे बहुत अच्छे लगते हैं, मैं भी दारा सिंह जैसा बनना चाहता हूँ किन्तु अखाड़े में जाता ही नहीं, फिर कैसे पहलवान बन सकता हूँ।

-आधुनिक प्रबन्धन शास्त्र ने SWOT Analysis की संकल्पना दी है। S-Strength अर्थात् सबलताएँ, W-Weaknesses अर्थात् दुर्बलताएँ, 0-opportunities अर्थात् सुअवसर तथा T-threats अर्थात् चुनौतियाँ। इन चार आधारों पर स्वयं की तथा कार्य क्षेत्र की समीक्षा करें। अपनी कमजोरियों (Weaknesses) को पहचान कर उन्हें दूर करना चाहिए।

सबलताओं (Strengths) को विकसित करना और संगठन/संस्था/कार्यक्षेत्र में आने वाले सुअवसरों का लाभ उठाने तथा चुनौतियों से निपटने की योजना बनाकर अपनी क्षमता असीमित की जा सकती है।

ई - पाठशाला

विद्या भारती मध्यक्षेत्र ने शैक्षिक गुणवत्ता के विकास की दृष्टि से ऑनलाइन ई - पाठशाला का शुभारंभ किया है। यह ई - पाठशाला संचालन क्षेत्रीय कंप्यूटर शिक्षा प्रमुख एवं आईसीटी प्रमुख श्री राकेश शर्मा के नेतृत्व में चल रहा है। इस पाठशाला में 1000 आचार्य प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से लाभान्वित हो रहे हैं। ई - पाठशाला सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म WhatsApp, गूगल क्लासरूम के माध्यम से विद्या भारती के विभिन्न विषय जैसे शिक्षण कौशल, कंप्यूटर क्लास इत्यादि वर्तमान में चल रहे हैं। अंग्रेजी संभाषण विज्ञान एवं गणित की कक्षाएँ प्रारंभ हुई हैं। प्रतिदिन प्रातः 8:00 बजे सभी विद्यार्थियों को ई पाठशाला के माध्यम से PDF बुकलेट के रूप में शैक्षिक मटेरियल उपलब्ध होता है उसके वीडियो उपलब्ध होते हैं जिन का अध्ययन कर वह अपने कमेंट कर सकते है या जिज्ञासाएँ पूछ सकते हैं । साथ ही प्रतिदिन सायं 6:00 बजे प्रश्नोत्तरी के माध्यम से उस विषय के प्रश्न पूछे जाते हैं जिनका तीव्र गति से वह उत्तर ऑनलाइन देते हैं ।

ई पाठशाला को ज्वाइन करने हेतु मध्य क्षेत्र के कंप्यूटर शिक्षा प्रमुख श्री राकेश शर्मा के WhatsApp नंबर 9424426409 पर मैसेज भेजकर ई - क्लास रूम ज्वाइन की जा सकती है।

प्रयोग

कक्षा में शैक्षिक परिणाम –एक अनुभव

राजेन्द्र सिंह बघेल
पूर्व प्रधानार्य
भारतीय शिक्षा परिषद्(उ.प्र.) के पूर्व सचिव, शैक्षिक लेखक,
कार्यकर्ता प्रशिक्षण संयोजक
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान।
४७ वर्षों का शिक्षण-प्रशिक्षण का अनुभव। प्रशासनिक प्रबंधन में तज्ञ

प्रत्येक मनुष्य अपने द्वारा किए गए कार्य का अच्छा परिणाम चाहता है। इसके लिए वह विभिन्न प्रकार के प्रयत्न भी करता है। कार्य का नियोजन, उसे पूरा करने की प्रक्रिया, संसाधनों का समुचित प्रयोग तथा समय-समय पर किए गए कार्य का मूल्यांकन ये सभी उस कार्य को पूरा करने के उपक्रम हैं।

- कार्य का परिणाम कैसे मिला?
- क्या वह अपेक्षित परिणाम था?
- यदि अपेक्षानुकूल परिणाम नहीं मिला तो कारण क्या थे?
- अपेक्षित परिणाम न मिलने पर कारणों का पता कर उनका निवारण किया क्या?
- निवारण पश्चात् फिर आकलन किया क्या?
- अंत में परिणाम कैसा रहा?

एक अच्छा कार्य करने वाले व्यक्ति के सम्मुख ये प्रश्न आते ही हैं। आइए उपर्युक्त कथन को एक आचार्य होने के नाते अपनी कक्षा में प्रयोग करें। वास्तव में इस प्रसंग से जुड़ा अनुभव पिछले फरवरी माह में विद्या भारती झारखंड राज्य के जिला केन्द्रों पर प्रवास के समय अनेक स्थानों पर मेरे सम्मुख आया। प्रवास के क्रम में एक दिन मैं बोकारो स्टील सिटी के अपने एक विद्यालय में था। विद्यालय में शैक्षणिक प्रगति के लिए किए जा रहे प्रयत्नों की जानकारी करते समय विभिन्न कक्षाओं से जुड़े अनुभव पाठकों के समक्ष रख रहा हूँ।

-पहला प्रसंग कक्षा षष्ठ के हिन्दी विषय में विशेषण पाठ के शिक्षण से जुड़ा है। इस पाठ के शिक्षण के पश्चात् आचार्य ने यह जानने का प्रयत्न किया कि विद्यार्थियों को विशेषण की जानकारी कितनी व कैसी हो पाई। इस अवसर पर जो परिणाम प्राप्त हुआ, मैं भी उसका प्रत्यक्षदर्शी था।

-कक्षा के ४२ विद्यार्थियों में से ८ ने बताई गई परिभाषा और शिक्षण के समय दिए गए उदाहरणों को बताया।

-५ विद्यार्थी ऐसे थे जो दिए गए उदाहरणों के अतिरिक्त भी कुछ अन्य उदाहरण जोड़ते हुए उत्तर दिए थे।

-शेष विद्यार्थी या तो चुप थे या एक दूसरे को देखते हुए अनुत्तरित थे।

इस परिस्थिति में स्वाभाविक है कि आचार्य बहुत उत्साहित नहीं हुए। मेरे पास आकर यह कहने लगे कि मैंने कोशिश तो पूरी की पर लगता है बच्चे उसे समझ ही नहीं पाए। ऐसे में मैंने उनको प्रोत्साहन देते हुए कहा कि कक्षा के ५ बच्चे तो अच्छा उत्तर दे रहे थे। देखिए फिर से एक प्रयत्न और कीजिए तथा सोचिए कि अच्छा परिणाम मिल कैसे मिल सकता है?

इसी क्रम में आचार्य जी ने पुनः विशेषण पाठ की जानकारी विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत की। हाँ इस बार उनके

प्रयत्न में कुछ अधिक नयापन था और कक्षा के परिवेश से जुड़े ही अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए। उनके प्रयत्न इस प्रकार से थे -

-वे कक्षा के बच्चों का नाम लेकर उनकी विशेषता बता रहे थे।

-कक्षाकक्ष में उपलब्ध सामग्रियों की क्या विशेषता है (उनका आकार, रंग, संख्या आदि) उनसे जुड़े उदाहरण दे रहे थे।

-विद्यालय परिसर में स्थित स्थानों की विशेषता भी बताई।

-कक्षा के छात्रों को एक दूसरे के सम्मुख खड़े होकर सामने वाले छात्र की क्या विशेषता है, यह बताने को कह रहे थे।

-कक्षा कक्ष में ३ समूह बनाकर एक को बाहर प्रांगण में, दूसरे समूह को बरामदे में तथा तीसरे समूह को कक्षा कक्ष में ही रहने दिया तथा उनसे कहा कि जो भी वस्तु देखें उसकी विशेषता क्या है और उनकी जानकारी करके आने को कहा।

-ऐसी जानकारी करके आने पर विशेषण के साथ छात्र यह भी बता रहे थे कि वस्तु का रंग, उसकी संख्या उसका आकार कैसा है? यद्यपि उन्हें अभी विशेषण के प्रकार नहीं बताए गए थे।

-स्वाभाविक है कि ऐसा करने से बच्चों की अधिक संख्या में भागीदारी रही। बच्चे नए प्रकार के कार्य से उत्साहित थे।

-अनेक उदाहरण विद्यालय परिसर व कक्षा कक्ष से जुड़े होने के कारण सुलभ और सरल थे।

इससे अनेक प्रश्न उठते हैं-

-क्या कक्षा के वे बच्चे जो प्रायः उत्तर देने में संकोच करते या चुप ही रहते हैं, वे भी उत्तर देने का प्रयत्न कर रहे थे?

-परिणाम स्वरूप शिक्षण के पश्चात् आचार्य का उत्साह दोगुना ही नहीं बल्कि उससे भी अधिक था।

-उन्होंने यह भी बताया कि आज कक्षा के सभी स्तर के बच्चों ने उत्तर दिया और जो भी स्वयं अनुभव करके देखा या समझा था वैसा ही परिणाम मिला।

आज विशेषण पाठ का प्रभाव एवं उसकी अनुभवजन्य जानकारी छात्रों को कैसे प्राप्त हुई, इसका हम सब आकलन कर सकते हैं।

दूसरा अनुभव गणित विषय से सम्बन्धित है

कक्षा में सांख्यिकी का पाठ पढ़ाने का तीसरा दिन था। विषय से सम्बन्धित शिक्षण के क्रम में आचार्य जी ने ३ प्रश्न अभ्यास के लिए दिए। आचार्य जी से मैंने जानना चाहा कि ये ३ प्रश्न हल करने में बच्चों को कितना समय लगेगा? उनका कहना था कि ८ से १० मिनट में छात्र सवाल को हल कर लेंगे। प्रश्न हल करने के क्रम में जो दृश्य मेरे सामने उपस्थित हुआ उसका विवरण इस प्रकार है -

- उस कक्षा में ४० विद्यार्थी थे, सबसे पहले ६ छात्रों ने दोनों प्रश्न हल कर लिया था।

-आचार्य जी ने इनमें से ३ के उत्तर की जाँच कर उन्हें शेष ६ में से २-२ के उत्तर जाँचने की जिम्मेदारी दी। जानकारी मिली कि सभी नौ के उत्तर सही थे। उन ६ बच्चे ने मात्रा ८ मिनट में तीनों प्रश्न हल कर लिए थे।

-यह भी जानकारी मिली कि अगले १८ छात्रों में से १० छात्रों के उत्तर एवं विधि बिलकुल ठीक थी पर ८ के उत्तर अधूरे थे। इन ८ छात्रों ने उत्तर शुद्ध क्यों नहीं दिए इसकी जानकारी के लिए उनसे पूछा गया तो ५ का कहना था कि मैंने यह गलती अतिविश्वास के कारण जल्दी में किया। शेष ३ ने बताया कि उनकी संकल्पना स्पष्ट नहीं हुई। इसलिए प्रश्न का आधा उत्तर ठीक से नहीं दे पाए।

-इन १८ छात्रों को ये तीन प्रश्न हल करने में १२ मिनट लगे।

-शेष बचे १३ छात्रों ने ३ प्रश्नों को हल करने में १८ मिनट लगाए । १३ में से ६ के उत्तर ठीक थे।

-अगले क्रम में १३ बच्चों ने बताया कि वे प्रश्न हल कर चुके हैं। इन छात्रों के उत्तर

कक्षा ६ में गणित की इस कक्षा के छात्रों का पूरा दृश्य आपके सामने इस प्रकार से है -

छात्रा संख्या	शुद्ध उत्तर	समय लगा	समझ की स्थिति
09	सभी ने	8 मिनट	सभी को अवधरणा और समझ ठीक थी। समय कम लगा।
18	10 के सही	12 मिनट	समझ तो है पर समय अधिक लगाया।
	05 के उत्तर अशुद्ध	अधिक समय लगा	समझ तो थी पर अतिविश्वास में गलत कर गए।
	03 उत्तर गलत	अधिक समय	अवधरणा व समझ न होने के कारण गलत हुआ।
13	09 के सही	18 मिनट लगा	समझ तो है पर अधिक समय लगा।
	04 के आधेअधूरे	25 मिनट से भी अधिक समय लगा	समझ ही नहीं पाए विषय में भी रुचि नहीं

प्रथम बार जिन ६ छात्रों ने प्रश्न हल किए थे, जाँच किया सभी ६ के उत्तर सही थे। यद्यपि उन्होंने अधिक समय लिया। शेष ४ के उत्तर एवं विधि भी गलत थे। पूछने पर कारण बताया कि उन्हें प्रश्न का आशय स्पष्ट नहीं था।

-४० में से शेष ४ बच्चे अब तक २५ मिनट में भी उत्तर नहीं दे सके। पता चला कि उनके उत्तर अधूरे थे या उत्तर ही नहीं दिया। बात करने पर उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्हें गणित विषय में रुचि नहीं है इसलिए प्रश्न को समझ नहीं पाए।

सम्पूर्ण परिणाम आचार्य जी के सामने था। यद्यपि उनके कथन के अनुसार ०८-१० मिनट में सब बच्चे तीनों प्रश्न हल तो नहीं कर पाए पर यह वृत जानकर वे आनन्दित थे। क्योंकि उन्होंने अनुभव किया कि

-कक्षा के ४० में से ६ विद्यार्थियों की अवधरणा स्पष्ट है इसलिए जल्दी से सही उत्तर दे सकते हैं। ये ६ छात्र दूसरे छात्रों के उत्तर को जाँच भी सकते हैं। अर्थात् इनमें नेतृत्व करने की क्षमता भी है।

-शेष १६ विद्यार्थी उत्तर तो शुद्ध देते हैं उनको अवधरणा व समझ भी है पर विश्वास कम होने के कारण समय अधिक लगा। इसलिए इन्हें शीघ्रता से शुद्ध उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

-इन ४० में से ५ के उत्तर अशुद्ध हुए क्योंकि वे अतिविश्वास में गलती कर गए, इन्हें इस दृष्टि से सावधन करना होगा।

-०३ छात्रों के उत्तर इसलिए अशुद्ध हुए कि उन्हें विषय की स्पष्ट अवधरणा ही नहीं है। इनकी समझ विकसित करने के लिए उनके गणित के बौद्धिक स्तर की जानकारी करके तदनुसार प्रयत्न करने होंगे।

-कक्षा के जिन ०४ छात्रों ने अन्त तक आधे-अधूरे उत्तर दिया या कुछ नहीं कर पाए उनकी समझ को बढ़ाने के अनुरूप प्रयत्न करने होंगे।

बोकारो स्टीलसिटी स्थित इस विद्या मंदिर के इन दो आचार्यों को सामूहिक बैठक में शिक्षण से जुड़े अपने-अपने अनुभवों को सबके समझ प्रकट करने का अवसर दिया गया। स्वाभाविक है कि सभी आचार्यों ने आनन्द का अनुभव तो किया ही साथ ही शिक्षण के बाद शैक्षिक सम्प्राप्ति की दिशा में सबकी प्रतिबद्धता अधिक सुदृढ़ हुई।

- - - - ० - - - - -

राष्ट्र सर्वोपरि

सामयिक

संजय पाण्डेय
वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक, अ.भा.वि.प.के पूर्व संगठन मंत्री, जी न्यूज, होम टीवी, लाइव इंडिया, जनमत, एनएनएन ७ साउथ अफ्रीका और रंवाडा सहित देश-विदेश में मीडिया पदों पर कार्य।

सम्प्रति-5 वर्षों से रिलायंस इण्डस्ट्रीज में ए.वी.पी. कॉपोरेट कम्युनिकेशन के पद पर कार्यरत

धरा ३७० और ३५ ए को मोदी सरकार ने कूड़ेदान में डाल कर इतिहास रच दिया। ५ अगस्त २०१६ को जब केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह राज्य सभा मे बोलने को खड़े हुए तो बहुत कम लोगों को ही अहसास था कि क्या होने वाला है? अगस्त शुरू होते ही कश्मीर में सुरक्षा हेतु बड़े पैमाने पर सुरक्षा बल भेजे जा रहे थे। चारों तरफ अफवाहों का बाज़ार गर्म था। हर कोई अपने-अपने कयास लगा रहा था परन्तु मोदी सरकार ने एक ही झटके में धरा ३७० और ३५ए को समाप्त कर डालेगी इसकी भनक किसी को नहीं थी। सरकार के जम्मू-कश्मीर को दो केन्द्र शासित प्रदेशों में विभाजित करने के फैसले ने भी बहुतों को आश्चर्यचकित कर दिया।

धरा ३७० और ३५ ए को हटाने के क्या फायदे-नुकसान हैं या फिर सरकार ने कानूनी पेचदगियाँ के बीच कैसे इन कानूनों को दंतहीन बना कर राजनैतिक फैसले को अमली जामा पहनाया इन विषयों का काफी चर्चा हो चुकी है। आज बात होगी 'राष्ट्र सर्वोपरि' सिद्धांत पर चलने वाली मोदी सरकार के फैसलों पर। उन फैसलों पर जिन्होंने धरा ३७० को खत्म करने की जमीन तैयार की। यह वह सरकार है एक ओर जो पंडित नेहरू के समय की धरा ३७० को ध्वस्त करने की हिम्मत रखती है तो दूसरी ओर अपनी पार्टी के पूर्व प्रधनमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की परमाणु बम के मामले में 'नो फस्ट यूज पॉलिसी' को भी रिव्यू करने में नहीं हिचकती।

कड़ी निंदा से कड़े कदमों तक

सबसे बड़ा परिवर्तन जो पिछले कुछ सालों में बड़ी शिद्दत से महसूस किया जा रहा है वह है भारतीय नेतृत्व के सधे कड़े कदम। किसी भी आतंकी हमले के बाद देश के नेताओं तरफ से बस एक ही बयान आता था। हम इस हमले की कड़ी निन्दा करते हैं। कान पक गए थे सुनते-सुनते। पाकिस्तानी गुर्गे हमले पर हमले करते रहे और बात कड़ी निंदा से कभी आगे नहीं बढ़ पाती थी। मोदी सरकार ने आते ही इसे पलट दिया। पाकिस्तान के अंदर घुस कर की गई 'सर्जिकल स्ट्राइक' ने देशवासियों में यह भरोसा जगाया कि अब ईंट का जवाब पत्थर से दिया जा सकता है।

पाकिस्तान और चीन के साथ अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी भारत में आए इन बदलावों की व्यापकता को नहीं पकड़ पाया। इसलिए जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में जब पाकिस्तानी ने फिर आंतकवादी हमला किया तो उसे अंदाजा भी नहीं था कि भारतीय लड़ाकू जहाज पाकिस्तान में घुस कर बालकोट के आतंकी अड्डे को तबाह कर देगें। भारतीय हमला इतना भयानक था कि आज भी पाकिस्तान के रीढ़ की हड्डी में सनसनी दौड़ जाती है। हाल ही में पाकिस्तानी प्रधनमंत्री ने अनजाने में

ही सही इसे कबूल कर लिया। चीन भी डोकलाम में भारत के तेवरों की मार झेल चुका है। जब भूटानी सीमा पर भारत ने चीन के मंसूबों पर पानी फेर दिया था।

प्रो–एक्टिव विदेश नीति

काँग्रेस कश्मीर मसले के अंतरराष्ट्रीयकरण पर सरकार को घेरने की कोशिश कर रही है परन्तु वे एक बात भूल रहे हैं कि बंद दरवाजे के पीछे सुरक्षा परिषद् के देशों की बैठक में चीन को छोड़कर एक भी देश पाकिस्तान के पक्ष में खड़ा नहीं हुआ। १९६५ में जब आखिरी बार सुरक्षा परिषद् ने कश्मीर पर चर्चा की थी तो भारत के पक्ष में ५ स्थाई सदस्यों में सिर्फ एक ही देश था। इस बार उल्टा है भारत के पक्ष में ५ में से ४ स्थाई सदस्य हैं। पिछली बार रूस ने भारत की मदद की थी। इस बार पाकिस्तान की लाज चीन ने बचाई है। यानि इस बार मामला बिलकुल उलट है। मुस्लिम देशों के साथ दुनिया के तमाम देश भारत के पक्ष में हैं। कहीं कोई बड़ा विरोध की खबर नहीं है। यह मोदी सरकार की 'प्रो–एक्टिव' विदेश नीति की सफलता है। एक और बड़ी दिलचस्प बात है कि पहले भारत दुनिया भर में पाकिस्तान की शिकायत करता था अब कुछ ऐसी तस्वीर है कि पाकिस्तान भारत की शिकायत करता घुम रहा है।

राष्ट्र सर्वोपरि

भारत अब विचारों और नीतियों की बेड़ियों में बँधने को तैयार नहीं। पहले धरा ३७० को खत्म कर पंडित नेहरू की गलतियों को ठीक किया गया। फिर अटल बिहारी वाजपेयी की परमाणु बमों के मामले में 'नो फस्ट यूज पॉलिसी' को भी दरकिनार करने का फैसला सरकार ने कर लिया है। इन दोनों 'पालिसी शिफ्ट' के केन्द्र में बस एक ही सिद्धांत है –'राष्ट्र सर्वोपरि'।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने साफ कर दिया है कि भारत परमाणु बम के इस्तेमाल की 'नो फस्ट यूज पालिसी' से बँधा नहीं है। अगर भारत को लगा कि कोई देश परमाणु हमला करने वाला है, तो भारत भी इंतजार नहीं करेगा। भारत आगे बढ़ कर हमला करेगा। पाकिस्तान की परमाणु बम हमले की धौंस अब सहन करने के मुड नहीं हैं। दूसरे बड़े 'पालिसी शिफ्ट' की तरफ इशारा करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि पाकिस्तान से अब केवल पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर पर ही बात होगी। इसका मतलब साफ है कि 'शिमला समझौता' और संयुक्त राष्ट्र अब कोई मायने नहीं रखते। भारतीय कश्मीर पर खड़े सारे सवाल समाप्त समझे जाएँ।

धरा ३७० खत्म होने पर रातों- रात शांति नहीं होने वाली। यह एक लम्बा 'प्रोसेस' है। जो जख्म दशकों से रिस रहा था, उसकी सर्जरी कर दी गई है। जख्म पुराना है इसे भरने में भी वर्षों लगेंगे। पूववर्ती काँग्रेस सरकारों के 'पालिसी पेरालिसिसो' ने देश को जकड़ लिया था। मोदी ने न केवल इसे तोड़ा है बल्कि देश की आकांक्षाओं के अनुरूप एक नया हिंदुस्तान खड़ा करने की कोशिश की है। उम्मीद है कि आगे भी मोदी देश में कड़े फैसले लेते रहेगें।

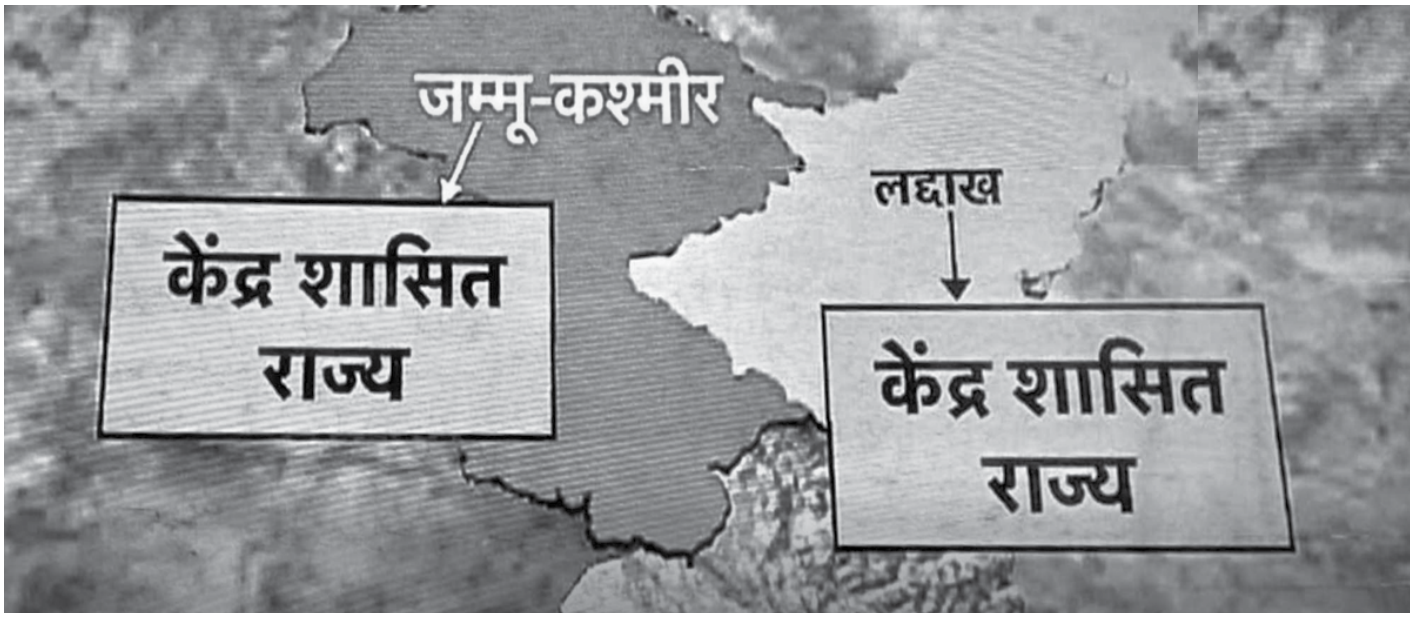

बीस वर्ष पहले...

कारगिल याद रहे!

आलोक गोस्वामी,
सहयोगी संपादक पाचजन्य
goswami.alok@gmail.com

नई दिल्ली के बसंत विहार में यूनाइटेड सर्विस इन्स्टीट्यूट में कारगिल युद्ध की २०वीं वर्षगाँठ के अवसर पर एक शानदार पुस्तक लोकार्पित हुई। कारगिल के शहीदों और जाँबाज वीरों के शौर्य की दास्तान-कारगिल-'अनटोल्ड स्टोरीज फ्राम द वार'। पुस्तक में शहीदों के परिवार वालों या निकट के लोगों से बातचीत के आधार पर रोमांचक गाथा पिरोई गई है। इस कार्यक्रम में शहीदों के माता-पिता और उन जीवित जवानों का सम्मान किया गया जो जी-जान से लड़े थे अपने देश के लिए; उन चंद किस्मत वालों का जो सिर कफन बाँधकर निकले थे। दुश्मन के दाँत खट्टे करके कारगिल फतह कर जीवित अपने घर लौटे। कार्यक्रम के दौरान् शहीद कैप्टन सौरभ कालिया के पिता श्री एन. क. कालिया का वीडियो संदेश दिखाया गया जिसमें उन्होंने कहा कि वह 'अपने शहीद बेटे की शहादत का उचित सम्मान दिलाकर रहेंगे, सरकारों ने २०साल से उस दिशा में कुछ नहीं किया।' श्री कालिया सर्वोच्च न्यायालय में केस लड़ रहे हैं और कहते हैं 'जब तक सासं रहेगी लड़ता रहूँगा।' वो चाहते हैं, सरकार पाकिस्तान से बात करे कि क्यों सौरभ कालिया के मानवाधिकारों तक तक ध्यान नहीं रखा गया, क्योंकि जनेवा संधि का उल्लंघन करते हुए उसके और उसके ५ अन्य साथी जवानों के शव क्षत-विक्षत हालत में लौटाए गए।

जाने क्यों उस कार्यक्रम से वापस लौटते हुए रास्ते भर श्री कालिया का वो आहत चेहरा आँखों के आगे घूमता रहा, उनके शब्द कानों में गूंजते रहे-''जब तक सांस रहेगी लड़ता रहूँगा।' शहीद कैप्टन सौरभ कालिया याद है न आपको? कारगिल याद है न आपको? याद है न उस युद्ध में हमने २३-२४ साल के ५२७ नौजवान अफसर और जवान खोए थे? याद हैं न कारगिल, बटालिक, द्रास, तोलोलिंग, टाइगर हिल की वो बर्फ से ढकी चोटियों पर अपना रक्त बहाकर हमारी सुरक्षा सुनिश्चित करने वाले रणबाँकुरे। याद है न ये युद्ध ३ मई १९९९ से २६ मई १९९९ तक चला था? याद है न इस युद्ध अभियान का नाम ऑपरेशन विजय था। याद है न ये पाकिस्तान की भारत पर युद्ध थोपे ने की चौथी नाकाम कोशिश थी, याद है न युद्ध के दिनों में देश में कैसा जोश का जज्बा तैरता था फिजाओं में। कैसे बच्चे अपनी गुल्लकें फोड़कर युद्ध के दिनों में देश हित में पैसा सेना के कोष में जमा करा रहे थे, कैसे नौकरीपेशा आम लोग अपनी तनख्वाहों का एक हिस्सा प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा करा रहे थे, अगर देश की जनता में ऐसा जज्बा था तो फिर क्यों एक शहीद के पिता को आज बिसरा दिए जाने का दर्द साल रहा है? अभी पिछले दिनों कारगिल की बीसवीं वर्षगांठ धूमधम से मनाने वाले देश के पिछले कर्णधरों ने सेना और सौनिकों को उपेक्षित बनाए रखा। बात शुरू करते हैं उसी कैप्टन सौरभ कालिया से।

बीस साल पहले...

पालमपुर, हिमाचल में कालिया परिवार १२ दिसम्बर १६६८ को जश्न मना रहा था। परिवार का बेटा सौरभ भारतीय सेना में अफसर जो बना था। मिठाइयाँ बंटीं, गिद्दे पाए गए। लेकिन जश्न अभी थमा नहीं था कि कारगिल से ड्यूटी की पुकार आ गई। कैप्टन सौरभ अपने माता-पिता का आशीर्वाद लेकर पहुँच गया कारगिल की बर्फ से ढकी चोटियों की निगरानी करने। उसकी चार जाट रेजीमेंट को अग्रिम चौकी पर तैनात होने का हुक्म मिला था। अग्रिम चौकी पिछले कई दिनों से बर्फ से ढकी थी लिहाजा उन्हें पहाड़ी से नीचे की चौकी पर रहना पड़ा था। १४ मई १६६६ की सुबह सौरभ अपने पाँच अन्य सैनिक अर्जुन राम, भंवरलाल बागारिया, भिकाराम, मूलराम और नरेश सिंह के साथ अग्रिम चौकी के हाल देने निकल गया कि देखें, बर्फ उतर चुकी हो तो वहाँ तैनाती हों। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि उस चौकी पर क्या हालात थे। वहाँ पहुँचने से पहले ही उन्हें कुछ इंसानी हलचल दिखाई दी। वे समझ गए कि मामला गड़बड़ है शायद आतंकी घुसपैठिए आ जमें थे।

ये सोचकर उन्हें खदेड़ने की गरज से वे ६ जांबाज आगे बढ़ते गए परन्तु उनके मुकाबले घुसपैठियों के भेस में बैठे पाकिस्तानी फौजी ज्यादा थे, गोलियाँ चलीं और हमारे ६ बहादुरों को उन्होंने बंदी बना लिया। सौरभ की गश्ती पार्टी का २ बजे आधर शिविर से रेडियो सम्पर्क टूट जाने अफसरों को हालात नाजुक होने की भनक लगी। लेकिन तब तक दुश्मन ने उन ६ जवानों को बंदी बना लिया और २२ दिन तक यातनाएँ देने के बाद उनके शव को इस हालात में वापस किए कि देखने वाले की रूह काँप गई। आँखे निकाल ली गईं थीं, चेहरे पर चाकुओं के अनगिनत घाव थे। हाथ पैरों की हड्डियाँ चूर -चूर कर दी गईं थीं। यानि पशुता की हदें पार कर दी गईं थीं। सौरभ के पिता का गम यही है कि आखिर क्यों उनके युद्धबंदी बेटे के साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार किया गया?, श्री कालिया के पिता की पथराई आँखें कई सवाल खड़े करती हैं जिनका जवाब सरकार या अदालत, किसी को तो देना चाहिए।

लेकिन जांबाजी की ये दास्तान सिर्फ सौरभ तक सीमित नहीं रही। नौजवान सूरमाओं ने कारगिल में शौर्य की नई परिभाषा गढ़ी थीं, क्योंकि पाकिस्तान दोस्ताना बातों की आड़ में अपने तत्कालीन फौजी जनरल मुशर्रफ की अगुआई में शांत माने जाने वाले कारगिल में बर्फीली चोटियों पर आतंकियों के भेस में पिछले कुछ महीनों से अपने सैनिक जमा करता रहा था। ३ मई १६६६ को वहाँ बाल्टिक सेक्टर के पहाड़ों में अपने याक चरा रहे चरवाहे ताशी नामग्याल ने बाहरी बोली-भाषा और पहनावे वाले कुछ घुसपैठिए को देखा और फौरन इलाके के फौजी कमांडरों को इतला दी।

भारतीय फौज ने आनन-फानन में तफ्तीश शुरू की तो पता चला कि कारगिल और उससे सटी पहाड़ियों पर भारतीय सेना की खाली चौकियों, बंकरों में आतंकवादियों के साथ भारी तादाद में पाकिस्तानी फौजी कब्जा जमाए बैठे थे। सारी स्थितियाँ पता करके ८ मई को अपना इलाका खाली करवाने के लिए 'ऑपरेशन विजय' की शुरूआत हुई। युद्ध १६,०००-१८,००० फुट की ऊँची बर्फीली चोटियों पर होना था इसलिए नौजवान अफसरों को ज्यादा बुलाया गया। हालात ऐसे थे कि पाकिस्तानी पहाड़ की चोटी पर थे और भारतीय जवान नीचे की तरफ खुले मैदान में। इसलिए बड़ी होशियारी के साथ रात के अंधेरे का फायदा उठाते हुए लगभग पेट के बल रेंगकर हमारे जवान चोटी तक पहुँचते और घात लगाकर दुश्मन पर हमला बोलते। दिन के उजाले में उनके लिए अपने शहीद साथियों के शव ले आना मुमकिन नहीं था, जरा खुले में आते कि चोटियों से पाकिस्तानी मशीनगनें गोलियाँ बरसाने लगतीं। ये सारा आँखों देखा मंजर हमें अपने शब्दों से दिखाया था रामकृष्णन ने। उस दिन वह अपनी 'वर्दी में' शहीद कैप्टन हनीफुद्दीन का शव लेकर दिल्ली आया था और हमनें उससे कारगिल के हालात जाने थे। उसने बताया कि कैसे हनीफुद्दीन जांबाजी के साथ लड़ा था, कैसे उसने अपने साथियों को पीछे रोक कर खुद आगे बढ़ने की ठानी थी और दुश्मन की गोलियों की परवाह न करते हुए अपनी चौकी की तरफ बढ़ा था। कैप्टन हनीफुद्दीन को गोलियों से बिंधकर शहीद होते देख रहे थे उसके साथी, उसकी देह को सामने पहाड़ी पर बेजान पड़ी देख रहे थे पर ला नहीं पा रहे थे। इधर दिल्ली में हनीफ की माँ हेमा अजीज को उसके बेटे के शहीद होने की खबर भिजवाई गई, और जब बताया गया कि उसकी बेजान देह को लाने में क्या दिक्कत आ रही है, तो बहादुर बेटे की दिलेर माँ ने कहा था, ''मैं नहीं चाहती कि हनीफ के देह लाने में किसी और माँ का बेटा छिने। जब हालात काबू में आ जाएँ तब हनीफ की मृत देह को लाई जाए।'' और ऐसा ही हुआ। शहीद होने के २२ दिन बाद हनीफ की मृत देह चोटी से नीचे लाया जा सका। दिल्ली में, मुझे याद

है कैप्टन हनीफ की वो अंतिम यात्रा। मयूर विहार में उसके घर से लोदी रोड कब्रिस्तान तक फूलों से सजी गाड़ी में तिरंगे में लिपटी शहीद की देह पर रास्ते भर लाखों लोगों ने फूल बरसाये थे। कब्रिस्तान में बंदूकों से सैन्य सलामी के बाद 'भारत माता की जय' और 'कैप्टन हनीफुद्दीन अमर रहे। के नारों से आसमान गूंज उठा था। पूरा मैदान देशभक्तों से भरा था और हर एक की आँखें नम थी।

पत्रकार के नाते वो दिन मेरे लिए भी किसी रोमांचक दौर से कम नहीं थे। कारगिल के घटनाक्रमों की लगातार रिर्पोटिंग में दिन के घंटों, पहरों तक का होश न रहता था। थलसेना के एक अफसर कर्नल बिक्रम सिंह हर दिन दोपहर ३ बजे शास्त्री भवन में आकर हम पत्रकारों को बताते कि आज की कारवाई में फलां चोटी हमने वापस ले ली है । आज पाकिस्तान के इतने सैनिक मारे गए, भारत के ये-ये सपूत शहीद हुए, वगैरह-वगैरह। ३०० से ज्यादा तोपों, रॉकेट लॉचरों और मोर्टारों से रोज करीब ५००० गोले दागे जाते थे। आर्टिलरी तोप से कुल २,५०,००० गोले दागे गए। भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान को मिग २७ और मिग २६ लड़ाकू विमानों से छठी का दूध याद दिलाया था। सेना के अफसर की बताई कोई सूचना रोमांचित कर जाती तो कोई उदास। लेकिन रणनीति तौर पर बहुत खास बटालिक, द्रास, टाइगर हिल, तोलाजिंग आदि चौकियाँ धीरे-धीरे भारत के कब्जे में वापस आते जाने की खबरें लिखते हुए जैसे कलम तेजी से चलने लगती, तो शहीदों की जानकारी लिखते वक्त लगता जैसे कलम भारी हो जाती थी। आज भी याद है कि कैसे वहाँ देशभक्ति का एक ज्वार जैसा उमड़ पड़ता। दिल्ली में उस

वक्त अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार थी और रक्षा मंत्री थे गजब के देशभक्त जार्ज फर्नांडीस। सरकार ने सेना को कारवाई की रचना अपने हिसाब से करने की पूरी छूट दी गई थी और जहाँ जो हथियार चाहिए होते थे वहाँ वो उपलब्ध कराए जाते थे। भीषण संघर्ष के बाद करीब १५ मई को युद्ध में जीत मिल गई थी लेकिन सेना गहन तफतीश करके ये पक्का कर लेना चाहती थी कि अब कोई आतंकी घुसपैठिए या पाकिस्तानी फौजी भारत की सीमा में नहीं है। पूरी जाँच के बाद आखिरकार २६ मई को अधिकारिक रूप से 'ऑपरेशन विजय' सफल रहने की घोषणा की गई।

लेकिन ये युद्ध अपने पीछे कई सवाल छोड़ गया था। ऐसे सवाल जो कई साल से रक्षा अधिष्ठान को मथते आ रहे थे। जैसे सेना के लिए जरूरी साजो-समान पूरी तरह से भारत में क्यों नहीं बनाए जाते। सैनिकों की जरूरतों के प्रति उदासीनता भरी निगाहों से क्यों देखा जाता है। सेना को पर्याप्त बजट क्यों नहीं दिया जाता। आदि संतोष की बात है कि २०१४ में केन्द्र में सत्ता में आई नरेन्द्र मोदी की सरकार ने सेना की वर्षों से रही शिकायतों को तुरंत सज्ञान में लेते हुए कई मोर्चों पर काम शुरू किया और रक्षा उत्पादन अधिकांशतः भारत में ही करने का इंतजाम किया। सैनिकों के वेतनमानों और सेवानिवृत्ति पर भत्तों में समयानुकूल वृद्धि की, एक रेंक-एक पेंशन योजना लागू की।

भारत का सैनिक पैसा नहीं, मान चाहता है। शौर्य का सम्मान चाहता है। अपने पर आश्रितों का उचित ध्यान चाहता है। सियासत से सेना में योगदान चाहता है। भारत की सेना दुनिया में अद्वितीय मानी जाती है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की रक्षा में जुटी हमारी सेना का पराक्रम में कोई सानी नहीं है। क्योंकि भारत का वीर हथियार से नहीं, हौसले से लड़ता है। कारगिल भारतीय सेना के उसी हौसले का साक्षी बना था। अब से २० साल पहले याद है न आपको!

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के विश्वविख्यात वैज्ञानिक विक्रम साराभाई

जन्मशती

लेखक -

विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी

एम.एस.सी. वनस्पति शास्त्र
बी.एड.(राजस्थान विश्वविद्यालय)
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, प्रधानाचार्य पद से सेवा. निवृत, लेखन- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान हेतु विज्ञान के पाठ्य-पुस्तकों का लेखन
सम्मान : राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा शम्भूदयाल सक्सेना बाल-साहित्कार पुरस्कार
प्रकाशित पुस्तकें -बच्चों की कहानियाँ, विज्ञान कथाएँ
बाल विज्ञान उपन्यास-अंतरिक्ष के लुटेरे भी प्रकाशित

भारत की आज अंतरिक्ष विज्ञान में अग्रणी राष्ट्रों में धूम मची है। मितव्ययिता से अंतरिक्ष यान प्रेक्षण में तो भारत ने अमेरिका, जापान, चीन आदि देशों को भी पीछे छोड़ दिया है। इसका श्रेय भारत के सुदृढ़ अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम की नींव रखने वाले, राष्ट्रीय विचारधारा के पोषक महान वैज्ञानिक डॉ. विक्रम सारा भाई को जाता है।

विक्रम अंबालाल साराभाई का जन्म 12 अगस्त 1919 को अहमदाबाद के एक उद्योगपति परिवार में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा अहमदाबाद में प्राप्त करने के बाद वे 1937 में इंग्लैंड गए व इन्होंने 1940 में इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्रकृति विज्ञान में ट्राईपोज की उपाधि प्राप्त की। इंग्लैंड से लौटने के बाद विक्रम साराभाई ने बेंग्लुरू के भारतीय विज्ञान संस्थान में प्रोसीवीरमन के निर्देशन में 'कॉस्मिक किरण ाे' पर अनुसंधान कार्य प्रारम्भ किया। उस समय विक्रम साराभाई प्रोफेसर रमन के साथ 'कॉस्मिक किरणो' पर काम करने वाले एकमात्र विद्यार्थी थे। उनका पहला अनुसंधान पर लेख 'द टाइम डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ कॉस्मिक रेज़' भारतीय विज्ञान अकादमी की कार्य विवरणिका में प्रकाशित हुआ। वर्ष 1940 से 45 की अवधि के दौरान् 'कॉस्मिक रेज़' पर अनुसंधान कार्य में बेंग्लुरू और कश्मीर (हिमालय) में उच्च स्तरीय केन्द्र गेइजर-मूलर 'गणकों पर कॉस्मिक रेज़ के समय रूपांतरण' हेतु अध्ययन किए थे। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद विक्रम पुनः कैम्ब्रिज चले गए। वे 1947 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से 'उष्ण ाकटिबंधीय अक्षांश (ट्रापिकल लैटीट्यूड्स) में कॉस्मिक रेज़' पर अपना शोध प्रबंध पूरा कर एवं पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर भारत लौट आए।

विक्रम साराभाई के लिए विज्ञान विषय जीवनयापन का साधन न होकर गहरे विश्वास का विषय बना। एक उद्योगपति परिवार की होनहार संतान के नाते उम्मीद की जाती थी कि वे पैतृक व्यवसाय को आगे बढ़ायेंगे। विक्रम साराभाई ने निःस्वार्थ भाव से अपनी रुचि के विषय विज्ञान अनुसंधान को अपना जीवन लक्ष्य बनाया। इन्होंने कई कॉस्मिक किरण अनुसंधान तैयार किए। उन्हें जल्दी ही अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गई। उन्हें कॉस्मिक किरण अनुसंधान के कई अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं का सदस्य व पदाधिकारी बनाया गया। वे 'अंतर-भूमंडलीय अंतरिक्ष', 'सौर भूमध्यरेखीय संबंध' और 'भू-चुम्बकत्व' पर अनुसंधान करते रहे।

डॉ. होमी जहाँगीर भाभा से समानता

होमी जहाँगीर भाभा तथा विक्रम साराभाई के जीवन में अनेक समानताएँ हैं। दोनों प्रसिद्ध धनाढ्य परिवारों से संबंधित थे। दोनों के ही परिवारों की अपेक्षा थी कि वे पारिवारिक व्यापार को आगे बढ़ाएँ। दोनों ने ही अपनी रुचि को महत्त्व देते हुए विज्ञान अनुसंधन को अपना कर्म क्षेत्र बनाया। दोनों ने कम उम्र में ही राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सफलाताएँ प्राप्त कीं। दोनों नक्षत्र के समान अपनी सर्वोच्च चमक प्राप्त करते ही आकाश में यकायक विलुप्त हो गए। डॉ. भाभा की मृत्यु 56 वर्ष की आयु हुई तो विक्रम साराभाई की आयु मात्र 52 वर्ष थी। दोनों ही अपने देश के विज्ञान अनुसंधान के दीवाने थे एक ने आण्विक ऊर्जा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तो दूसरे ने अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत का मान बढ़ाया। आज भी भारत इन दोनों क्षेत्रों में विश्व के अग्रणी देशों में है।

स्वप्नद्रष्टा

डॉ. विक्रम साराभाई एक स्वप्नद्रष्टा थे और उनमें कठोर परिश्रम की असाधारण क्षमता थी। फ्रांसीसी भौतिक विज्ञानी पी.ए.रे.क्यूरी (1859-1906) जिन्होंने अपनी पत्नि मेरी क्यूरी (1867-1934) के साथ मिलकर पोलोनियम और रेडियम का आविष्कार किया, डॉ. साराभाई का उद्देश्य जीवन को सार्थक बनाना और उसके लिए देखे गए स्वप्न को वास्तविक रूप देना था। इसके अलावा डॉ. साराभाई ने अन्य अनेक लोगों को स्वप्न देखना और उस स्वप्न को पूर्ण करने के लिए काम करना सिखाया। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की सफलता इसका प्रमाण है।

सरल सहयोगी व्यक्तित्व

डॉ. साराभाई में एक प्रवर्तक वैज्ञानिक, भविष्यद्रष्टा, औद्योगिक प्रबंधक और देश के आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक उत्थान के लिए संस्थाओं के वैकल्पिक निर्माता का अद्भुत संयोजन था। उनमें अर्थशास्त्र और प्रबंध कौशल की अद्वितीय सूझ थी। उन्होंने किसी समस्या को कभी कम करके नहीं आँका। उनका अधिक समय अनुसंधान गतिविधियों में गुजरा और उन्होंने अपनी असामयिक मृत्युपर्यन्त अनुसंधान का निरीक्षण करना जारी रखा। उनके निरीक्षण में 19 लोगों ने अपनी डाक्ट्रेट सम्पन्न किया। साराभाई ने स्वतंत्र रूप से अपने सहयोगियों के साथ मिलकर राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 86 लेख अनुसंधान पर लिखे। कोई भी व्यक्ति किसी बिना डर या हीन भावना के डॉ. साराभाई से मिल सकता था। फिर चाहे संगठन में उसका कोई भी पद क्यों न रहा हो। साराभाई सदा उसे बैठने के लिए कहते। वह बराबरी के स्तर पर उनसे बातचीत करते थे। वे व्यक्ति को सम्मान देने में विश्वास रखते थे और इस मर्यादा को उन्होंने सदा बनाए रखने का प्रयास किया। वे सदा चीजों को बेहतर और कुशल तरीके से करने के बारे सोचते रहे। उन्होंने जो भी किया उसे सृजनात्मक रूप में किया। युवाओं के प्रति उनकी उद्विगनता देखते ही बनती थी क्योंकि वे युवाओं की क्षमताओं का पूरा उपयोग देश के लिए करने की सोचते थे। यही कारण था कि वे उन्हें अवसर और स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए सदा तैयार रहते थे।

दूरदर्शी नेतृत्व

कॉस्मिक किरणों पर अनुसंधान करते हुए डॉ. विक्रम साराभाई ने यह जान लिया था कि संचार तकनीकी, मौसम विज्ञान, सुदूर संवेदन आदि के माध्यम से देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में अंतरिक्ष अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने इस दूरदर्शिता के कारण ही उन्होंने भारत सरकार को इस नवीन क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। अहमदाबाद में भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला खोलने का सपना विक्रम साराभाई ने अपनी पत्नि मृणालिनी साराभाई के साथ 1942 में पूना में देखा था। अत्यंत अल्प साधन तथा उधार के स्थान पर प्रारम्भ किए गए इस अनुसंधन केन्द्र को विकसित होने में अधिक समय नहीं लगा। भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला के नए भवन की आधारशिला 1952 में सर सीवीरमन ने रखी थी तथा 1954 में तत्कालीन प्रधनमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उसका उद्घाटन किया। यह अनुसंधान संस्थान विक्रम साराभाई को अत्यंत प्रिय था। वे चाहे कहीं भी, किसी भी सर्वोच्च पद रहे परन्तु वे हमेशा इस अनुसंधान केन्द्र के विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए समय निकाल ही लेते थे।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

अनेक क्षेत्रों में उन्होंने अग्रणी भूमिका निभाई। वे केवल सोचते ही नहीं थे बल्कि विचार को कार्य रूप में परिणत करने के लिए मेधाशक्ति का उपयोग भी करते थे। यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी। डॉ. साराभाई के सहयोग से ही अहमदाबाद में टेक्सटाइल ऐसोसिएशन की स्थापना हुई। इस संस्थान ने देश के वस्त्र उद्योग के विकास में बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. साराभाई कुछ समय तक इस संस्थान के मानद निदेशक भी थे। 1962 में विक्रम साराभाई ने अहमदाबाद में इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट की संस्थापना

की। इस संस्थान के स्थापना के पीछे उनकी यह सोच थी कि देश में जल्दी ही औद्यागिक क्रान्ति आएगी और उद्योगों के सफल संचालन हेतु उच्च कोटि के प्रबंधकों की जरूरत होगी। 1966 तक डॉ. साराभाई इस संस्थान के मानद निदेशक रहे। अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था के प्रति वे सदैव सजग रहे। घर के बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा व्यवस्था हेतु उन्होनें घर पर ही स्कूल प्रारम्भ कर बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया था। विज्ञान की अच्छी शिक्षा व्यवस्था हेतु अहमदाबाद में 'सामुदायिक विज्ञान केन्द्र' की स्थापना भी करवाई। इनके प्रयास से ही थुम्बा में 'इक्वीटोरियल रॉकेट लॉचिंग स्टेशन' की स्थापना हुई। जहाँ किसी भी देश का व्यक्ति आकर अनुसंधान कर सकता था। त्रिवेन्द्रम में 'अंतरिक्ष विज्ञान केन्द्र' भी डॉ. साराभाई के प्रयासों का ही परिणाम है। 'स्पेश एप्लीकेशन सेंटर अहमदाबाद', 'फास्टर ब्रिड रियेक्टर (एफबीटीआर) कलपक्कम', 'वैरीएबल एनर्जी साईक्लोट्रोन प्रोजेक्ट कोलकत्ता', 'भारतीय इलैक्ट्रानिक निगम लिमिटेड (ईसीआईएल) हैदराबाद' और 'भारतीय यूरेनियम निगम लिमिटेड (यूरीआईएल) जादूगुडा, (झारखंड)'आदि भी उनके ही प्रयासों की देन है।

विज्ञान और संस्कृति

भारत में टेलिविजन के माध्यम से प्रसारण हेतु उपग्रह तकनीकी का विकास किया। देश में भेषज उद्योग को बढ़ावा दिलाया। डॉ. साराभाई भेषज उद्योग से जुड़े उन चंद लोगों में से थे जिन्होंने इस बात को पहचाना कि गुणवत्ता के उच्चतम स्तर का मानकीकरण किया जाए। उन्होंने भेषज उद्योग में इलेक्ट्रानिक ऑकड़ा, प्रसंस्करण और संचालन अनुसंधान तकनीकी को लागू किया। उन्होंने भेषज उद्योग को आत्मनिर्भर बनाने के लिए और अनेक दवाइयों और उपकरणों का देश में ही निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे देश में विज्ञान की शिक्षा की स्थिति के बारे बहुत चिंतित रहते थे। इस स्थिति में सुधर लाने के लिए उन्होंने 'सामुदायिक विज्ञान केन्द्र' की स्थापना की। डॉ. साराभाई सांस्कृतिक गतिविधियों में गहरी रुचि रखते थे। वे संगीत, फोटोग्राफी, पुरातत्व, ललित कलाओं आदि अन्य क्षेत्रों से भी जुड़े रहे । अपनी पत्नि मृणालिनी के साथ मिलकर उन्होंने मंचन कलाओं की संस्था 'दर्पण' का गठन किया था। उनकी बेटी डॉ. मल्लिका साराभाई बड़ी होकर भरत-नाट्यम और कुचीपुड़ी की प्रसिद्ध नृत्यांगना बनी।

राष्ट्र के प्रति समर्पण

डॉ. साराभाई बचपन से ही स्वार्थ से दूर एवं ओजस्वी विचारों के व्यक्ति थे। उन्होंने राष्ट्र के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सदैव उन्नत करने का प्रयत्न किया। विदेश में पढ़ने व पैसा कमाने की गरज से नहीं अपितु ज्ञान प्राप्त कर उसका देश के विकास हेतु उपयोग करने के लिए यात्रा की। डॉ. साराभाई ने अन्य लोगों को भी अध्ययन हेतु विदेश जाने व अध्ययन पूरा कर भारत लौट कर देश के लिए काम हेतु प्रेरित भी किया । डॉ. साराभाई सर सीवीरमन व डॉ. होमीजहॉगीर भाभा के निकट सम्पर्क में रहे तथा उनके जीवन पर इन दोनों वैज्ञानिकों का विशेष प्रभाव पड़ा। 1966 में डॉ. भाभा के आकस्मिक निधन के बाद डॉ. साराभाई को उनका स्वाभाविक उत्तराधिकारी मान कर आण्विक ऊर्जा के विकास की जिम्मेदारी सौंपी गई। डॉ. भाभा के निधन के बाद साराभाई ने मात्र ६ वर्ष के कार्यकाल में ही बहुत प्रगति कर देश का नाम रौशन किया। उनका मानना था कि परिणाम प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयास करने होते हैं। साराभाई यह भी मानते थे कि तेजी से आगे जाने के लिए त्वरित मार्गों की खाजे करनी ही पड़ती है। उन्हें उनके अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु सन् 1966 में पद्‌म भूषण का सम्मान दिया गया। सरल व मोहक व्यक्तित्व के धनी डॉ. साराभाई अचानक हमारे बीच से 30 दिसम्बर 1971 को चले गए। उनके सम्मान में तिरूअनन्तपुरम् में स्थापित 'थुम्बा इक्वीटोरियल रॉकेट लांचिंग स्टेशन' का नाम और अन्य सम्बद्ध अंतरिक्ष संस्थानों का नाम बदल कर विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र रखा गया। यह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) एक प्रमुख अंतरिक्ष अनुसंधन केन्द्र के रूप प्रतिष्ठा प्राप्त संस्थान है। 1974 में सिडनी स्थित अन्तरराष्ट्रीय खगोल विज्ञान संघ ने निर्णय लिया कि 'सी ऑफ सेरेनिटी' पर स्थित बेसल नामक मून क्रेटर अब साराभाई क्रेटर के नाम से जाना जाएगा। देश की प्रगति में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए मृत्यु के उपरांत उन्हें सन् 1972 में पद्‌म विभूषण से सम्मानित किया गया। भारतीय दूरसंचार व डाक विभाग द्वारा उनकी पुण्यतिथि पर 1972 में डाक टिकट भी जारी किया गया। उन्होनें जिन आदर्शों की स्थापना की वे आज भी उतने ही महत्वपूर्णं हैं, जो उनके समय में थे। यह प्रसन्नता का विषय है कि हमारे वैज्ञानिक उनके पदचिन्हों पर चल कर अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में तथा आण्विक ऊर्जा के क्षेत्र में देश का गौरव बढ़ा रहे हैं। आशा है कि विद्यालयों में वर्तमान पीढ़ी उनसे प्रेरणा लेकर देश के विकास में सकारात्मक भूमिका निभायेगी।

कितनी मंदी–कितनी चिन्ता

आर्थिक चिंतन

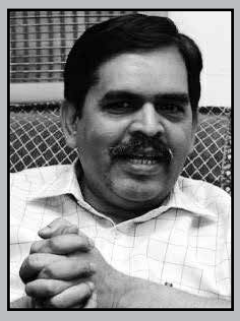

अश्वनी महाजन
आर्थिक चिंतक - विश्लेषक
एसोसिएट- प्रोफेसर,
दिल्ली विश्वविद्यालय

30 अगस्त 2019 को केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा अप्रैल से जून की तिमाही के लिए जीडीपी ग्रोथ के आंकड़े प्रकाशित किए गए हैं जिनके अनुसार इस तिमाही में पिछले छह सालों में सबसे कम जीडीपी ग्रोथ यानि 5 प्रतिशत आकलित की गई है। पूर्व में 8 प्रतिशत से भी ज्यादा ग्रोथ दिखा रही अर्थव्यवस्था और जिसे दुनिया की सबसे तेज गति से बढ़ने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था माना जाता हो के लिए इस प्रकार के समाचार विचलित करने वाले हैं। लेकिन देखना यह है कि क्या यह धीमापन किसी गहरी मंदी की ओर संकेत कर रहा है या एक माध्यमिक स्थिति की ओर? क्या यह धीमापन जल्दी समाप्त हो सकता है या लंबा चल सकता है? इस सम्बन्ध में अंतरराष्ट्रीय सलाहकार फर्म गोलमैन सैक का यह कहना है कि यह धीमापन धीरे-धीरे समाप्त होने वाला है। एशियाई विकास बैंक ने भी रिजर्व बैक द्वारा अधिशेष हस्तांतरित करने से अर्थव्यवस्था को गति मिलने के संकेत दिए हैं। यानि अर्थव्यवस्था में धीमापन होते हुए भी रिकवरी की संभावनाएँ सीधे तौर पर दिखाई दे रही हैं।

केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा पिछली तिमाही में जीडीपी ग्रोथ में आई कमी की तह में जाएँ तो पता चलता है, हालांकि सामूहिक आंकड़ों के अनुसार इस तिमाही में पिछले वर्ष की तुलना में ग्रोथ दर 7.7 प्रतिशत से घटकर मात्र 5 प्रतिशत रह गई है। लेकिन यदि क्षेत्रक के अनुसार आंकडों को देखें तो अर्थव्यवस्था के तीन प्रमुख क्षेत्रक ऐसे हैं जिनमें 7 प्रतिशत से ज्यादा ग्रोथ हुई है। वे हैं गैस इलेक्ट्रिसिटी, गैस वाटर सप्लाई और अन्य सेवाएँ (8.6 प्रतिशत), व्यापार, होटल, ट्रांसपोर्ट, संचार एवं ब्राडकास्टिंग(7.1 प्रतिशत), पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, प्रतिरक्षा एवं अन्य सेवाएँ (8.5 प्रतिशत)। कृषि में ग्रोथ 2 प्रतिशत और खनन में 2.7 प्रतिशत और मैन्यूफैक्चरिंग में 0.2 प्रतिशत ही हुई है। कंस्ट्रक्शन में ग्रोथ 5.7 प्रतिशत और वित्तीय सेवाओं, रियल एस्टेट एवं प्रोफैशनल सेवाओं में भी 5.9 प्रतिशत ग्रोथ आंकी गई है। पिछली तिमाही में जिस प्रकार से आटोमोबाइल क्षेत्र में माँग में भारी गिरावट देखी गई है उसके चलते जीडीपी ग्रोथ के ये आंकड़े कोई आश्चर्यजनक नहीं हैं।

शेष दुनिया के साथ तुलना भी जरूरी

प्रश्न यह है कि क्या यह मंदी भारत केन्द्रित है या इसका शेष दुनिया के साथ भी संबंध है? और यदि है तो हमें भारत की जीडीपी के धीमेपन की तुलना दूसरे मुल्कों से करनी होगी। आंकड़े बताते हैं कि पिछली तिमाही में शेष दुनिया के अधिकांश देशों में धीमापन आया है। अमरिका में जहाँ इस वर्ष की पहली तिमाही में ग्रोथ 3.1 प्रतिशत थी, वह दूसरी तिमाही में मात्र 2.1 प्रतिशत रिकार्ड की गई। यूरोपीय संघ पहली तिमाही की ग्रोथ 0.4 प्रतिशत थी, जो दूसरी तिमाही में घटकर 0.2 प्रतिशत रह गई । चीन की सरकार ने भी जो आंकड़े दिए हैं, उसके अनुसार चीन की ग्रोथ की दर पहली तिमाही में 6.4 प्रतिशत से घटकर दूसरी तिमाही में

मात्र 6.2 प्रतिशत रह गई। आज विश्व के सब देश आर्थिक रूप से एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं और एक देश की मंदी अन्य देशों को भी प्रभावित करती है। पिछले कुछ समय से चल रही वैश्विक मंदी के चलते भारत पर उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। जानकारों का यह भी कहना है कि दुनिया में अर्थव्यवस्थाओं की गति धीमी होने के पीछे तेल की बढ़ती कीमतें जिम्मेदार रही हैं। राहत की बात है यह है कि पिछले कुछ समय से तेल की कीमतें घटने लगी हैं। ऐसा लगता है कि तेल की कीमतों में यह गिरावट भारत समेत पूरी दुनिया को मंदी से बाहर लाने में मददगार साबित हो सकती है।

धीमेपन के पैमाने

अर्थव्यवस्था की गति को सामान्यतः माँग की गति से मापा जाता है। एक अर्थव्यवस्था में चार स्रोतों से माँग सृजित होती है। उसमें से पहला स्रोत है उपभोक्ता की माँग। उपभोक्ता चिरस्थायी एवं गैर चिरस्थायी दोनों प्रकार की वस्तुओं की माँग करते हैं और यदि उसका हिसाब लगाया जाए तो पिछली तिमाही में सभी उपभोक्ता वस्तु बनाने वाली कम्पनियों की माँग में वृद्धि हुई है। हिंदुस्तान लीवर की बिक्री में पिछली तिमाही (अप्रैल-जून) में 7 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई, मेरिको में 5 प्रतिशत वृद्धि, डाबर में 1 प्रतिशत वृद्धि, कालगेट में 4 प्रतिशत की वृद्धि और नेस्ले की बिक्री में 11 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। इसी तिमाही में बिग बाजार की बिक्री में 8 प्रतिशत वृद्धि दर्ज हुई है और गृहस्थों को बैंक ऋणों में 16.6 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर्ज हुई है। एयरकंडिशनरों की मांग में 5 प्रतिशत, वाशिंग मशीन में 3 प्रतिशत और रेफ्रिजरेटरों की बिक्री में 11 प्रतिशत वृद्धि दर्ज हुई है। यानि कहा जा सकता है कि चाहे एयर कंडीशनर, वाशिंग मशीन और रेफ्रिजरेटर में धीमेपन के लक्षण नहीं दिखाई देते।

अर्थव्यवस्था में माँग का दूसरा स्रोत होता है, सरकारी खर्च। अप्रैल-जून की तिमाही में पिछली वर्ष की तुलना में सरकारी खर्च में 8.84 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो किसी भी दृष्टि से संतोष जनक नहीं है।

माँग का तीसरा स्रोत होता है, निवेश माँग। पिछले वर्ष की इसी तिमाही की तुलना में इस वर्ष निवेश की ग्रोथ पहले से जरूर कम हुई है, और यह मात्र 4 प्रतिशत रही है।

माँग का चौथा स्रोत होता है निर्यात माँग। देश में निर्यात नहीं बढ़ पा रहे हैं यह सभी स्वीकार करते हैं, लेकिन दुनिया में चल रहे व्यापार युद्ध के चलते इस सम्बन्ध में स्थिति डाँवाडोल रहने वाली है। लेकिन यह भी सच है कि यह स्थिति विश्वभर में है।

आटोमोबाईल में है संकट

हुआ यूँ कि इस बीच आटोमोबाईल क्षेत्र में मांग में भारी कमी दर्ज हुई है। कमर्शियल और निजी दोनों प्रकार के वाहनों की माँग में कमी आयी है। यात्री वाहनों की माँग हालांकि 2018 से ही कम होती जा रही थी, लेकिन अप्रैल-जून तिमाही के हर माह में यह कमी दर्ज हुई। यात्री वाहनों की माँग अप्रैल में 17.1 प्रतिशत, मई में 20.6 प्रतिशत और जून में 17.5 प्रतिशत वार्षिक की दर से घट गई। कमर्शियल वाहनों की माँग जो जनवरी-मार्च की तिमाही में स्थिर थी, अप्रैल में 6 प्रतिशत, मई में 10 प्रतिशत और जून में 12.3 प्रतिशत वार्षिक की दर से घटी। तिपहिया वाहनों की भी स्थिति भी लगभग ऐसी ही थी। दुपहिया वाहनों की माँग अप्रैल, मई, जून में क्रमशः 16.4 प्रतिशत, 6.7 प्रतिशत और 11.7 प्रतिशत वार्षिक की दर से घटी। यह भी सही है कि इस क्षेत्र में माँग घटने, बिक्री न होने के कारण स्टाक बढ़ने से उद्योग बंदी के आसार हो रहे हैं और इस क्षेत्र में रोजगार भी घट रहा है।

क्या मंदी से है आटोमोबाईल संकट?

समझना होगा कि जहाँ निर्यातों में मंदी अंतरराष्ट्रीय कारणों से होती है, आटोमोबाइल की माँग में कमी घरेलु कारणों से है। घरेलु कारण मंदी नहीं, बल्कि बैंकिंग ओर वित्तीयन है। यह बात स्वयं आटोमोबाईल क्षेत्र के लोग कहते हैं। गौरतलब है कि पिछले कुछ समय से भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में एनपीए की समस्याओं से गुजर रहा है। इस समस्या का बैंकों द्वारा ऋणों पर खासा असर पड़ा। दूसरी तरफ एनबीएफसी यानी बैंकिंग वित्तीय कम्पनियाँ भी भारी समस्या से गुजर रही हैं। आईएलएफएस घोटाले के बाद एनबीएफसी क्षेत्र में भारी संकट आ गया है। इन कम्पनियों की ऋण देने की क्षमता तो घटी ही है साथ ही बैंक भी इन्हें ऋण देने से कतरा रहे हैं। गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियाँ जो बड़ी मात्रा में वाहन और घर खरीदने के लिए ऋण दे रही थीं उनकी क्षमता में भारी कमी आई है। एनबीएफसी संकट के चलते लघु उद्योगों के ऋणों पर भी प्रभाव पड़ा है।

अर्थव्यवस्था में रियल इस्टेट ग्रोथ को बढ़ाने का काम कर सकता है। यदि घरों की माँग देखें तो पता चलता है कि बैंकों

द्वारा रियल इस्टेट के लिए पहले से ज्यादा तेजी से ऋण दिए गए। इसका असर यह हुआ कि घर ज्यादा बिके। लेकिन उसके बावजूद बिना बिके घरों की संख्या में कमी नहीं आ रही। लेकिन इस बार के बजट में एर्फोडेबल हॉउसिंग के लिए जो बल दिया गया है, उसका असर जल्दी ही घरों की मांग पर पड़ेगा। अब ज्यादा कीमत वाले घर भी एर्फोडेबल की श्रेणी में आ गए हैं और यही नहीं हॉउसिंग ऋणों की अदायगी में इन्कम टैक्स में छूट को भी खासा बढ़ाया गया है। यह सब उपाय हॉउसिंग की माँग को बढ़ाने वाले हैं।

इसी सप्ताह रिजर्व बैंक द्वारा लिक्विडिटी और माँग को बढ़ाने के संकल्प को भी सकारात्मक रूप से देखा जाना चाहिए। वास्तव में रिजर्व बैंक की अभी तक की सोच से यह अलग है। पहली बार रिजर्व बैंक द्वारा महँगाई को रोकने के प्रयासों से इतर वास्तविक अर्थव्यवस्था की तरफ ध्यान दिखाई दे रहा है। यह एक शुभ संकेत है। रिजर्व बैंक अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने के लिए कई उपाय कर सकता है।

क्या है समाधान

हर बार की तरह कारपोरेट जगत् सरकार पर दबाव बना रहा है कि उसके लिए राहत पैकेज का इंतजाम हो। उनका कहना है कि सरकार समस्याग्रस्त आटो उद्योग को सब्सिडी और करों में छूट दे। लेकिन सरकारी खजाने की सीमाओं के चलते यह सही कदम नहीं होगा। आज जरूरत इस बात है कि चिर स्थाई उपभोक्ता वस्तुओं, घरों और वाहनों की माँग बढ़ाई जाए। इस काम के लिए प्रमुख भूमिका बैंकों की होगी। पिछले काफी समय से बैंकों का क्रेडिट बहुत सुस्त गति बढ़ रहा है। रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों की लिक्विडिटी बढ़ाना इसके लिए जरूरी कदम होगा। हालाँकि पिछले एक साल में रेपो रेट में 1.1 प्रतिशत की कमी की गई है, लेकिन उसमें और अधिक कमी की संभावना है। ब्याज दरों को घटाकर हम सभी प्रकार की माँग को बढ़ा सकते हैं। उधर सरकारी खर्च बढ़ाने के लिए राजस्व बढ़ाना तो जरूरी है ही लेकिन वर्तमान मंदी की स्थिति में यदि सरकार राजकोषीय घाटे को थोड़ा बढ़ा भी दे तो उससे कोई विशेष खतरा नहीं है।

सरकारी सिस्टम हो दुरूस्त

सरकार को भी अपनी मशीनरी को चुस्त करना होगा। जिन लघु और अन्य उद्योगों के बिल सरकार के पास बकाया है, उनका तुरंत भुगतान सिस्टम में लिक्विडिटी बढ़ा सकता है। जीएसटी के बकाया रिफंडों को तेजी से जारी किया जाना चाहिए, ताकि व्यवसायों के पास चालू पूंजी बढ़ सके। गूगल माइक्रोसाफ्ट, उबर समेत कई अन्य विदेशी कम्पनियाँ अपने व्यवसाय को भारत में कम और विदेशों में ज्यादा दिखाकर टैक्स देने से बच रही हैं। इसके लिए सरकार को अपने सिस्टम को दुरूस्त करना होगा ताकि इससे राजस्व बढ़ाकर खर्चों की पूर्ति की जा सके।

गुरु – शिष्य सम्बन्ध

मूल बात यह है कि विद्यार्थी शिक्षक को भगवान मानता है। शिक्षक भी विद्यार्थी को साक्षात् भगवान का रूप मानता है। वह परमात्मा के रूप में मेरे भाग्य से मेरे पास आया है, इसकी सेवा करने का मुझे अवसर मिला है, यह सोचकर शिक्षक अपनी सारी क्षमताओं को उसके लिए समर्पित करता है। वह इसको दैवीय उतरादायित्व मानकर करता है। मेरे बच्चों की समझ में नहीं आया, बार-बार समझाता हैं। इतने प्रेम से समझाता है कि बच्चा कृत-कृत्य हो जाता है। अब्दुल कलाम कहते हैं कि बचपन में विज्ञान के अध्यापक ने कक्षा में बताया चिड़या कैसे उड़ती हैं। हमको समझ नहीं आया, हमने कहा ''सर समझ में नहीं आया'' अच्छा कोई बात नहीं, शाम को समझाऊँगा। शाम को समुद्र किनारे हमको ले गए । चिड़िया दिखाया, देखो कैसे इसके पंख ऊपर नीचे जा रहे हैं। ऊपर नीचे जाता है चिड़िया कैसे उड़ती है डाईग्राम बनाकर हमको समझाया, हमारी समझ में आया''। उस दिन मेरे मन में कल्पना आई क्या मैं हवाई जहाज उड़ा सकता हूँ? क्या मैं भी हवाई जहाज के साथ उड़ सकता हूँ। मेरी कल्पना साकार हुई। मेरी कल्पना को साकार करने में मेरे उस शिक्षक का कितना योगदान है? मैं वर्णन नहीं कर सकता। मैं आज तक उस शिक्षक को भूला नहीं, उसका नाम था श्री सुब्रह्मण्यम अयर।

– अनुभूति

अभिनव प्रयोग

देशभक्ति व ज्ञान का अद्भुत खजाना भारत दर्शन -गलियारा

संदीप जोशी
शान्ति नगर, बी ब्लॉक, रामदेव
कालोनी के पास जालोर,
राजस्थान - 343001
मो- 94145 44197
jaloresjoshi@gmail.com

विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को छात्र जीवन से ही देशभक्ति का पाठ पढ़ने को मिले, वे भारत को जानें, भारत को समझें और भारत के वैभवशाली ज्ञान व विज्ञान पर गर्व करें। इसके साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु तैयारी के लिए वातावरण का निर्माण, विद्यार्थियों को भारत सम्बन्धी सामान्य ज्ञान में वृद्धि के लिए 'भारत दर्शन गलियारा' की रचना हुई । इसे बनाने का काम वर्ष २०१२ में शुरू किया गया और नवाचार का यह नमूना पूरे राजस्थान राज्य में दिखाई देता है।

'राष्ट्रभक्ति सभी सद्गुणों की जननी हैं। बचपन से ही यदि बालक को देशभक्ति के संस्कार दिए जाएँ तो भावी जीवन में आने वाली तमाम चुनौतियों का वह मुकाबला कर पाएगा। देश का भावी नागरिक यदि देशभक्त है तो वह बेईमानी नहीं करेगा, भ्रष्टाचार नहीं करेगा, जातिवाद, भाषावाद, प्रांतवाद, क्षेत्रवाद, नक्सलवाद व आतंकवाद जैसी समस्याओं से न केवल स्वयं को दूर रखेगा वरन् इन चुनौतियों का सामना भी कर सकेगा। इतना ही नहीं, हम देशभक्ति को दैनिक जीवन में भी देख सकेंगे। छात्र यदि देशभक्त है तो वह संविधान का सम्मान करेगा, सार्वजनिक सम्पति को नुकसान नहीं पहुँचाएगा, बिजली-पानी का दुरुपयोग नहीं करेगा। कानून व्यवस्था का पालन करेगा, यातायात के नियमों के अनुरूप वाहन चलाएगा इत्यादि। व्यक्तिगत जीवन से जुड़े ऐसे बहुत सारे सद्गुणों और व्यवहार इस देशभक्ति के भाव से जुड़े हुए हैं।

बचपन में बालक की देखने की, सुनने की, समझने की, अनुकरण करने की, विश्लेषण करने की और स्मरण की क्षमताएँ अद्भुत होती है। इसी समय से यदि बालक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मन से तैयार करना शुरू कर दे तो भावी जीवन में इसका लाभ अवश्य मिलेगा। कुछ ऐसे ही विचारों के साथ मन में भारत दर्शन गलियारे की संकल्पना आई। लगभग दो-ढ़ाई वर्ष के परिश्रम से तथ्य-संग्रह करने के बाद एक अच्छा और प्रभावी भारत दर्शन गलियारा बनकर तैयार हुआ। जिसकी वर्तमान में राजस्थान के शिक्षा जगत् में बहुत चर्चा है। तत्कालीन शिक्षा मंत्री समेत विभिन्न अन्य विभागों के मंत्रीगण, वरिष्ठ अधिकारी एवं जनप्रतिनिधियों ने स्वयं इस गलियारे को देखने जालौर जिले के गोदन गाँव के इस विद्यालय में आए। उन्होंने इस गलियारे की खूब सराहना की एवं इसे उत्कृष्ट नवाचार बताया। पूर्ववर्ती सरकार में शिक्षा मंत्री श्री वासुदेव देवनानी ने विधानसभा के बजट सत्र में घोषणा की राजस्थान के सभी विद्यालयों में ऐसे भारत दर्शन गलियारा बनाए जाएँगे। सोशल मीडिया पर चर्चा और व्यक्तिगत सम्बन्धों के आधार पर राजस्थान के नौ जिलों के २५ विद्यालयों में ऐसे भारत दर्शन गलियारा तैयार हो चुके हैं। आइए भारत दर्शन गलियारे और इसके पीछे के मूल भाव को विस्तार से समझते हैं।

कैसा है यह गलियारा

'आओ बच्चे तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिन्दुस्थान की' फिल्म जागृति का यह गाना एक समय देश की हर जुबान पर था जिसमें एक शिक्षक गीत के माध्यम से ही बच्चों को पूरे भारत का दर्शन करा देता है। हमने भी अपने सरकारी स्कूल में ऐसी ही पूरे भारत की झाँकी सजाई है और नाम दिया है 'भारत दर्शन गलियारा'। यदि आप अपने विश्वगुरु भारत देश की गौरवशाली परम्परा और स्वर्णिम इतिहास से रूबरू होना चाहते हैं, भारत के बारे में अपने सामान्य ज्ञान को बढ़ाना चाहते हैं, भारत के महापुरुषों से शिक्षा ग्रहण करना एवं विश्व के वर्तमान परिदृश्य में भारत की स्थिति के बारे में जानना चाहते हैं, तो राजस्थान के उन सरकारी विद्यालयों में चले आइए जहाँ ये गलियारे विकसित किए गए हैं।

इन गलियारों को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे विद्यालय के बरामदे के दीवारों व खम्बों पर पूरा भारत उतर आया है। दरअसल इस नवाचार में विद्यालय में कक्षों के आगे स्थित बरामदे का नाम भारत दर्शन गलियारा दिया गया है। इनमें घूमते हुए पूरे भारत का दर्शन हो जाता है। गलियारे में चित्रों, मानचित्रों, फ्लक्सेस, भित्तिचित्र, दीवार-लेखन की सहायता से तीन सौ से अधिक तथ्य, एक सौ इक्कीस चित्र, अनेक मानचित्रों का सारगर्भित समावेश किया गया है। विद्यालय का गलियारा ज्ञान का खजाना है। एक प्रकार से एन्साइक्लोपीडिया ऑफ भारत भी कह सकते हैं। इसे तीन भागों में बाँटा गया है :-

ब्राह्मांड की कथा से प्रारम्भ

भारत दर्शन गलियारे का प्रारम्भ ब्राह्मांड से किया गया है। क्रमशः आकाशगंगा, सौरमंडल, नौ ग्रह, पृथ्वी, महाद्वीप, महासागर, एशिया होते हुए भारत का परिचय कराते हुए इंदिरा गाँधी और प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा के मध्य हुए संवाद का उल्लेख किया गया है। (तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी द्वारा यह पूछने पर कि अंतरिक्ष कैसा दिखता है जवाब में राकेश शर्मा ने कहा था- सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा।)

प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञानः-

चिकित्सा शास्त्र, वैदिक गणित, संस्कृत में आयुर्वेद , योग, विमानशास्त्र, नौकायन, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, तक्षशिला, नालंदा के विश्वविद्यालय, बोधायन प्रमेय, पाई का मान और समय के न्यूनतम मान की गणना, शतरंज की खोज, शल्य चिकित्सा, जगदीशचन्द्र बसु के प्रयोगों से सम्बन्धित अनेक गौरवशाली एव ज्ञानवर्द्धक तत्त्वों का समावेश है।

आजादी का गौरव

सन् १७५७ के प्लासी के युद्ध से लेकर १९५० में गणतंत्र बनने तक की विभिन्न घटनाओं का गलियारे में समावेश किया गया है। स्वतंत्रता संग्राम के १८ दुर्लभ चित्रा गलियारे का आकर्षण एवं उपयोगिता बढ़ाने वाला सिद्ध हो रहा है।

वर्तमान गौरवशाली उपलब्धियाँः-

इसमें जयपुर फुट, चेन्नई का शंकर नेत्रालय, आई.आई.एम., आई.आई.टी ,मेडिकल टूरिज्म, सर्वाधिक दूध उत्पादन, भारत में हीरे तराशने का सबसे बड़ा केन्द्र, सुपर कम्प्यूटर, क्राइजेनिक इंजन, सर्वाधिक श्रेष्ठ फीचर फील्म, एशियन पेंट्स के जनक विनोद धाम, सन माइक्रोसिस्टम के जनक विनोद खोसला, सर्वाधिक शाखा वाले बैंक एस.बी.आई., विश्व का सबसे बड़ो रेलवे नेट वर्क, क्रिकेट किंग सचिन तेंदुलकर से लेकर व्यवसायी लक्ष्मीनिवास मित्तल तक की उपलब्धियाँ, महात्मागाँधी, विश्वनाथन आनंद, डॉ.कलाम, डॉ.राधा कृष्णन से लेकर उपग्रह प्रेक्षण क्षमता तक का उल्लेख किया गया है।

खम्भे बने ज्ञान के स्तम्भ

बरामदे के पिलरों को 'ज्ञान का स्तम्भ' नाम दिया गया है। इन ज्ञान के स्तम्भों पर एक तरफ विभिन्न राष्ट्रीय प्रतीकों का सुन्दर चित्र वॉल पेंटिंग के माध्यम से बनाया गया है। वहीं दूसरी ओर इनमें ज्ञान और जानकारियों का खजाना उकेरा गया है। इन पिलरों पर भारत, उसके नाम का अर्थ, जनसंख्या, क्षेत्रफल, साक्षरता, स्त्री-पुरुष अनुपात, स्थल सीमा, जल सीमा, पड़ोसी देश, राज्यों की राजधानियाँ, उनकी भाषाएँ, बोलियाँ, उनके नृत्य, खान-पान, पोषाक तथा वेद-वेदांग, उपनिषद्, पुराण, षड्दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता, महत्त्वपूर्ण फसलें उनके उत्पादक राज्य, विभिन्न खनिज उनकी उपलब्धता वाले स्थान, नदियाँ व उद्गम स्थल-उनकी लम्बाई, ऐतिहासिक इमारतें, राज्यों के विभिन्न शहर, भारत में सबसे ऊँचा, लम्बा, छोटा और अनेक जानकारियों आदि का समावेश है। आते-जाते, चलते-फिरते छात्र इन्हें देखकर और पढ़कर तथा चर्चा करके सामान्य ज्ञान का अभिवर्धन कर रहे हैं।

मानचित्र विशेष आकर्षण के केन्द्र

भारत दर्शन गलियारे का विशेष आकर्षण इसके मानचित्र हैं। भारत के प्राकृतिक एवं राजनैतिक मानचित्रों के अलावा कुछ विशेष प्रकार के मानचित्र भी बनाए गए हैं। इनमें आजादी की लड़ाई के

वीर योद्धाओं, विभिन्न कलाकारों, वैज्ञानिकों एवं समाज-सुधरकों का जन्म स्थान दर्शाया गया है। इसके अलावा चार धाम, चार महाकुम्भ स्थल, ऐतिहासिक युद्ध स्थल, राम के वनवास का पूरा मार्ग भी दर्शाया गया है। इसी क्रम में दीपावली, संक्रान्ति, ईद, होली, वैशाखी, बिहू, क्रिसमस, ओणम समेत विभिन्न पर्व- त्यौहारों, लोक-नृत्य, वन एवं वन्य जीव से सम्बन्धित एक सौ इक्कीस चित्र इस गलियारे के सौन्दर्य को बढ़ा कर इसे मनोहारी बना रहे हैं।

इस भारत दर्शन गलियारे की एक और खास बात यह है कि इसमें जो नारे और प्रेरणादायक वाक्य लिखे गए हैं वे सभी भारत के इतिहास और भूगोल की जानकारी देने वाले हैं तथा अपने देश के प्रति कर्तव्य का बोध जगाते हैं।

सर्वप्रथम इस प्रकार का प्रयास २०१३ में सामतीपुरा (जालोर) विद्यालय में बनाया गया था। पुनः सत्र २०१५-२०१६ में गोदन विद्यालय में पदस्थापन होने पर तत्कालीन जिला कलेक्टर श्री जितेन्द्र कुमार सोनी की प्रेरणा व मार्गदर्शन से गोदन विद्यालय में इस प्रकार का भारत दर्शन गलियारा बनाया गया। सोशल मीडिया पर इस गलियारे की चर्चा होने के बाद विभिन्न शिक्षकों ने इसमें रुचि दिखाई। अब तक राज्य के ९ जिलों के १५ विद्यालयों में ऐसे भारत दर्शन गलियारे का निर्माण हो चुका है। जिससे विद्यालय का वातावरण मनोहारी व आकर्षक हो गया है। इससे विद्यार्थियों के लिए सामान्य ज्ञान के साथ भारत के गौरवमयी संस्कृति व ज्ञान का भान होता है। इसके उपयोग के लिए विद्यालयों के द्वारा विशेष प्रकार की योजना बनाई गई है। प्रतिदिन प्रार्थना सभा में इस गलियारे के आधार पर विद्यार्थियों के मध्य प्रश्नोत्तरी के सत्र होते हैं। ये प्रश्न एक दिन पहले श्यामपट्ट पर लिखे जाते हैं । छात्रों को इसके उत्तर खोज कर याद करने को कहा जाता है। अगले दिन प्रार्थना सभा में उन प्रश्नों के उत्तर पूछे जाते हैं। इस प्रकार अनौपचारिक शिक्षण का यह तरीका छात्रों में उत्सुकता और ज्ञान का संचार कर रहा है।

भारत माँ के लाल

क्या जज्बा था माँ के उन सपूतों का,
क्या रुतबा था माँ के उन लालों का।
क्या मंज़र था उनके सीने में,
जो तोड़ गए जंजीर गुलामी की।
बिन किए परवाह गरजती गोले-गोली,
और खामोश खंजर के सुनामी की।
बढ़ चले ले हृदय में हौंसले को,
थे आतुर बस आजादी के स्वर्णिम
मंजिल तक पहुँच जाने को ।
सब कुछ हँस के झेले,
बन के अलबेले,
पर मंजूर न था उनकी
मातृभूमि से कोई खेले।
शूरवीरों ने लक्ष्य साधा था,
गॉडीवधारी अर्जुन की तरह,
उनके इरादे और संघर्ष शक्ति थे,
कृष्ण राधा की तरह।
इस माटी की कीमत
और कितना बताऊँ,
कहना चाहुँ बहुत कुछ
पर कुछ कह न पाऊँ।
भरे पड़े हैं वीर-वीरांगनाओं के
अनगिनत, अमूल्य, परम पवित्र,
मर्मपूर्ण किसलय पर।
बताओ कैसे सारे किस्से
कुछ क्षणों में कैसे सुनाऊँ?
गाँधी, सुभाष, आजाद, तिलक, पटेल।
भारत माँ थे वीर अनोखे लाल।।
सुनो अपनी तिजोरियों भरने वालो,
माँ भारती पर हुए कुर्बानियों को
शर्मसार करने वालों,
मिल जाओगे खाक में
रावण कंस की तरह।
कुछ सीख सको तो सिख लो
इस पावन बेले पर।।
झकझोर अपने को
न खोद इस माटी को।
बन दीमक न कर खोखला
अपनी माँ के तन को
सीख सम्मान कर
बन के सुन्दर औलाद।
कर माँ के आबरु की
सुरक्षा बनकर फौलाद।।

-रश्मि (पहली किरण)

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान कार्यकारिणी समिति की बैठक का प्रतिवेदन

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की कार्यकारिणी समिति बैठक की 24 जून 2019 से 25 जून 2019 तक गोवर्धन लाल त्रेहन सरस्वती बाल मंदिर, नेहरु नगर, नई दिल्ली में संस्थान के अध्यक्ष मा. दूसी रामकृष्ण राव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

वंदना के बाद महामंत्री द्वारा द्वारा 6 से 8 फरवरी 2019 को कुरुक्षेत्र में सम्पन्न कार्यकारिणी समिति की बैठक की कार्यवाही का विवरण प्रस्तुत किया गया, जिसकी पुष्टि सर्वसम्मति से की गई।

संस्थान के अखिल भारतीय संगठन मंत्री मा. काशीपति जी ने अपने प्रास्ताविक में कहा कि बैठक की कार्यसूची में जो विषय हैं वे अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। 2019 से 2022 तक के कार्यविस्तार व सुदृढ़ीकरण की योजना हमें बनानी है। जिला केन्द्र मजबूतीकरण के योजना की आवश्यकता पर बल देते हुए विगत वर्षों में जिला केन्द्रों पर वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने प्रवास किया है। आगामी तीन वर्षों तक सभी प्रांतों में दो या तीन स्थानों पर जिला केन्द्र के कार्यकर्ताओं को बुलाकर उनकी बैठक करने की योजना बनी है।

इस बैठक में नई शिक्षा नीति पर चर्चा हेतु एक पृथक कार्यकर्ताओं का समूह बनाकर अध्ययन करने की ओर ध्यान आकर्षित किया गया।

गुरूनानक देव जी के 550 वें प्रकाशोत्सव, जलियाँवाला बाग के भीषण हत्याकाण्ड के 100 वर्ष, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने तथा कारगिल संघर्ष में विजय के 20 वर्ष की पूर्ति का यह वर्ष है। यह चारों घटनाएँ इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। आपसे आग्रह है कि सभी विद्यालयों में इनकी स्मृति को जागृत करने के लिए कार्यक्रम करने की योजना बनाएँ । इन कार्यक्रमों को समाजोन्मुखी बनाने का प्रयत्न भी होना चाहिए। हमारी निर्णय प्रक्रिया में समाज के सभी वर्गों की सहभागिता सुनिश्चित करने की आवश्यकता भी है। विद्यालय उपक्रमशील बने इसका भी हमें प्रयत्न करना होगा।

अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री गोविन्द चन्द्र महंत द्वारा देशभर में संचालित किए जा रहे शिशु वाटिकाओं की स्थिति पर चर्चा की गई। उन्होंने इस बात का आग्रह किया कि सभी जिला केन्द्रों पर बारह व्यवस्थाओं से युक्त प्रभावी शिशु वाटिकाएँ संचालित की जाएँ। इसके अतिरिक्त सभी प्रांतों में कुछ नमूनारूपी शिशु वाटिकाएँ (जिसमें शिशु के जन्म से पाँच वर्ष तक के विकास का चिंतन है) भी चलानी अपेक्षित हैं। शेष शिशु वाटिकाएँ प्रयत्नशील शिशु वाटिका कहलाती हैं।

उन्होंने पूर्व छात्र पोर्टल के विषय पर भी चर्चा की। अभी तक एक लाख से अधिक पूर्व छात्रों का पंजीयन हुआ है। इसके अतिरिक्त 600 से अधिक विद्यालय व अंतिम कक्षाओं के 60,000 से अधिक छात्रों का भी पंजीयन हो चुका है। काम आगे बढ़ा तो है परन्तु अभी काफी काम शेष है। हमारे अनेक पूर्व छात्र अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण सेवाओं में कार्य कर रहे हैं हमें उनसे सम्पर्क की व्यवस्थित योजना भी बनानी चाहिए।

कार्यकारिणी के सदस्य श्री रवीन्द्र चमड़िया जी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बताया कि पूर्वछात्र पोर्टल के कार्य की गति बढ़ी है। विद्यार्थी तथा पूर्व छात्र पंजीयन में रुचि ले रहे हैं परन्तु अभी भी अनेक विद्यालयों का पंजीयन होना शेष है। समयबद्ध योजना बनाकर यह कार्य पूर्ण करना चाहिए। पूर्व छात्रों ने विद्या भारती के कार्य में सहयोग देने की इच्छा व्यक्त की है। हमें यह निर्धारित करना है कि उनसे किस प्रकार का सहयोग प्राप्त करना है।

बैठक के **द्वितीय सत्र** में संस्कृति शिक्षा संस्थान की कार्यवाही हेतु समर्पित था। जिसमें अंकेक्षित रिपोर्ट की पुष्टि तथा नवीन अध्यक्ष के निर्वाचन एवम् कार्यकारिणी गठन आदि के कार्य हुए।

तृतीय सत्र के आरम्भ में संस्कृति शिक्षा संस्थान से प्रकाशित तीन नवीन पुस्तकें 1. 'कथा जलियाँवाला बाग की', 2 'आजाद हिन्द सरकार', 3 'नानक नाम जहाज, चढ़ै सो उतरै पार' का विमोचन मा अध्यक्ष महोदय द्वारा संस्थान के सचिव श्री अवनीश भटनागर के निवेदन पर हुआ। सचिव महोदय ने विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के अन्तर्गत संचालित संस्कृति ज्ञान परीक्षा के सम्बन्ध में तथा आगामी संस्कृति महोत्सव दिनांक 10, 11, 12 नवम्बर 2019, कुरुक्षेत्र में आयोजित होने की जानकारी दी।

श्री सुधकर रेड्डी जी के द्वारा प्रचार विभाग की स्थिति पर चर्चा की गई। गत वर्ष देश भर में कार्यशालाएँ आयोजित हुईं। इनके परिणाम स्वरूप सभी प्रांतों में प्रचार विभाग का कार्य बढ़ा है। अनेक प्रांतों में ई-पत्रिका निकाली जा रही हैं। प्रत्येक प्रांत में कार्यकर्ताओं की टोली भी विकसित हो रही है। परन्तु अभी अनेक प्रांतों में संवाददाता नहीं बनाए गए हैं। प्रांत संवाददाताओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करनी होगी। हमारी वेबसाइट अपडेट हो इसका भी ध्यान हमें रखना होगा। 'ऋतम् एप' अधिकाधिक लोग डाउनलोड करें इसका आग्रह भी उन्होंने रखा।

चतुर्थ सत्र में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एन.बी.टी.) के अध्यक्ष मा. गोविन्द प्रसाद शर्मा ने न्यास के उद्देश्य व कार्यों की महत्त्वपूर्ण जानकारी सभा के समक्ष प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि विश्व में सर्वाधिक भाषाओं में पुस्तकों का प्रकाशन करने का कार्य न्यास द्वारा किया जाता है। न्यास का मुख्य उद्देश्य भारत में पुस्तकें पढ़ने की संस्कृति को विकसित करना है। न्यास बालोपयोगी एवं जनसामान्य के लिए प्रेरक व रोचक साहित्य प्रकाशित करता है। विश्व के अनेक पुस्तक मेलों में हम जाते हैं तथा विदेशों के प्रमुख प्रकाशकों को भी हम यहाँ पर बुलाते हैं। पुस्तक के लेखक, अनुवादक, समीक्षक सभी प्रकार के लोग न्यास से जुड़े हैं और इन विधाओं के जानकार नये लोग भी इस कार्य में जुड़ सकते हैं।

इसके पश्चात् श्री शिवकुमार जी (मंत्री, विद्या भारती) ने 'अटल टिकरिंग' लैब के बारे में विषय को प्रस्तुत किया तथा आगे की योजना की जानकारी भी दी। अभी तक लगभग 1200 विद्यालयों में अटल टिंकरिंग लैब की स्वीकृति मिली है। सभी प्रयोगशालाएँ अधिकतम गुणवत्ता के साथ संचालित हो तथा उनका उपयोग अन्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को भी हो यह इस योजना की अपेक्षा है। यदि लैब समाज के अन्य विद्यालयों के लिए उपयोगी सिद्ध हुई तो आगे इस कार्य के लिए एक करोड़ रुपये तक की धन राशि उपलब्ध करवाने की नीति आयोग की योजना भी है। अटल टिंकरिंग लैब में कार्य करने की दृष्टि से अपने आचार्यों की क्षमता भी बढ़ानी चाहिए। इसे ध्यान में रखकर इस वर्ष प्रवास की व कार्यशाला आयोजित करने की योजना भी है।

मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के शताब्दी वर्ष के बारे में भी उन्होंने चर्चा की। शताब्दी वर्ष का उद्घाटन 10 नवम्बर 2019 को नागपुर में होगा तथा समापन 10 नवम्बर 2020 को दिल्ली में होगा। हर सप्ताह कोई न कोई कार्यक्रम आयोजित होगा, इसकी योजना 12 संगठन मिलकर बनाएँगे। हर प्रांत में आर्थिक विषय की एक टोली बनाने की योजना है। उसके लिए हमें प्रांतशः नाम तय करने होंगे। शिक्षा क्षेत्र के लोग भी इस निमित्त सेमिनार आयोजित कर सकते हैं।

मा. यतीन्द्र शर्मा जी (सह संगठन मंत्री, विद्या भारती) ने विद्यालय केन्द्रित कार्यक्रमों पर चर्चा करते हुए इस बात का आग्रह किया कि केन्द्र/क्षेत्र या प्रांतों की ओर से विद्यालयों पर बड़े कार्यक्रम सौपने के स्थान पर हम केवल दिशा दें तथा स्थानीय परिस्थितिनुसार विद्यालय ही कार्यक्रमों का आयोजन करे।

विद्यालय समाजिक चेतना का केन्द्र हो तथा सामाजिक समरसता का वाहक बनें, इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन की प्रेरणा विद्यालयों को दें। विद्यालय उपक्रमशील बनें। विद्यालय जल संरक्षण, विद्युत संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण का केन्द्र बने ऐसा प्रयत्न रहे। विद्यालयों में स्वभाषा, स्वदेशी, स्वसंस्कृति का आग्रह रहे। स्वच्छता, सादगी पर बल रहना चाहिए। हमारे विद्यालय पोलीथीन मुक्त हों, ऐसा प्रयत्न हो।

पंचम सत्र

इस सत्र में बैठक में भाग ले रहे प्रतिभागियों का तीन समूह बनाकर अलग-अलग तीन स्थानों पर अध्यक्ष समूह, मंत्री समूह और संगठन मंत्री समूह के रूप में बैठे तथा अपने-अपने समूह से सम्बन्धित कार्यों पर विचार-विमर्श हुआ।

षष्ठम सत्र

बैठक के द्वितीय दिन वंदना के उपरांत बैठक में प्रथम बारे पधारे कार्यकर्ताओं का परिचय हुआ। उसके पश्चात् स्वर्गीय श्रद्धेय श्री रोशनलाल जी की स्मृति में छपी स्मारिका 'कर्मयोगी' का विमोचन मा दत्तात्रेय होसबाले सह सरकार्यवाह जी के द्वारा किया गया।

इस सत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में प्रतिभागियों ने अपने क्षेत्र में सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी। तथा नई शिक्षा नीति पर अपने विचार भी रखे। सत्र के अंत में मा. अध्यक्ष महोदय ने सत्र का समापन करते हुए कहा कि 1968 से 2005 तक शिक्षा नीति में लगभग समानता ही है। नई शिक्षा नीति में कुछ अच्छे परिवर्तन सुझाए गए हैं। परन्तु यह भी ध्यान में रहना चाहिए कि नीति केवल दिशा तय करती है, उसके क्रियान्वयन हेतु प्रामाणिक प्रयत्नों की आवश्यकता रहती है। राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर पाठ्यक्रम का ढाँचा के निर्माण के समय हमें सक्रिय व सतर्क रहना होगा। इस हेतु योग्य व्यक्ति ढूढ़कर उन्हे काम में लगाना होगा।

नई शिक्षा नीति पर आए विचारों को समेकित कर उन्हें मानव संसाधन मंत्रालय के पोर्टल पर भेजा जाए ऐसा निर्णय लिया

गया।

सप्तम सत्र

मा. काशीपति जी, संगठन मंत्री विद्या भारती के सान्निध्य में इस सत्र में कौशल विकास, आगामी तीन वर्षों में जिला केन्द्र के कार्यविस्तार व चारों आयाम पर चर्चा व आगामी कार्ययोजना पर विचार किया गया।

सत्र के बीच में ही मानव संसाधन विकास मंत्री मा. श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का आगमन हुआ। सर्वप्रथम उनका स्वागत संस्थान के अध्यक्ष श्री डी. रामकृष्णराव जी, समर्थ शिक्षा समिति के महामंत्री श्री कुलवीर शर्मा जी व जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर के प्रधनाचार्य श्रीमती बेला मिश्रा द्वारा श्रीफल, पुष्प गुच्छ एवं शॉल भेंट कर किया गया। तदुपरांत संस्थान के मंत्री मा. शिव कुमार शर्मा जी ने विद्या भारती के पदाधिकारियों का परिचय करवाते हुए विद्या भारती के कार्य का संक्षिप्त वृत्त प्रस्तुत किया। मंत्री महोदय के स्वागत भाषण में मा. अध्यक्ष महोदय ने इस बात से अवगत कराया कि विद्या भारती के तत्वावधान में नई शिक्षा नीति पर देश भर में लगभग छः सौ गोष्ठियाँ आयोजित की गईं। अखिल भारतीय स्तर की द्वि दिवसीय गोष्ठी भोपाल में हुई।

मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने सदन को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं बहुत ही आनन्दित हूँ कि मुझे आज अपने परिवार के बीच आने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैंने सर्वप्रथम सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्य के रूप में कार्य आरम्भ किया। कुछ वर्षों बाद मैं जोशी मठ के सरस्वती शिशु मंदिर में प्रधनाचार्य बना। इसके पश्चात् 'नई चेतना' शोध पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन भी किया। इसी बीच 5-6 बार विधनसभा में निर्वाचित भी हुआ। राज्य सरकारों में मंत्री के दायित्व का निर्वहन किया। सन् 2014 में पहली बार हरिद्वार से सांसद निर्वाचित हुआ। 2019 में पुनः हरिद्वार से सांसद चुना गया हूँ। अब मानव संसाधन विकास मंत्रालय की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली है।

विश्व के 500 उत्कृष्ट संस्थानों में अपने देश के केवल 27 संस्थान ही तथा 200 उत्कृष्ट संस्थानों में केवल दो ही संस्थान गिने जाते हैं। शिक्षा के प्रगति के लिए 1000 करोड़ रुपये की राशि की व्यवस्था करने की योजना है। उच्च शिक्षा में अभी तीन लाख पद रिक्त हैं। युद्ध स्तर पर इनको भरना यह हमारी पहली प्राथमिकता है। जिनके चेहरे पर आभा और ओज रहता है वही दूसरों को प्रेरणा दे सकते हैं। मुस्कुराता व्यक्ति ही दूसरों को मुस्कुराहट दे सकता है। जिज्ञासा व जिजीविषा नहीं होने से मनुष्य का विकास नहीं हो पाता है। सबसे सहयोग मिलेगा तो नई शिक्षा नीति जल्द लागू होगी। विद्या भारती द्वारा दिए गए सुझावों को भी हम सम्मिलित करने का प्रयास करेंगे। किसी भी राज्य पर कोई भाषा थोपी नहीं जाएगी। परन्तु भारतीय भाषाओं को सशक्त और सबल करने हेतु भी कार्य करेंगे। तमिलनाडू में भी भाषा संस्थान को समृद्ध करना है। मेरे मंत्रालय में हिन्दी में कार्य शुरु हुआ है यह आशा के अनुरूप है।

अष्टम सत्र में सर्वप्रथम शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के मंत्री श्री अतुल कोठारी जी द्वारा 17-18 अगस्त 2019 को आयोजित होने वाले ज्ञानोत्सव कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में परमपूजनीय सरसंघचालक जी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वाले समविचारी संगठन कार्यक्रम में आमंत्रित हैं। इस कार्यक्रम में 17 अगस्त को विज्ञान भवन में बृहद् शैक्षिक गोष्ठी आयोजित है। दिनांक 18 अगस्त को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के सम्बन्ध में अभ्यार्थियों को आने वाली कठिनाइयों और उनके समाधन पर वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा होगी।

संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री जैनपाल जैन ने संस्थाओं के लिए आवश्यक वित्तीय अनुशासन के पालनार्थ शासन द्वारा बनाए गए महत्त्वपूर्ण नियमों की जानकारी प्रदान की तथा इन नियमों का व्यवस्थित रूप से पालन हो, इसका आग्रह किया। यह नियम लिखित रूप से प्रांतों को पहले भी भेजे गए हैं तथा पुनः भेजने का आश्वासन दिया।

आगामी कार्यक्रम - संस्थान के महामंत्री श्रीराम आरावकर जी ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी ये निम्नलिखित हैं :-

दिनांकः 8-9-10-11 अगस्त, 2019 विद्वत् परिषद्, प्रशिक्षण एवं शोध की बैठक-भोपाल।

दिनांकः 12 सितम्बर, 2019 क्षेत्रीय मंत्री, संगठन मंत्री, क्षेत्रीय कार्यालय प्रमुख व प्रांत मंत्री, प्रांत संगठन मंत्री, कार्यालय व वित्त संधरण बैठक - उदयपुर (राजस्थान)

दिनांकः 13-14-15 सितम्बर 2019, कार्यकारिणी बैठक -उदयपुर (राजस्थान)

दिनांकः 10-11-12-13 दिसम्बर, 2019, संगठन मंत्री वर्ग -माजुली (असम) माजुलीद्वीप जाने से पहले 07 दिसम्बर, 2019 को गुवाहाटी पहुँचना है।

दिनांकः 14-15 दिसम्बर, 2019 को क्षेत्रीय मंत्री, संगठन मंत्री व केन्द्रीय टोली बैठक स्थान-गुवाहाटी

संस्थान के अध्यक्ष मा. दूसी रामकृष्ण राव द्वारा आगामी समय में प्रकाशित की

जाने वाली Coffy Table Book के सम्बन्ध में जानकारी सदन को प्रदान की। उन्होंने बताया कि 19 मई 2019 को इस सम्बन्ध में वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से चर्चा हुई थी। कार्यकारिणी के सदस्य श्री रवीन्द्र चमाड़िया जी इसका प्रस्ताव रखा था। यह पुस्तक समाज के प्रभावशाली वर्ग के साथ सम्पर्क का माध्यम बनेगी। पुस्तक हिन्दी तथा अँग्रेजी भाषाओं में पृथक-पृथक प्रकाशित की जाएगी। पुस्तक में हमारे कार्य का प्रसार व प्रभाव, कम संसाधनों में भी प्राप्त विशेष उपलब्धियाँ, हमारे विद्यालयों में किए गए विशिष्ट प्रयोग, विज्ञान, खेल जगत आदि के क्षेत्र में हमारे बढ़ते कदम, हमारे इस श्रेष्ठ कार्य में समर्पित कार्यकर्ताओं का संक्षित जीवन परिचय आदि का प्रमुख रूप से उल्लेख रहेगा। इस आकर्षक पुस्तक का प्रकाशन गुरुपूर्णिमा 2020 को करना निर्धारित हुआ है। इस कार्य में सभी प्रांतों मे सहयोग देने हेतु 3-4 कार्यकर्ता अवश्य लगें। केन्द्र स्तर पर भी इस कार्य हेतु एक व्यक्ति को पूर्ण दायित्व दिया जाएगा। सत्र के अंत में माननीय काशीपति जी ने आग्रह किया कि हमारे विद्यालयों में अधिकाधिक ग्रामों, नगर के वार्डों तथा मोहल्लों का प्रतिनिधित्व बढ़े। सेवाबस्ती के बच्चे भी हमारे विद्यालयों में पढ़े। उनके माध्यम से सामाजिक समरसता वृद्धिगत हो। अभिभावकों से संवाद बढ़े, इस हेतु विविध कार्यक्रम किए जाएँ। ग्राम सम्पर्क का जो कार्यक्रम गत वर्ष हुआ था हर वर्ष आयोजित किया जाए।

समापन सत्र

सर्वप्रथम महामंत्री द्वारा मा. अध्यक्ष महोदय, समर्थ शिक्षा समिति दिल्ली, हिन्दू शिक्षा समिति न्यास, दक्षिणी समिति तथा गो.ला.त्रो. सरस्वती बाल मंदिर वरिष्ठ मा. विद्यालय की प्रधनाचार्या सहित सभी आचार्य बंधु-बहिनों, कर्मचारियों व छात्र-छात्राओं का संस्थान के कर्मचारियों तथा सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

मा. दत्तात्रोय जी होसबाले ने समन्वय के सूत्रों का उल्लेख करते हुए ध्यान दिलाया कि कार्य करते समय हमें सभी के साथ समन्वय बिठाना चाहिए। अपने संगठन में समन्वय, शिक्षा समूह के संगठनों में समन्वय, शासन के साथ समन्वय व संघ के साथ समन्वय सभी आवश्यक हैं।

अपने संगठन में अनुभवी कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हुई है। हमें कुछ बातों पर विचार करना चाहिए। हमारा काम काफी बढ़ा है। परन्तु विद्या भारती के नाम की पहचान (ब्राडिंग) नहीं है। आज का युग पहचान का युग है। 'ब्राडिंग' शब्द का प्रयोग व्यवसायिक क्षेत्र में अधिक होता है। परंतु आज इस शब्द का प्रयोग सभी क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है। इस हेतु कुछ हमें कुछ योजना बनानी चाहिए।

हमारे विद्यालयों के द्वार पर, भवन पर विद्या भारती का विद्यालय (Vidya Bharti School) लिखवाया जा सकता है। सभी विद्यार्थियों को प्रवेश के समय विद्या भारती की परिचय के एक पुस्तिका भेंट में दी जा सकती है। हमारे साहित्य पर विद्या भारती अंकित किया जा सकता है। सभी विद्यार्थियों के बीच विद्या भारती का परिचय दिया जा सकता है।

हमारे प्रचार विभाग को भी और सक्रिय करने की आवश्यकता है। वर्ष में एक बार बड़े नगरों में पत्रकार वार्ताएँ आयोजित की जा सकती हैं। विद्यालयों की उपलब्धियाँ तथा यहाँ होने वाले नए-नए प्रयोगों, नवाचारों को प्रोत्साहित करने व प्रचारित करने की आवश्यकता है।

हमारा प्रभाव समाज में बढ़ा है। हमारे से मिलते जुलते नाम रखकर लोग संस्थाएँ चला रहे हैं। वनवासी क्षेत्र में हमारे कारण शिक्षा का स्तर बढ़ा है। शिशु वाटिका का नाम धीरे-धीरे प्रचलन में आ रहा है तथा शिशु वाटिका पद्धति की स्वीकार्यता भी बढ़ रही है।

वन्दना सत्र, वन्देमातरम् का गान हमारा वैशिष्ट्य है। हमारे परीक्षा परिणाम भी उत्तम हैं। हमारे यहाँ पढ़ने वाले छात्र संस्कारित हैं और अवसाद में भी नहीं आते हैं। आचार्यो के जीवन से छात्रों व समाज को प्रेरणा मिलती है। विद्या भारती के विद्यालयों के छात्र छूआछूत को नहीं मानते हैं। सामाजिक समरसता उनके आचरण में अभिव्यक्त होती है। यह सब काफी प्रेरक है। यह आगे और भी बढ़े इसकी आवश्यकता है। यह सभी बातें सभी विद्यालयों में व सभी विद्यार्थियों में हो इसका प्रयास होना चाहिए।

इसके पश्चात् एकल गीत हुआ तथा अंत में मा. अध्यक्ष महोदय द्वारा समापन उद्बोधन में कहा कि मा. शिक्षा मंत्री जी ने जो कहा है उस पर राज्यों में विचार हो। आज ई-लर्निंग का मार्केट बढ़ रहा है। अन्तरराष्ट्रीय कम्पनियाँ इसे चला रही हैं। हमें प्रयास पूर्वक आगे बढ़कर भारत केन्द्रित शिक्षा सम्बन्धित साहित्य व सामग्री का निर्माण करके उसका प्रचार-प्रसार करना चाहिए। हमारे विद्यालय आधुनिक बनें आवश्यक साधन सम्पन्न हों आचार्यों में तकनीकि के उपयोग का स्वभाव विकसित हो। शिक्षक प्रशिक्षण और भी प्रभावी बने, प्रयोगधर्मिता विकसित हो, विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण और भी बढ़े इसका प्रयास हो।

अंत में वन्देमातरम् के सामूहिक गान के साथ बैठक समाप्त हुई।

पर्यावरण संरक्षण व भारतीय दृष्टि

सामयिक चिंतन

श्री रवि कुमार
संगठन मंत्री,
विद्या भारती, हरियाणा

आज पर्यावरण की चर्चा सर्वत्र है। सामान्य व्यक्ति से लेकर देश के बुद्धि जीवी ही नहीं दुनियाँ के बुद्धिजीवी भी इस विषय के बारे में विचार करते हैं। पर्यावरण के विषय में विचार करने की आवश्यकता सभी को अनुभव होने लगी है। बदलती प्रकृति, नित परिवर्तित होता मौसम, सर्दी के समय सर्दी कम होना, गर्मी के समय अधिक गर्मी होना, वर्षाकाल का आगमन आगे-पीछे होना ऐसे अनेक अनुभव सोचने पर मजबूर करते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है। जब इस पर विचार होता है तो उत्तर मिलता है कि समय बदल गया है। यह भी कह सकते हैं कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परन्तु इस बात का विचार यदि किया जाए तो प्रकृति में ऐसा बदल क्यों आया है? प्रकृति सभी का कल्याण करती है। परन्तु प्रकृति पर्यावरण का विनाश कैसे कर सकती है? अभी हाल ही में एक देश में पारा 63 डिग्री पार कर गया और खड़ी गॉड़ियों की बॉडी का लोहा पिघलने लगा। एक चित्र भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। ऐसी और अनेक घटनाएँ है जो यह संकेत देती हैं कि मानव विनाश की ओर जाने वाला है।

कुछ वर्षों पूर्व तक दिसम्बर की अर्धवार्षिक परीक्षा में जब बालक आता था तो स्वेटर पहनता था यानि सर्दी उस समय प्रारम्भ होने लगती थी। दीपावली से पूर्व रामलीला देखने जब व्यक्ति रात्रि में घर से निकलता था तो लोई या शाल ओढ़ कर निकलता था। आज दिसम्बर प्रारम्भ में भी ऐसा कम ही दिखता है। अपने दैनंदिन जीवन में ऐसे अनेक उदाहरण ढूँढे जा सकते हैं।

प्रकृति विनाश की बजाए कल्याण कारक ही रहे ऐसा ध्यान में रखकर भारतीय ऋषि-मनीषियों ने चिंतन किया और इस चिंतन को भारतीय वांगमय में उल्लेखित किया। इस चिंतन से प्रकट बातों को मानव समाज के लिए उपयोग हो। प्रकृति संरक्षण मानव सहज स्वभाव बने ऐसी व्यवस्थाएँ समाज में निर्मित हो। सैंकड़ों-हजारों वर्षों तक भारतीय समाज ने इन व्यवस्थाओं को पालन किया। प्रकृति के संबंध में इन व्यवस्थाओं का पालन जब भंग होने लगा तो प्रकृति में परिवर्तन होने लगा। इस प्रकार के चिंतन को क्या हम भारतीय दृष्टि कह सकते हैं। यह भारतीय दृष्टि है क्या?

अथर्ववेद के भूमि सूक्त में पर्यावरण ीय मूल्यों का विधान है। मनुष्य धरित्री (भूमि) से कहता है, ‘‘मैं आपके उत्खन से कुछ प्राप्त कर रहा हूँ, पर मैं ऐसा कभी न करूँ कि इस प्रक्रिया से आपके हृदय अर्थात् मर्मस्थल पर चोट पहुँचे।’’ अर्थात् उत्खनन करते समय दोहन करना न कि शोषण करना।

दुनिया में जहाँ-जहाँ अधिक उत्खनन हुआ वहाँ-वहाँ प्रकृति में परिवर्तन हुआ है, कहीं जल संकट तो कहीं अत्याधिक बाढ़ की स्थिति बनी है।

ऋग्वेद में प्रार्थना की गई है कि वृक्ष, जल, आकाश एवं पर्यावरण की श्रेणियाँ तथा वनस्पतियों से भरे पूरे वन हमारा

संरक्षण करें। ऋग्वेद में उल्लेखित है 'वनं आस्थाप्यध्वम्' अर्थात् वन में वनस्पतियाँ उगाओ, वृक्षारोपण करो। वानस्पतिक संपदा के भंडार में वृद्धि करो उसे घटाओं नहीं। यजुर्वेद के एक सूक्त में कहा गया है कि हे वनस्पति! इस धरदार कुल्हाड़े से अपने महान् सौभाग्य के लिए मैंने तुम्हें काटा अवश्य है, परन्तु तुम्हारा उपयोग हम सहस्त्र अंकुर होते हुए करेंगे।

जीवनयापन के लिए यदि लकड़ी की आवश्यकता है तो वृक्ष न काटकर उसकी शाखाओं का उपयोग करना, उसमें से भी ऊपर की शाखाएँ नहीं केवल नीचे की शाखाएँ ताकि हमारे प्रयोग लायक लकड़ी मिल भी मिल जाए और पेड़ का अस्तित्व भी बना रहे और आगे बढ़ता भी रहे।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में श्रीकृष्ण जी ने कहा है कि 'धर्मविरूद्धो भूतेषु कामोस्मिभरतर्षभः' अर्थात् जहाँ भोग धर्म की अवमानना नहीं करता वह दिव्य है। प्रकृति का भोग भी करना है तो धर्म का पालन करते हुए करना चाहिए यानि प्राणिमात्र के कल्याण का भाव सदा बना रहे।

इशोपनिषद् में कहा गया है ''ईशावस्यमिदं सर्व यत्किंचत् जगत्यां जगत्। तेन त्येक्तेनभुंजीथा मा गृधःकस्यस्विनं । अर्थात् 'समस्त सृष्टि राम में है उसका उपयोग केवल त्याग की भावना से करो। दूसरों के भाग पर डाका डालने का प्रयास न करो। अथर्ववेद के भूमिसूक्त में कहा गया है, ''माताभूमिःपुत्रोऽहं पृथिव्याः।'' अर्थात् यह भूमि हमारी माता है और हम सब उसके पुत्र हैं। प्रत्येक प्राणी, वनस्पति एवं प्रत्येक चैतन्ययुक्त वस्तु पर प्रकृति का बराबर स्नेह है। शायद यही कारण है कि वनों में निवास करने वाले वनवासी एवं ग्रामों में निवास करने वाले ग्रामवासी का पर्यावरण के प्रति आदर व स्नेह प्रारम्भ से रहा है।

हमारे ऋषि जानते थे कि पृथ्वी का आधर जल और जंगल है। पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल को महत्त्वपूर्ण मानते हुए ऋषियों ने कहा है- ''वृक्षाद्वर्षति पर्जन्यः पर्जन्यादन्नसम्भवः अर्थात् वृक्ष जल है, जल अन्न है और अन्न जीवन है। अथर्ववेद के भूमि सूक्त में कहा गया है 'अरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु' अर्थात् तेरे जंगल हमारे लिए सुखदाई हों। भारतीय जीवन के आश्रम चतुष्ट्य में ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास का सीधा सम्बन्ध वनों से ही है।

छान्दोग्योपनिषद् में उद्दालक ऋषि अपने पुत्र श्वेतकेतु से आत्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वृक्ष जीवात्मा से ओतप्रोत होते हैं और मनुष्यों की भाँति सुख-दुःख की अनुभूति करते हैं। छान्दोग्योपनिषद् में ही सत्यकाम की कथा का उदाहरण है। कुछ समय सत्यकाम ब्रह्मचारी को शिक्षा देने के उपरांत गुरु उसे 400 गायों के साथ वन में भेज देते हैं और कहते हैं कि जब गायों की संख्या एक हजार हो जाएँ तभी वह वापस आए। वापसी में सत्यकाम को अग्नि के अतिरिक्त एक वृषभ तथा दो पक्षियों हँस व मृदु से ब्रह्मज्ञान का उपदेश मिलता है। गुरु सत्यकाम को वन गमन करने के आदेश देने का उद्देश्य भी यही समझाना था कि सच्ची शिक्षा सदैव प्रकृति के सम्पर्क में रहने से ही प्राप्त होती है।

महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भवम् में हिमालय की महानता और देवत्व को बताते हुए कहा ''अस्तुस्तरस्यां

दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।' हिमालय देवतात्मा है और पर्वतों का राजा है प्रकृति के संरक्षण में पहाड़ का भी महत्त्व है। अतः पहाड़ का भी ध्यान रखा है।

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण का कथन है 'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्' अर्थात् वृक्षों में मैं पीपल हूँ।' परिमाण और आयुमर्यादा दोनों की दृष्टि से अश्वत्थ अर्थात् पीपल को सर्वव्यापक और नित्य माना जाता है। पर्यावरण को संतुलित रखने में वृक्षों की भूमिका को रेखांकित करने का उदाहरण है। वृक्षों में जीवन है। महाभारत के शांतिपर्व के 184 वें अध्याय में महर्षि भृगु और महर्षि भारद्वाज का संवाद है। इस संवाद में स्पष्ट वर्णन है कि वृक्ष पंचभौतिक अवचेतन हैं। हमारी संस्कृति में नीम को पूर्ण चिकित्सक, आँवले को पूर्ण भेषज, पीपल को शुद्ध वायुदाता, पाकड़ और वट के युग्म वृक्षों को जल संग्राहक एवं वट को पूर्ण घर माना गया है।

केवल वृक्ष लगाने से ही पर्यावरण संरक्षण होने है क्या? जल, जंगल और जमीन इन तीनों का भी ध्यान रखना होगा। जो चर्चा सर्वत्र चली है, उस चर्चा में भारतीय दृष्टि को सम्मिलित करने की महती आवश्यकता है, परन्तु केवल चर्चा ही नहीं अपितु प्रत्यक्ष क्रियान्वयन होना चाहिए। वास्तव में भारतीय दर्शन विश्व के स्वास्थ्य का ब्लूप्रिंट है।

शिक्षा : स्वरूप, सरोकार और राष्ट्रीय अकांक्षा

पुस्तक वीथि

श्री अतुल कोठारी
सचिव- शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

पुस्तक प्राप्ति स्थान-
प्रभात प्रकाशन
मूल्य- 200/- रु.

शिक्षा किसी भी समाज की मूलभूत आवश्यकता है। व्यक्ति और राष्ट्र के चरित्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका अप्रतिम है। सम्पूर्ण देश में निरंतर प्रवास, स्थिति-परिस्थितियों का अध्ययन, विवेचन, गंभीर मंथन और उसके आधार पर अपना सुविचारित मत-यह अतुल भाई कोठारी का स्वभाव है। शिक्षा जगत की सबलताओं, समस्याओं, दुर्बलताओं से वे पूर्णतः परिचित हैं। शिक्षा बचाओ आन्दोलन से लम्बे समय से संबद्ध कोठारी जी ने पूरे देश में अनेक कार्यक्रम किए, व्याख्यान दिए। इस विस्तृत अनुभव को उन्होंने अनेक पुस्तकों के माध्यम से व्यक्त किया है।

'शिक्षा का विकल्प एवं आयाम' उनकी नवीनतम पुस्तक है। अतुल कोठारी शिक्षा को समग्रता में देखते हैं खंड-खंड नहीं। उनकी दृष्टि में छात्र, शिक्षा संस्थान, भाषा, देशज, परिस्थितियों, पर्यावरण आदि सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

शिक्षा पहले व्यवसाय न होकर सेवा का कार्य था। अतुल कोठारी के अनुसार 'शिक्षा से जीवन जीने के दृष्टिकोण एवं जीवन निर्वाह हेतु आवश्यक क्षमता का विकास होना चाहिए।' शिक्षा में राष्ट्रीय आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं का समन्वय हो, भारतीय परम्पराओं और सरोकारों को स्थान मिले, विज्ञान और अध्यात्म एक दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हों एवं पाठ्यक्रम जड़ न होकर विकसनशील बने।

भाषा का माध्यम शिक्षा के मूल प्रश्नों में से एक है। यह माना जाता है कि मातृभाषा में शिक्षा सर्वाधिक उपयुक्त है। कोठारी जी इससे सहमत हैं। भारतीय संदर्भ में अँग्रेजी का वर्चस्व सर्वविदित है लेकिन अँग्रेजी शिक्षा अँग्रेजी हितों की पोषक है, वह भला हमारे हितों की रक्षा कैसे करेगी। भाषा संदर्भों मे ही वे विश्व के देशों का उदाहरण देते हैं, जिन्होंने अँग्रेजी के बिना भी आश्चर्यजनक प्रगति की है और विकसित देशों की अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं।

अखिल भारतीय सेवाओं, व्यावसायिक शिक्षा एवं न्याय व्यवस्था में भारतीय भाषाओं की स्थिति से हम सब परिचित हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा वैश्विक संदर्भों जुड़ने के साथ ही भारतीय बनी रहे। पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त कर ही आधुनिक व्यवस्था आई। उच्च शिक्षा में वित्तहीन संस्थानों की शुरूआत से लेकर निजी विश्वविद्यालयों की बाढ़ तक। ये केवल व्यावसायिक शिक्षा को ही बढ़ावा देते हैं जिनकी मार्किट वैल्यू है। भाषा संस्कृति एवं मानविकी के लिए इनके यहाँ कोई जगह नहीं है। आधुनिक शिक्षा के केन्द्र में है भौतिकवाद, इससे छात्र भारतीय मूल्यों से निरंतर दूर होते जा रहे हैं, केवल धनार्जन ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। आवश्यकता है उसे अपनी संस्कृति से परिचित कराकर उच्च मानव-मूल्यों से युक्त करने की जिससे एक पूर्ण व्यक्तित्व

का निर्माण हो सके। शिक्षा अपने आप में स्वायत्त है अन्य विषयों से उसका संबंध तो है किन्तु वह अधीन नहीं है। स्वायत्तता ऊपर से नीचे तक हो और वह छात्रों को भी सुलभ हो। इस संदर्भ में काका साहेब कालेलकर, कोठारी, एवं राधाकृष्णन आयोग तक की अनुशंसाओं का उल्लेख किया गया है।

अतुल कोठारी का एक सुझाव उल्लेखनीय है भारतीय शिक्षा सेवा का गठन। आज एक ओर उच्च शिक्षा संस्थानों की बाढ़ सी है तो दूसरी ओर बेराजगारों की फौज। यहाँ शिक्षा को कौशल विकास से जोड़ने और उसके व्यावहारिक पक्ष को भी समझने की आवश्यकता समय की माँग है। विडम्बना यह है कि अपनी परम्पराओं से कटा और सर्वथा अनिभिज्ञ है आज का युवा वर्ग। इतिहास और समाज विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों से अनेक तथ्यात्मक भूलों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करते हुए अतुल जी चाहते हैं कि इन घटनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाए न कि 'सलेक्टिव तरीके से।

चालिस अध्यायों में विस्तृत यह पुस्तक अपने में ऐसे विभिन्न विषयों को समेटे है, जो आज के भारत के लिए, आज के भारतीय युवा के लिए प्रथ प्रदर्शक का काम करेंगे। इसमें शिक्षा दर्शन है, शिक्षा का उद्देश्य है, शिक्षा की सतत् प्रवाहमान परम्परा है। इस इतिहास प्रवाह में आने वाले अनेक उतार चढ़ाव हैं। विभिन्न स्तरीय शिक्षा का समेकित पाठ्यक्रम है। सामाजिक समरसता है, महिलाओं, युवाओं के मन को थाहने की इच्छा है, छात्र आन्दोलन और भारतीय चिंतकों की चिंतन दिशा की ओर स्पष्ट संकेत है। आज की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भी विस्तृत पड़ताल लेखक ने की है। शिक्षा की गुणवत्ता के साथ पाठ्यचर्या, भाषा नीति, प्रबंधन एवं अन्य विषय जैसे योग, शारीरिक शिक्षा व समाज सेवा को भी जोड़ा जाए। शोध प्रक्रिया, मूल्यांकन में सुधार हो, वस्तुपरकता हो ऐसा उनका स्पष्ट मत है। उनका सुझाव है कि 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य किया जाए साथ ही इसमें समाज की भी भागीदारी रहे।'

अतुल कोठारी जी ने अध्यात्म को विवेकानंद के सरल शब्दों में इस तरह बताया है ''निस्वार्थ भाव से कोई भी कार्य करना यही अध्यात्म है'' यह संस्कार सेवाभाव से जुड़कर विद्यार्थियों को संस्कारित करने में उपयोगी है।

शिक्षा के समग्र आयामों को समेटती और सशक्त, सार्थक विकल्प सुझाती एक संग्रहणीय एवं पठनीय पुस्तक है जिसमें अतुल कोठारी के वर्षों का अनुभव एवं चिंतन समाहित है।

पुस्तक समीक्षक - **अरुण मिश्र**
(भाषा साहित्य, संस्कृति एवं दृश्य श्रव्य माध्यमों के अध्ययन मे विशेष रुचि, सम्प्रति- अध्यापन)

बेटी अभिशाप नहीं, वरदान है

''जहाँ बिटिया होने पर जमीन सच में फलती-फूलती है,'' जी हाँ यह है एक आश्चर्य जनक सत्य। बिहार से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग ३१ पर करीब चार किलोमीटर आगे बढ़ने पर एक आदर्श ग्राम है धरहरा। बिहार के भागलपुर से करीब २५ कि०मी० दूर पर बिटिया के जन्म पर कम से कम दस पेड़ लगाने की प्रथा है। पहले बेटियों के जन्म के समय ही उन्हें मार दिया जाता था, एक कारण था दहेज का खर्च और आर्थिक तंगी। ऐसी स्थिति से निबटने के लिए उनके गाँव के पूर्वजों ने यह रास्ता निकाला कि बेटी के जन्म पर उसका स्वागत किया जायेगा और उसके लालन-पालन, शिक्षा व दहेज का खर्च जुटाने के लिए उसके जन्म के समय फलदार पेड़ लगाये जायेंगे। यह वृक्ष लीची व आम के होते हैं। पहली बार यह परम्परा अखबार के माध्यम से बाहर की दुनिया में गई। वहाँ आज बेटियाँ बोझ नहीं है, अपितु सहारा हैं। अब धरहरा गाँव के लिए बेटियाँ एक धरोहर हैं। इस परम्परा के चलने से पर्यावरण जागरुकता के साथ-साथ भ्रूण हत्या जैसे मामले सुलझ गये हैं। फलदार वृक्ष जीवनयापन का साधन बन गए हैं। वहाँ की कन्याओं को 'धरहरा की वन पुत्री' से सम्बोधित किया जाता है। यह एक प्रेरणादायी प्रसंग है, आज उन सभी 'छोटे-बड़े' परिवारों के लिए उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। आवश्यकता है पर्यावरण के बचाने की उसके लिए किए गए प्रयोगों को किसी भी माध्यम से समाज तक पहुँचाने की।

''फिर बेटी खलेगी नहीं खिलेगी।
तनाव मुक्त परिवार, स्वस्थ समाज का द्योतक है।''

अंजलि भटनागर, पूर्व प्रधनाचार्य
सरस्वती बाल मंदिर जनकपुरी,
नई दिल्ली

सर्वस्वदानी भारतरत्न नाना जी देशमुख

जनतंत्र के मुखर सेनानी, राजनीतिक पद व सत्ता-सुख को छोड़कर दीनदुखी, अभावग्रस्त जनसामान्य की सेवा ही जिनका जीवन ध्येय रहा । राजनीति जिनके लिए सेवा क्षेत्र की कर्मभूमि बनी। शिक्षा और संस्कार समाज के सामान्य जन तक पहुँचे, भारतीयता व राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत सजग नागरिकों का गुण विद्यार्थियों में पुष्पित और विकसित हो तथा सेवाभावी जीवन बनें; ऐसे नागरिकों के निर्माण का ध्येय जिनके जीवन का उद्देश्य था। ऐसी सोच नानी जी रखते थे। मार्गदर्शक पंडित दीनदयाल उपाध्याय, श्रद्धेय भाऊराव देवरस और आजादी के बाद भारत में भारतीय शिक्षा को पुनर्स्थापित करने के प्रति कर्मठ कर्मयोगी श्री कृष्णचंद गाँधी के साथ मिलकर 'सरस्वती शिशु मंदिर' नामक शिक्षा का मंदिर स्थापित करने वाले आधुनिक ऋषि चंडिकादास अमृतराव देशमुख जिन्हें प्रेम से नानाजी देशमुख पुकारा जाता है। उनके जीवन के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी देना वर्तमान समय की आवश्यकता है।

11 अक्टूबर सन् 1916 को नाना जी का जन्म महाराष्ट्र के हिंगोली जिले के कडोली नामक छोटा कस्बा में हुआ। उनके माता-पिता उनको छोटी आयु में ही छोड़कर स्वर्ग सिधार गए। उनका लालन-पालन मामा के यहाँ हुआ। उनके पास शुल्क देने और पुस्तकें क्रय करने के तक पैसे नहीं थे किन्तु उनके अंदर शिक्षा और ज्ञानप्राप्ति की उत्कट इच्छा थी। उन्होंने इस कार्य के लिए सब्जी बेचकर पैसे जुटाए और पिलानी के बिरला इन्स्टीट्यूट में अपनी प्रखर प्रतिभा के बल पर उच्च शिक्षा प्राप्त की।

सन् 1930 के दशक में वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए तथा सदा के लिए राष्ट्र कार्य में समर्पित हो गए। भले

ही उनका जन्म महाराष्ट्र में हुआ था परन्तु उनका कार्यक्षेत्र राजस्थान और उत्तर प्रदेश ही रहा। समाज कार्य के प्रति उनकी असीम श्रद्धा देखकर ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर ने उन्हें गोरखपुर में संघ कार्य के लिए प्रचारक बनाकर भेजा। कार्य के प्रति ध्येय निष्ठा और समर्पण देखकर ही उन्हें यह बड़ा दायित्व सौंपा गया। वे उत्तर प्रदेश के प्रांत प्रचारक बने।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आदिसरसंघचालक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार से उनके पारिवारिक सम्बन्ध थे। उन्होंने सम्पर्क में आते ही प्रतिभा को पहचान कर नाना जी को संघ से जोड़ा।

1940 ई. में डॉ. हेडगेवार जी के निधन के बाद नानाजी ने अनेक युवकों को महाराष्ट्र में संघ से जोड़ा। जब आगरा आए तो पंडित दीनदयाल उपाध्याय से मिले, बाद में वे गोरखपुर गए और लोगों को संघ की विचारधारा के बारे में बताया। यह कार्य अत्यंत कठिन था, उस समय संघ कार्य के दैनिक खर्च के लिए पैसे भी नहीं होते थे। परन्तु संघ हेतु उनकी मेहनत रंग लाई व तीन साल के अंदर गोरखपुर के आसपास संघ की ढाई सौ शाखाएँ लगने लगी। नानाजी का प्रयास जन सामन्य की शिक्षा और संस्कार सम्वृद्धि की ओर अधिक था अतएव उन्होंने सन् 1952 में गोरखपुर में सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना की।

1947 में राष्ट्रवादी विचारधारा के चिंतकों ने 'राष्ट्रधर्म' मासिक और 'पांचजन्य' सप्ताहिक तथा 'स्वदेश' दैनिक हिन्दी समाचार पत्र प्रकाशित करने व देश प्रेम सम्बन्धी विचार को जनसामान्य तक पहुँचने का निश्चय किया। अटल बिहारी बाजपेयी को संपादन, दीनदयाल उपाध्याय को मागदर्शन और नानाजी को प्रबंध निदेशक की जिम्मेदारी दी गई। 1948 में महात्मा गाँधी के जघन्य हत्या के बाद संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। जिससे इन प्रकाशनों के कार्य पर व्यापक असर पड़ा फिर भी कठिन परिश्रम करते हुए भूमिगत होकर नानाजी ने इस कार्य को जारी रखा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रतिबंध हटते ही एक राजनैतिक संगठन की आवश्यकता दिखाई दी, इस हेतु डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ की स्थापना की गई। श्री गुरु जी नानाजी को उत्तर प्रदेश में भारतीय जनसंघ के महासचिव का प्रभार लेने को कहा। नानाजी की संघ की पृष्ठभूमि होने के कारण जनसंघ का जमीनी कार्य उत्तर प्रदेश में स्थापित हुआ। 1957 तक उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में पार्टी ने अपनी इकाइयाँ बना ली। इसके लिए नानाजी उत्तर प्रदेश के जिलों का सघन प्रवास किया। परिणाम स्वरूप जल्दी ही भारतीय जनसंघ उत्तरप्रदेश की प्रमुख राजनीतिक शक्ति बन गई।

नानाजी के संगठनात्मक सुझबूझ के कार्यों से ही भारतीय जनसंघ महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति बना। डॉ. राममनोहर लोहिया से उनके अच्छे सम्बन्ध होने के कारण ही भारतीय राजनीति की दशा और दिशा दोनों बदल गयी।

एक बार नानाजी ने डॉ. लोहिया को जनसंघ के कार्यकर्ता सम्मेलन में बुलाया, जहाँ लोहिया की मुलाकात पंडित दीनदयाल उपाध्याय से हुई और दोनों का आपस में लगाव हुआ। नानाजी के डॉ. राममनोहर लोहिया और चौधरी चरण सिंह के साथ अच्छे सम्बन्ध होने के कारण गठबंधन चलाने में अहम भूमिका निभाई उत्तर प्रदेश में पहली गैर काँग्रेसी सरकार का गठन हुआ। नानाजी बिनोबा भावे के भूदान आन्दोलन में भी सक्रिय सहयोग दिया। दो महिने तक वे विनोबा जी के साथ ही रहे। विनोबा जी उनके कार्य से अत्याधिक प्रभावित हुए। सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन में गाँधी मैदान, पटना के एक सभा मंच पर जब पुलिस ने जयप्रकाश नारायण पर लाठियाँ चलाईं तब नानाजी ने उन लाठियों के चोट को अपने हाथ पर सहकर उन्हें सुरक्षित मंच से बचा ले गए। उनके एक हाथ की कलाई टूट गई। जयप्रकाश नारायण और मोरारजी देसाई ने नानाजी के इस साहसिक कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर सम्पूर्ण क्रान्ति पूरे देश में फैला। देश में आपात्काल तत्कालीन् प्रधनमंत्री इन्दिरा गाँधी के द्वारा लगाया गया। सभी के मानवाधिकारों को निरस्त किया, जिसके विरोध स्वरूप देशभर में जनसभाओं और जेल भरो आन्दोलन आरम्भ हुए। आपातूकाल के हटते ही देश में लोक सभा चुनाव कराने की घोषणा हुई। जनता पार्टी का गठन कई विचारधरा के लोगों को मिलाकर किया गया जिसके संस्थापक में नानाजी देशमुख प्रमुख थे। बलरामुपर लोकसभा क्षेत्र से नानाजी देशमुख सांसद निर्वाचित हुए। जनता पार्टी सत्ता में आई। उन्हें मोरारजी देसाई अपने मंत्रिमंडल में उद्योग मंत्री के नाते शामिल किए। लेकिन नानाजी ने मंत्रिमंडल में शामिल होने से साफ इंकार कर दिया। उनका सुझाव था कि साठ साल से अधिक आयु वाले व्यक्ति को संसदीय राजनीति से दूर रहकर संगठन और समाज सेवा के कार्य करने चाहिए।

पंडित दीनदयाल जी की जघन्य हत्या से उनको अत्यंत पीड़ा हुई। उनके लिए यह क्षति बड़ी थी। उनके स्मृति में उन्होंने नई दिल्ली में अकेले ही दीनदयाल शोध संस्थान बनाने की बीड़ा उठाया और कठिन परिश्रम से सन् 1972 में दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' से प्रेरणा लेकर समाज के नीचे तबके के लोगों को समाज में सम्मान दिलाने हेतु व गरीबी निरोधक तथा न्यूनतम आवश्यकता पूर्ति का कार्यक्रम चलाया जिसके अन्तर्गत सिंचाई के लिए बाँस बोरिंग, कुटीर उद्योग, ग्रामीण स्वास्थ्य और ग्रामीण शिक्षा के लिए अनेक क्षेत्रों में प्रकल्पों का संचालन किया। नानाजी ने 1980 में साठ साल की उम्र में सक्रिय राजनीति से संन्यास लेकर आदर्श स्थापित करने हेतु समाजसेवा के कार्य में लग गए। उन्होंने अपना जीवन सामाजिक और रचनात्मक कार्यों में लगा दिया। दीनदयाल शोध संस्थान का अध्यक्ष पद सम्भालते हुए संस्थान के समाज सेवा के कार्य को और अधिक बढ़ाया तथा उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के पिछड़े जिलों खासकर गोंडा और बीड़ में प्रकल्प चलाए। उनके द्वारा चलाए गए प्रकल्प का मुख्य उद्देश्य था 'हर हाथ को काम और हर खेत को पानी'। कार्य को पहचान दिलाने के लिए 'मंथन' नाम से त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी शुरू किया।

उन्होंने उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के कुख्यात बीहड़ चंबलघाटी क्षेत्र के चित्रकूट नामक स्थान पर सन् 1989 में पहली बार आए और अंतिम रूप से वही बस गए। उन्होंने भगवान श्रीराम की कर्मभूमि चित्रकूट की दुर्दशा देखी और अपने जीवनकाल में ही इस दुर्दशा को बदलने का संकल्प लिया। उन्होंने ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह भारत का पहला ग्रामीण विश्वविद्यालय बना। नानाजी इसके पहले कुलाधिपति बने। चित्रकूट परियोजना पर तत्कालीन् राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आजाद ने कहा कि ''चित्रकूट में मैंने नानाजी देशमुख और उनके साथियों से मुलाकात की। दीनदयाल शोध संस्थान ग्रामीण विकास के प्रारूप को लागू करने वाला अनुपम संस्थान है। यह प्रारूप भारत के लिए सर्वथा उपयुक्त है। विकास कार्यों से विवाद मुक्त समाज की स्थापना में मदद करता है। कलाम जी के अनुसार विकास के इस अनुपम प्रारूप को सामाजिक संगठनों, न्यायिक संगठनों और सरकार के माध्यम से देश के विभिन्न भागों में बढ़ाया जा सकता है।'' शोषितो व वंचितों के उत्थान के लिए समर्पित नानाजी जी की प्रशंसा करते हुए कलाम ने कहा कि ''नानाजी जो चित्रकूट में कर रहे हैं उनसे देखकर अन्य लोगों की आँखे खुलनी चाहिए।''

1999 में अटल बिहारी बाजपेयी के एनडीए शासन काल में उन्हें राज्यसभा में मनोनित सदस्य बनाया गया। इसी साल पद्म विभूषण की उपाधि भारत सरकार से मिली। सन् 2005 में तत्कालीन् उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत ने उन्हें 'ज्ञानेश्वर पुरस्कार' से सम्मानित किया। नानाजी देशमुख ने 95 साल की आयु में चित्रकूट स्थित भारत के पहले ग्रामीण विश्व विद्यालय में रहते हुए अन्तिम साँस ली। वे अपने शरीर को सन् 1997 में ही मेडिकल शोध हेतु देहदान करने का संकल्प कर लिए थे। उनकी इच्छानुसार ही सन् 2010 में स्वर्गारोहण के पश्चात् ससम्मान उनके मृतदेह को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान को अर्पित कर दिया गया। उनके जन्मशती वर्ष के समापन सत्र 2017 के उपलक्ष में भारत सरकार द्वारा सन् 2018 में 'भारत रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया। जिसे अगस्त 2019 मे भारत सरकार ने प्रदान किया।

– कौशलेश कुमार उपाध्याय

The Reasearch of MOON is -‘Chandrayaan-2’

S.K. VATTA

M.Sc. (Botany), M.Ed.

UGC-CSIR qualified, GATE qualified,

Teaching experience of approx.29 years

as Lecturer in Colleges, Delhi University

& Many Schools,

Presently: - Vice-Principal

GEETA Sr.Sec. School No.-2 Sultanpuri, Delhi-110086

Written many articles on Astrology, Biology & social issues research & current topics in Pradeepika & others.

Served as Sangathan Mantri & Mahamantri for

Bhartiya Shikshan Mandal, Delhi Prant.

Now Sah-Pramukh Shodh Parishad, Delhi Prant.

It was the Cold War between the Soviet Union and the United States of America that trigered or inspired “space race” and “Moon race” with a specific focus on the Moon.Space historyof important firsts, such as the first photographs of the unseen, unexplored far side of the Moon in 1959 by the Soviet Union, and also with the landing of the first humans on the Moon in 1969, widely seen around the world as one of the pivotal events of the 20th century in specific and indeed of human history in general.

The crew of Apollo 8, on December 24, 1968, Frank Borman, James Lovell and William Anders, became the first human beings to enter lunar orbit and see the far side of the Moon. Humans first landed on the Moon on July 20, 1969. Neil Armstrong was the first human to walk on the lunar surface, He was the commander of the U.S. mission Apollo 11. The first robot lunar rover to land on the Moon was the Soviet vessel Lunokhod 1 on November 17, 1970, as part of the Lunokhod programme. Till date, the last human to stand on the Moon was Eugene Cernan, who as part of the Apollo 17 mission, walked on the Moon in December 1972.

There were 65 Moon landings between the mid-1960s to the mid-1970s (with 10 in 1971 alone), but after Luna 24 in 1976 they suddenly stopped. The Soviet Union started focusing on Venus, space stations and the U.S. on Mars and beyond, and on the Skylab and Space Shuttle programs.

Japan In 1990, visited the Moon with the Hiten spacecraft, becoming the third country to place an object in orbit around the Moon. The spacecraft released the Hagoromo-probe into lunar orbit, but the transmitter failed, thereby preventing further scientific use of the spacecraft. In September 2007, Japan launched the SELENE spacecraft, with the objectives “to obtain scientific data of the lunar origin and evolution and to develop the technology for the future lunar exploration”.

The European Space Agency launched a small, low-cost lunar orbital probe called SMART 1 on September 27, 2003. Its primary goal was to take three-dimensional X-ray and infrared imagery of the lunar surface. It was intentionally crashed into the lunar surface in order to study the impact trail.

China has begun the Chinese Lunar Exploration Program for exploring the Moon and is investigating the prospect of lunar mining, specifically for the isotope helium-3 for use as an energy source

on Earth. China launched the Chang'e-1robotic lunar orbiter on October 24, 2007. Originally planned for a one-year mission, the Chang'e 1 mission was very successful and ended up being extended for another four months. Chang'e 1 On completing the 16-month mission on March 1, 2009, was intentionally impacted on the lunar surface. On October 1, 2010, China launched the Chang'e 2 lunar orbiter. China landed the rover Chang'e 3 on the Moon on December 14, 2013, became the third country to have done so. Chang'e 3 is the first spacecraft to soft-land on lunar surface since Luna 24 in 1976. Since the Chang'e 3 mission was a success, the backup lander Chang'e 4 was re-purposed for the new mission goals. China launched on 7 December 2018 the Chang'e 4 mission to the lunar farside. On 3 January 2019, Chang'e 4 landed on the far side of the Moon.

India's national space agency, Indian Space Research Organization (ISRO), launched Chandrayaan-1, an uncrewed lunar orbiter, on October 22, 2008. The lunar probe was originally intended to orbit the Moon for two years, with scientific objectives to prepare a three-dimensional atlas of the near and far side of the Moon and to conduct a chemical and mineralogical mapping of the lunar surface. The uncrewed Moon Impact Probe landed on the Moon at 15:04 GMT on November 14, 2008 making India the fourth country to touch down on the lunar surface. Among its many achievements was the discovery of the widespread presence of water molecules in lunar soil.

The Chandrayaan mission was a major boost to India's space program. The idea of an Indian scientific mission to the Moon was first propounded in 1999 during a meeting of the Indian Academy of Sciences. The Astronautical Society of India (AeSI) carried forward the idea in 2000. Soon after, the Indian Space Research Organisation (ISRO) set up the National Lunar Mission Task Force which concluded that ISRO has the technical expertise to carry out an Indian mission to the Moon. In April 2003 over 100 eminent Indian scientists from the vast fields of planetary and space sciences, Earth sciences, physics, chemistry, astronomy, astrophysics and engineering and communication sciences discussed and approved the Task Force recommendation to launch an Indian probe to the Moon. Prime minister Sh. Atal Bihari Vajpayee announced the Chandrayaan project on course in his Independence Day speech on 15 August 2003, the Indian government gave the permssion for the mission.

The mission had the following stated objectives:

- to design, develop, launch and orbit a spacecraft around the Moon using an Indian-made launch-vehicle.
- to conduct scientific experiments using instruments on the spacecraft which would yield data,for the preparation of a three-dimensional atlas of both the near and far sides of the Moon,for chemical and mineral mapping of the entire lunar surface at high spatial resolution, mapping particularly the chemical elements magnesium, aluminium, silicon, calcium, iron, titanium, radon, uranium, and thorium etc.
- to increase scientific knowledge
- to test the impact of a sub-satellite (Moon Impact Probe – MIP) on the surface of the Moon as a fore-runner for future soft-landing missions.

The Chandrayaan mission defined these goals:

- High-resolution mineralogical and chemical imaging of the permanently shadowed north- and south-polar regions
- Searching for surface or sub-surface lunar water-ice, especially at the lunar poles

- Identification of chemicals in lunar highland rocks
- Chemical know how of the lunar crust by remote sensing of the central uplands of large lunar craters, and of the South Pole Aitken Region (SPAR), an expected site of interior material
- Mapping the height variation of features of the lunar surface
- Observation of X-ray spectrum ,thus Providing new insights in understanding the Moon's origin and evolution.

Chandrayaan mission was widely appreciated all over the world by the stakeholders like 'The American Institute of Aeronautics and Astronautics' (AIAA) has selected ISRO's Chandrayaan-1 mission as one of the recipients of its annual AIAA SPACE 2009 awards, which recognises key contributions to space science and technology.

- The International Lunar Exploration Working Group awarded the Chandrayaan-1 team the International Co-operation Award in 2008 for accommodation and tests of the most international lunar payload ever (from 20 countries, including India, the European Space Agency of 17 countries, USA, and Bulgaria).
- US-based National Space Society awarded ISRO the 2009 Space Pioneer Award in the science and engineering category, for the Chandrayaan-1 mission.

Chandrayaan-1 was India's first mission to the moon which has operated for almost a year (between October 2008 and August 2009). **The lunar orbiter is best known for helping to discover evidence of water molecules on the moon.**

Chandrayaan-2 (चन्द्रयान–२ Moon-craft) is India's second lunar exploration mission after Chandrayaan-1, Developed by the Indian Space Research Organisation (ISRO), the mission was launched from the second launch pad at Satish Dhawan Space Centre at Sriharikota in Nellore district of Andhra Pradesh

On 22 July 2019 at 2.43 PM IST (09:13 GMT) to the Moon by a Geosynchronous Satellite Launch Vehicle Mark III (GSLV Mk III). It consists of a lunar orbiter, a lander, and a lunar rover named Pragyan, all developed in India. The main scientific objective is to map the location and abundance of water. The lander and the rover will land on the near side of the Moon, in the South Polar Region at latitude of about 70° south probably on 7 September 2019. The wheeled Pragyan rover will move on the lunar surface and will perform on-site chemical analysis for a period of 14 days (one lunar day). It can relay data to Earth through the Chandrayaan-2 orbiter and lander, which were launched together on the same rocket. The orbiter will perform its mission for one year in a circularized lunar polar orbit of 100 × 100 km. **The primary objective of Chandrayaan-2 is to demonstrate the ability to soft-land on the lunar surface and operate a robotic rover on the surface. If successful, Chandrayaan-2 will be the southernmost lunar landing.**

A successful landing would make India the fourth country to achieve a soft landing on the Moon, after the space agency's of the USSR, the USA and China.

History of Chandrayaan-2:

On 12 November 2007, representatives of the Russian Federal Space Agency (Roscosmos) and ISRO signed an agreement for the two agencies to work together on the Chandrayaan-2 project. ISRO would have the prime responsibility for the orbiter and rover, while Roscosmos was to provide the lander. The Indian government approved the mission in a meeting of the Union Cabinet, held on 18 September 2008 and chaired by Prime Minister Manmohan Singh. The design of the spacecraft was completed in August 2009, with scientists of both countries conducting a joint review. Although ISRO finalised the payload for Chandrayaan-2 per schedule,the mission was postponed in January 2013 and rescheduled to 2016 because Russia was unable to develop the lander on time. Roscosmos later withdrew in wake of the failure of

the Fobos-Grunt mission to Mars, since the technical aspects connected with the Fobos-Grunt mission were also used in the lunar projects, which needed to be reviewed. When Russia cited its inability to provide the lander even by 2015, India decided to develop the lunar mission independently.The spacecraft's launch had been scheduled for March 2018, but was first delayed to April and then to October to conduct further tests on the vehicle. On 19 June 2018, after the program's fourth Comprehensive Technical Review meeting, a number of changes in configuration and landing sequence were planned for implementation, pushing the launch to the first half of 2019.Two of the lander's legs got minor damage during one of the tests in February 2019. Chandrayaan-2 launch was initially scheduled for 14 July 2019, 21:21 GMT (15 July 2019 at 02:51 IST local time), with the landing expected on 6 September 2019. However, the launch was aborted due to a technical glitch and rescheduled to 22 July 2019.On 22 July 2019 at 09:13 GMT (14:43 IST) GSLV MK III M1 on its first operational flight successfully launched Chandrayaan-2. The primary objectives of Chandrayaan-2 are to demonstrate the ability to soft-land on the lunar surface and operate a robotic rover on the surface. Scientific goals include studies of lunar topography, mineralogy, elemental abundance, the lunar exosphere (Outer Atmosphere), and probability of hydroxyl and water ice. The orbiter will map the lunar surface and help to prepare 3D maps of it. The onboard radar will also map the surface while studying the water ice in the South Polar Region and thickness of the lunar surface. The mission's lander is called Vikram (Sanskrit: विक्रम 'Valour') named after Vikram Sarabhai (1919–1971), who is widely regarded as the father of the Indian space programme.The Vikram lander will detach from the orbiter and descend to a low lunar orbit. It will then perform a comprehensive check of all its on-board systems before attempting a soft landing, deploy the rover, and perform scientific activities for approximately 14 days. The approximate combined mass of the lander and rover is 1,471 kg. The preliminary configuration study of the lander was completed in 2013 by the Space Applications Centre (SAC) in Ahmedabad.

The mission's rover is called Pragyan (प्रज्ञान,To 'lit'). The rover's mass is about 27 kg and will operate on solar power. The rover will move on 6 wheels traversing 500 meters on the lunar surface at the rate of 1 cm per second, performing on-site chemical analysis and sending the data to the lander, which will relay it to the Earth station. For navigation, the rover uses: Stereoscopic camera-based 3D vision. IIT Kanpur contributed to the development of the subsystems for light-based map generation and motion planning for the rover. However, its power system has a solar-powered sleep/wake-up cycle implemented, which could result in longer service time than planned. ISRO selected eight scientific instruments for the orbiter, four for the lander, and two for the rover. ISRO in 2010 had clarified that due to weight restrictions it will not be carrying foreign payloads on this mission. However, in an update just a month before launch, an agreement between NASA and ISRO was signed to include a small laser retroreflector from NASA to the lander's payload to measure the distance between the satellites above and the microreflector on the lunar surface.Chandrayaan-2 launch was initially scheduled for 14 July 2019, 21:21 GMT (15 July 2019 at 02:51 IST local time).However, the launch was aborted 56 minutes and 24 seconds before launch due to a technical glitch and rescheduled to 22 July 2019. Chandrayaan-2 was launched onboard the GSLV MK III M1 launch vehicle on 22 July 2019 at 09:13 GMT (14:43 IST) with better-than-expected apogee as a result of the cryogenic upper stage being burned to depletion, which later eliminated the need for one of the apogee-raising burns during the geocentric phase of mission. This also resulted in the saving of around 40 kg fuel onboard the spacecraft. ISRO mentions 6 objectives the Chandrayaan 2 mission aims at achieving.

Mr. Chaman lal ji -Great contributetor of RSS

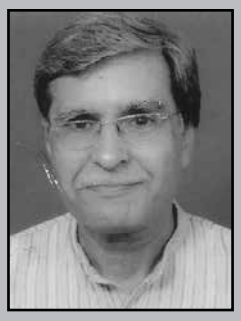

Raj Kumar Bhatia

Ex-President

Akhhil Bharatiya Vidyarthi Parishad

Sh. Chamanlal was an RSS (RashtriyaSwayamsevakSangh) swayamsevak (volunteer) who made RSS international. Soon after India's independence he played the role of keeping touch with those RSS swayamsevaks who went abroad but who did not want to severe their organizational links. With the passage of time the number of such persons kept swelling and ChamanLalji was their umbilical cord with India. Not this much, swayamsevaks abroad started 'shakhas' (organizational arrangement of RSS for bringing its followers together on daily or periodical basis). As RSS was essentially meant for uniting Hindus in India, its swayamsevaks who settled abroad felt that Hindus in foreign countries also needed to unite and thus HSS (Hindu Swayamsevak Sangh) came into existence meant for Hindus living abroad. ChamanLalji was the kingpin of this whole network.

He was not an ordinary person. He was a visionary and master organizer. Born in 1920 in Sialkot (now in Pakistan) he studied upto postgraduation having brilliant academic record (a gold medalist in M.Sc. Botany) but rather than opting for the life of an ordinary person confined to a profession and family life, which most people do, he chose to become a whole life 'pracharak' (in RSS pracharak happens to be one who dedicates his full time only for RSS work though for certain duration) in 1942. In initial years he was entrusted with various RSS responsibilities but once he was given the responsibility of keeping in touch with swayamsevaks settling abroad there was no looking back. And lo and behold Chaman Lalji made RSS international without travelling much. Most of his life he remained confined to his headquarter in RSS office cum residential complex of Jhandewalan in Delhi from where he spread his network of contacts all over the world. As the network grew bigger a need arose that someone should also travel abroad to strengthen the same and once HSS was started the need became more acute. But instead of Chaman Lalji himself travelling he was provided with assistance of many RSS pracharaks – Sh. Laxman Rao Bhide being the most prominent amongst them.

Activities of Chaman Lalji were not confined only to maintaining international contacts, along with many other responsibilities such as maintaining RSS records, creating a library, taking care of property matters of Jhandewalan and acting as driver of RSS car etc. He became a resource person in India for Hindus living abroad with respect to their requirements related to India and

Indian Government. Like a seasoned diplomat he also performed the duty of keeping eye on international affairs and would provide feedback as and when required by political leaders especially from BJP. Vice versa also. The leaders who were to travel abroad were provided inputs by him particularly with respect to Hindus and issues related to them and these leaders included none other than Sh. Atal Bihari Vajpayee also who was External Affairs Minister during 1977-80, top leader of BJP thereafter and Prime Minister of India after 1998. Sh. Vajpayee had greatest regard for Chaman Lalji which was explicitly observed when as Prime Minister he visited Jhandewalan to pay his homage to Chaman Lalji after his death in 2003.

Chaman Lalji was embodiment of simple living and high thinking. He used to live like an ordinary person who kept his requirements to the bare minimum. He used to wash his clothes himself and most of the time would wear khadi kurta-pyjama which he would wear without ironing.

I had the fortune of being well known to him. I wish to narrate two personal experiences with him. On the night of June 25, 1975 when internal emergency was clamped in the country I was sleeping in Jhandewalan. In midnight police landed there and there was likelihood of Chaman Lalji'sarrest. I brought this development to his notice and suggested to him to escape from there. So simple and unassuming he was that he felt helpless. I offered him my service in this matter. But the problem evaporated as police left by making just one symbolic arrest.

I went abroad for first time in 1994. It was to be a 4 week tour in US on invitation of the government. Still I wanted to have some references for my convenience. Chaman Lalji gave me enough references.

I have been associated with ChamanLalji memorial lecture which was started in 2004 and which was initially an annual feature but later became a biennial one. The first lecture was to be delivered by the then Sarsanghchalak of RSS Sh. KC Sudershan. I suggested that the then Prime Minister Sh. AtalBihari Vajpayee should be invited to preside over. Sh. Vajpayee agreed to this but in view of some exigency he could not make it. Such a great personality ChamanLalji was.

A WELCOME MOVE BY CBSE

The board has opened up opportunities for students in the Vocational stream

Syllabus of mathematics and science in secondary school education is one of the most discussed topics in the academic circles of India. Academicians parents and industry experts have long been arguing that mathematics and science taught in class Vlll – class X are not useful at work, unless the student decides to take up career in education board have understood the truth in this argument and have started taking corrective measures in this direction.

Advantageous

One such initiative taken by the central board of secondary education (CBSE) is remodeling its assessment scheme for class X vocational stream. Now, the vocational stream students have to study six subjects, where in the sixth subject is an additional subject. Those who fail in either social science can replace it with a vocational subject. The board exam results will be computed accordingly.

Those who want to reappear for the failed subject can take the compartment examination. So, now, CBSE students who are not com-fortable with one of the three subjects can still pass the board examination by clearing the vocational paper. But of course, they have to study one additional subject. This is mandated under the national skills qualifications framework (NSQF).

The 13 options from which the student can choose their sixth subject are: introduction to financial market ,food production basic agriculture, information technology, dynamics retailing, automobile technology, beauty and wellness, security, front office operations, introduction to tourism marketing and sales, banking and insurance and health care services.

Co-Scholastic

Holistic education demands development of all aspects of individual's personality including cognitive, affective and psycho motor domains. It is unfortunate that not much attention and emphasis is given to the development of interests, hobbies and passion of learners. Focusing on excellence in academics alone undoubtedly results in lop-sided development of personality. It is thus essential that due importance be given to participation in co-curricular activities like music, dance, art, dramatics and other areas of one's interest to make life more fulfilling and enjoyable.

"A Model School in Each District is our Priority"

Latest Interview

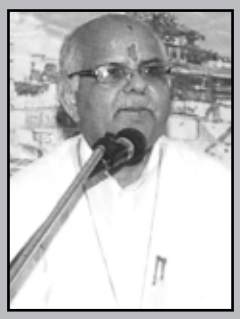

Interview with

Shri Yatindra Kumar Sharma, Joint Organising Secratery, Vidya Bharti Akhil Bharti Shiksha Sansthan

by

Dr. Pramod Kumar

(Organiser - Weekly)

New Delhi

Vidya Bharati is the largest educational institution in India dedicated to the cause of imparting value-based education from primary to senior secondary level. Managing 23,000 schools through 70 committees, and imparting education to 35 lakh students with the help of 1.35 lakh teachers is indeed not an easy task. The model that Vidya Bharati has evolved over the years for quality education has been appreciated globally. Now, it is in the process of expanding its wings in higher education and also at the global level. Organiser Chief News Coordinator Dr Pramod Kumar spoke to the Joint Organising Secretary of Vidya Bharati Shri Yatindra Kumar in New Delhi to know the future plans of the largest educational institution of Bharat.

What was the prime objective behind the start of Saraswati Shishu Mandir Yojna in 1952?

Five years after achieving political Independence, some karyakartas, while thinking about future education in the country, started the first school in 1952 at Gorakhpur, Uttar Pradesh. After serious thought, the school was named as Saraswati Shishu Mandir—where both the teachers and the students experience the feel of a temple. The prime objective was to prepare the young generation, which is knowledgeable, rooted in Indian cultural ethos, possess high moral character and human values. The Saraswati Shishu Mandir Yojna is basically based on the age-old Bharatiya values of life and philosophy. The idea behind the whole thinking was that the school should have the feel of a family, where the students, parents, teachers and management are interconnected. In the beginning, plans were formulated to expand the schools in Uttar Pradesh only. Then, they were expanded to Madhya Pradesh. A Samiti, Shishu Shiksha Prabandh Samiti, was first constituted in 1958 to look after this work. Till 1977, about 600 schools had been started in different states. Then the discussion began to give it a national shape. After the Emergency, a grand Shishu Sangam of students from classes 3 to 7 was held in New Delhi in 1978 in which we had initially planned to have 10,000 students, but actually, 16,000 students participated. It was the world's largest camp of school students in that year.

How was Vidya Bharati Akhil Bharatiya Shiksha Sansthan started?

Vidya Bharati Akhil Bharatiya Shiksha Sansthan was formed in 1978. Gradually, various new dimensions were added to its work. In 1979, the first Chintan Baithak was held at Lalsagar (Jodhpur) where the action

plan for expansion was chalked out and the boundaries for social development, education, geography were defined. Later, a research centre was planned which now functions in Lucknow. A research journal is also published. Then Sanskriti Bodh project was started. It is managed by a separate Samiti based in Kurukshetra. Last year, 22 lakh students appeared for the Sanskriti Bodh test all over the country. Apart from students, there are tests for teachers and parents too so that they know about the Bharatiya Sanskriti. The Second Chintan Baithak of Vidya Bharati was held at Palghat in 2005, where the objectives and targets, defined in 1989, were reviewed. The Third Chintan Baithak was held in Kurukshetra in 2008 for further planning.

How many schools, students, teachers and parents are associated with Vidya Bharati now?

Today, 70 Samitis running schools all over the country are affiliated to Vidya Bharati. There are schools in all the Prants except Mizoram. If we think at the district level, we have work in 624 districts. There are two parts of the schools—formal and informal. Schools from Shishu Vatika to 12th standard are formal schools, while the Ekal Vidyalayas and Sanskar Kendras are informal schools. The number of formal schools is 13,000, while the number of informal schools is 10,000. By and large, about 35 lakh students study in all these schools. The number of teachers is 1.35 lakh. About one crore parents are associated with us today.

What is the mechanism to keep in touch with the Alumni and to use their talent for the betterment of the society?

We have about 10 lakh alumni who are well-settled in their respective areas. They are our real capital, which should be used for the betterment of the nation. Alumni have two sections. One, the students who are still studying somewhere and the second are those who have settled in various fields. We are gradually creating a system from schools to the national level to reconnect to the alumni. Every school is collecting data about its alumni. Meetings, camps and conferences of the alumni have begun. We have also started a web portal to connect with them. It is managed from Kolkata. About 95 per cent of schools have been registered on this portal. About one lakh alumni have also registered themselves on the portal. We have online contact with them now. We are also listing them according to their areas of work like education, administration, commerce, business, industry, management, army, police, etc. After preparing this data we will think how they can be better utilised for those areas.

How many schools of Vidya Bharati are digitised today?

Work on it has just begun. About 10 per cent of schools have digital classrooms.

Whom do you think are some of the foundation stones in the journey of Vidya Bharati?

There are countless people. But the contribution of Nanaji Deshmukh who started the first school in 1952 cannot be ignored. Similarly, personalities like Shri Deendayal Upadhyaya who drafted its first constitution in 1952, Shri Bhaurao Deoras, Shri Hanuman Prasad Poddar and Shri Krishna Chand Gandhi are remembered with high reverence. In states, Shri Narayandas in Uttar Kshetra, Shri Jaidev Pathak in Rajasthan, Shri Roshanlal Saxena in Madhya Pradesh, Shri Acharyulu in Andhra Pradesh and Shri K. Bhaskar Rao in Kerala were the prominent foundation stones.

If you have to list five major achievements of Vidya Bharati right from the initial days, what are they?

The first achievement of Vidya Bharati is marvellous examination results. In all the State Education Boards, our students achieve a place in the merit every year. Once, the ‘BBC’ prepared a report on the achievements of Vidya Bharati schools in Odisha. Shri Digvijaya Singh, when he was CM of Madhya Pradesh, felicitated our students and teachers for their wonderful performance in exams. In CBSE also our students excel regularly. The second achievement

is our values—morality, spirituality and the values of life which are the core of our education system. It is because of the values that many educational institutions are eager to join hands with us. Many institutions study our model and try to emulate it. The third achievement is our alumni who are leaders in various spheres of their life today. They are our cultural ambassadors all over the world. Fourth is the dedicated team of teachers. Ordinary people from society joined us as teachers and we transformed them into extraordinary persons through our working method. They impart education through their personal conduct and qualities. They are in the field of education considering it a pious work where they work for building responsible citizens. These teachers are today active in various spheres of life. Fifth achievement is that the students getting education in their respective mother tongues are successful and hold higher posts in different spheres of life. Vidya Bharati is also successful in abolishing untouchability and malpractices prevailing in over one lakh villages.

Privatisation of higher education has increased commercialisation of education. Do you have any plan to start private universities also in future to provide quality and affordable education to the deserving students?

Vidya Bharati is against the commercialisation of education. Education should be autonomous and managed by educationists. Since our prime objective is to impart sanskars through education, we have focused on education up to 12th standard which is the prime age of getting sanskars. Even then, about three years back we registered a body, Vidya Bharati Uchch Shiksha Sansthan. It is based in Noida. Hence, we are ready to enter the field of higher education in the country. We hope for a big stride in the field of higher education in the days to come.

A few years back, Vidya Bharati started engaging its teachers, students and parents into some constructive activities, particularly in the localities where the school is run. What is the progress on that front?

Yes, this experiment is gathering momentum. Since the beginning, we believe that school is the small form of society and it should emerge as centre of social awakening. It should not be like an isolated island. At the Palghat Chintan Baithak, we decided that every school in its vicinity should detect some social issues and use the manpower of students, teachers, parents and alumni to address those issues. Many schools have started inspiring work in this direction.

How many Ekal Vidyalayas are run in remote areas and how are they proving to be a medium of social change in those areas?

Under the informal education system, we have about 5000 Sanskar Kendras, which mostly function in deprived or underdeveloped slum areas of the cities. Also, about 5000 Ekal Vidyalayas are run mostly in the tribal, coastal and border areas. Some Ekal Vidyalayas are run in J&K and North Eastern states also. These are mainly in areas where the government agencies have not reached so far. We have designed a special curriculum for these schools. It particularly focuses on language and mathematics. For sanskar, stories, short stories, games, inspiring anecdotes from the life of great personalities are taught. These schools have generated great interest in education in those areas. Not only the students but also the parents are ready to teach their children. Secondly, the spirit of national awakening has been generated among those people, anti-national activities have effectively been curbed there. The people there have also come out from various types of superstitions. Many social evils have been arrested.

What was the input of Vidya Bharati for new Education Policy and how many of your suggestions have been incorporated in the draft policy?

We organised many conferences and discussions involving scholars and educationists to gather their input for the Education Policy. We mainly gathered 33 suggestions and submitted to Dr Kasturirangan Committee.

Then we had three meetings with the Committee to exchange our idea of education and expectations from the future Education Policy. I feel about 80 per cent of our recommendations have been accepted by the Committee. Now after the release of the draft policy, we are studying it and are again discussing them with the scholars. We would again give our feedback to the government before August 31, 2019.

What is your overall opinion about the draft Education Policy?

By and large, the draft is good and presents an outline for the change in a larger context. In 1998 also, the Vidya Bharati had organised scholars' meets to gather opinion about new education policy. A meeting was held in Delhi which was attended by about 350 scholars. At that time the majority opinion was that there is no need to formulate new education policy. If the government implements the recommendations of previous committees alone, a big change will be visible in the country's education sector. A memorandum to that effect was presented to the then HRD Minister Dr Murli Manohar Joshi. Even today, we say the draft of the new Education Policy is good, but the major question is of its timely and effective implementation. If the system implements it with a strong will and the government also provides the desired budget for it, the nation will get inspiring results in the field of education. Also, there is a need to prepare the teachers to impart education accordingly. About one crore teachers have to do it. They should be mentally prepared for it. If this happens, the new education policy will show good results.

Sometimes there are reports that the teachers working in most of Vidya Bharati schools are underpaid. Comment.

No, it is wrong to say it. We do not use the word 'salary'. Rather we use the word 'honourarium', as we believe that we cannot pay for the commitment and dedication with which the teachers work in our schools. We grant them respectable honourarium. Their contribution is priceless to us. Even then we have some high paying schools. Our schools in Delhi, Haryana and Punjab pay according to 7th Pay Commission. Some schools pay according to 6th and 5th Pay Commission. We also provide other facilities like EFP and ESI to all the teachers. Since all our schools are run from social contribution and receive no aid from the government, we pay based on the social contribution we receive. Since beginning our policy has been that whatever amount we receive as fees, 80 per cent of that will be paid to the teachers as honourarium. Remaining 20 per cent will be used for other activities of the school. The amount collected through fees is not used for the construction of the building. For it, we gather funds from society. The teachers joining our schools come with the spirit of dedication and commitment and not to earn money. That is why they feel satisfied.

What are the plans of Vidya Bharati for the next two-three years?

By the year 2024, our plan is to prepare at least one model school in every district which takes a lead in that area. That school should emerge as an ideal school imparting not only quality education but also ensuring sanskars, values and character, which are the core of our education system. Presently, we have work in 624 districts. In next three years we want to have schools in every district. Socially, also we want to have students from all segments of the society in our schools.

What about sports activities through Vidya Bharati?

Yes, Vidya Bharati students have excelled in sports also. When the sports activities began in 1988 from Gwalior with 250 children, we had focused on four types of sports. Now it is the mainstream activity in Vidya Bharati schools. Despite not having adequate sports infrastructure and facilities in schools, we have been able to discover and nurture sports talent all over the country. Sports activities are organised from schools to national level. School Games Federation of India (SGFI) recognised us in 2007. In the first year, 778 students participated

in various sports activities and won 20 medals. In 2007, our rank was 33rd. In 2018, our students won 383 medals and our rank was 10th. SGFI has honoured Vidya Bharati for this achievement. They have started an award for discipline and cleanliness also. That too was first won by Vidya Bharati. Now Vidya Bharati students have started participating in international sports events also. Eight students from Vidya Bharati schools are now participating in international sports events. We are creating Vidya Bharati International Sports Academy in Kanpur so that we can develop international level sportspersons for the country. We have also decided to prepare good army officers.

There are reports that the Vidya Bharati is starting a military school in Uttar Pradesh. What is that project?

Yes, it is being started at Shikarpur in Bulandshahar District of Uttar Pradesh in the memory of former RSS Sarsanghachalak Shri Rajju Bhaiya. It is going to start shortly. The prime objective behind that project is to produce good military officers. We would impart regular education in the school. But the students will be imparted special coaching about the military so that they are selected in the army easily. This school will be affiliated to the Central Board of Secondary Education (CBSE). Land for the school has been donated by a local retired military person.

Vidya Bharati has also started work in Nepal. What is the status of that work?

Yes, we started work in Nepal about a decade back. We work there through Pashupati Shiksha Samiti. We only provide them with guidance and allow them to follow our work method. The schools are managed by the local people only. Presently, about 30 schools are run under this collaboration. We have also received requests from various parts of the world to provide value-based education there. Discussion is going on within Vidya Bharati how such requests can be addressed and how we can help the organisations in foreign countries for value-based education.

Anything else you wish to mention about Vidya Bharati?

Words like Convent, Kindergartens are very popular in modern education. Instead of using such words, we use the word 'Shishu Vatika' and focus on five-dimensional growth of the children. Instead of following the Harvard education system, we have developed our own 'panchmukhi' and 'panchpadi' education system purely based on Indian needs and ethos. Two experiments have been conducted in Shishu Vatika. One is 'Samarth Bharat' where the focus is on pre-birth sanskars. The young couples are imparted training under this project on how to conceive and nurture a child with high values. This experiment has proved to be a big success. There is a plan to start about 100 such projects all over the country. Second, we say that Home is the School. We have designed a curriculum on how a child can be imparted education at home. We are of the opinion that the 'school atmosphere should be at home and home atmosphere should be at school'. That is why training for parents has been started. This is how a new education method has been developed through Shishu Vatika.

Another major project of Vidya Bharati is 'Samagra Vikas' (holistic development) because we believe that exam-oriented method does not evaluate the real talent of the student. Rather, we need a method that focuses on the holistic development of a child. At the moment the entire education system is exam-oriented. The focus should be on education and not on the exam alone. We have developed a curriculum up to eighth standard for holistic development of the students. The method of evaluation that we have developed has produced inspiring results. Vidya Bharati is the organisation, which thinks and works in totality taking all stakeholders together—parents, students, teachers and management. That is why we regard the school as a family where all stay and work with a family spirit. We believe in cooperation and not exploitation. It is a contribution to nation-building through quality education.

Padma Shri Piyong Temjen Jamir

PERSONALTY

Pankaj Sinha
MSc. Math, B.Ed.
Organising Secretary
Vidya Bharti Nagaland

Now 88, Piyong Temjen Jamir's dedication to promotion of Hindi and also social service have been acknowledged with 14 awards over the past few decades.In 2006, a Naga educationist in full traditional regalia received the Ganga Saran Award from the hands of then president of Bharat APJ Abdul Kalam. The memory hangs framed prominently on the wall of the awardee's home on the outskirts of Dimapur town. Twelve years later, the same Naga personality was on stage in Delhi, his attire again proclaiming his Naga identity, receiving the Padma Shree from President Ram Nath Kovind.

Battling stigma, threats, and ignored by his own people, Piyong Temjen Jamir, the lone singleminded crusader of Hindi language in Nagaland, probably wants to send a message to his critics that his identity as a Naga has not been compromised by his love for the Hindi – a language not favored for long in Nagaland as well as many parts of northeast India during the peak of separatist movements. And the man, reverently addressed as Guruji, has always draped himself in traditional weaves for each award or even for any photo for the media. Jamir, the principal of Rashtrabhasha Hindi Shikshan Sansthan, located in Nagaland's cosmopolitan town of Dimapur, was recently awarded the

Padma Shree for distinguished service in the field of literature and education. An honour well deserved, as anyone who had witnessed Jamir struggle through his life to promote Hindi in the state, would say.

Hardly anybody had any interest in Hindi and I was looked down upon by my own people and in my own village because I taught Hindi," Jamir recalls of his early days as a Hindi teacher in his home state. "I became a pariah among my own people, but my love for the language and that we can create a script for our native language better with Devnagri kept me going against all odds." "But," he adds with a smile, "even I do not understand how I came to love this language so much."

Jamir published articles in local newspapers putting forth the argument that Devnagri was more suited to script the tonal and rhythmic language of the Naga tribes than the Roman script. Substantiating, he points out the phonetic similarity between Sanskrit and Asian Pacific language.

The educationist was issued threats on more than one occasion by

separatists fighting for independent Nagaland. “The undergrounds threatened me. They didn’t like me teaching and promoting Hindi as it was perceived as the language of the oppressors. If India doesn’t give us independence, we won’t allow Hindi to come here, they said. I made many enemies,” he says. The octogenarian recalls, “Uss dino me koi Hindi ko pyar nahi karta tha; Hindi wala ka matlab hai chota aadmi. But, Jamir persisted.

Starting with three students – two relatives and one a friend’s son – in a thatched accommodation and then shifting to the sprawling current site of the Rashtra Bhasha Hindi Shikshan Sansthan or Hindi College, the journey of Piyong Temjen Jamir has been a long and testing one.

Jamir’s tryst with Hindi began in 1963 when he left his native place to learn the language at Wardha in Maharashtra. He had attended a regular school till class VI in his village of Longsa, Mokokchung district, but lost interest in studies and more interested in farming, the main occupation in Naga villages.

After completing the course in Hindi at Wardha, he stayed back for two more years to acquire more knowledge of the language. “Others couldn’t stay there for even a year due to the heat, but I stayed for seven years. I was resolute. I wanted to learn to speak Hindi properly,” he says.

Coming back to Nagaland, he got a teacher’s post in Tuensang later left for Agra in 1973 to acquire B. Ed degree. Back to his state again, Jamir worked as an instructor in the Hindi Training College, originally established as a branch of the Wardha institute in 1962 in Dimapur as Rashtra Bhasha Vidyalaya. Frustrated by the disregard for the language among the local populace, he resigned from the college in 1982 and contested in the state assembly election unsuccessfully. “I was a broken man after my election defeat but my family supported me and urged me to carry forward my profession as a Hindi instructor. From 1982 to 1987, I lived on the earnings of my wife and daughter,” Jamir says.

In 1984, the Wardha institute withdrew its sponsorship of its branch in Dimapur and the thenincharge of the college coaxed Jamir, who was also in the managing board of the institute, to take over the institution as its owner. In 1988, resolute to revive the college, he shifted location and changed the name to Rashtra Bhasha Hindi Training Institute.

Jamir had also taken his young wife, Pangertula Jamir(now 77yrs), to Wardha to train her in Hindi and she became his pillar throughout the days of struggle. Jamir recalls how his wife faced off the undergrounds when they threatened him. “She is a strong woman and this journey would not have been possible without her. She gave me courage to go ahead with my plans for the institute,” Jamir says.

Jamir says promoting Hindi has also helped him serve the society in many ways, including get local youths employed. “One of my first students was a girl whose husband had left her and their kids. She liked the language. I sent my wife to teach her at home and I helped her pass her exams. Then she got the post of Hindi teacher in her village.”

“Hindi ke seva karte huye logon ka sewa bohot kiya maine,” Jamir says. “That’s why the Lord has looked after me and my family’s well being,” he adds.

An avowed follower of Mahatma Gandhi, it was no surprise hence when he was dubbed as Mahatma Gandhi of Nagaland and Father of Hindi in Nagaland. But he is yet to get due recognition from his own brethren.

More than 2000 Hindi teachers in Nagaland have been trained under the tutelage of Piyong Temjen Jamir. Today, Jamir’s children teach Hindi. His eldest son Wallen Jamir has taken over his father’s institute.

In a felicitation programme of founder president of JSS organised by Vidya Bharati affiliate Janjati Shiksha Samiti (JSS) of Nagaland (Jamir is founder President of JSS), the octogenarian made a quite entrance wearing the Ao Naga motifs on a traditional waist coat flanked by members of his family.

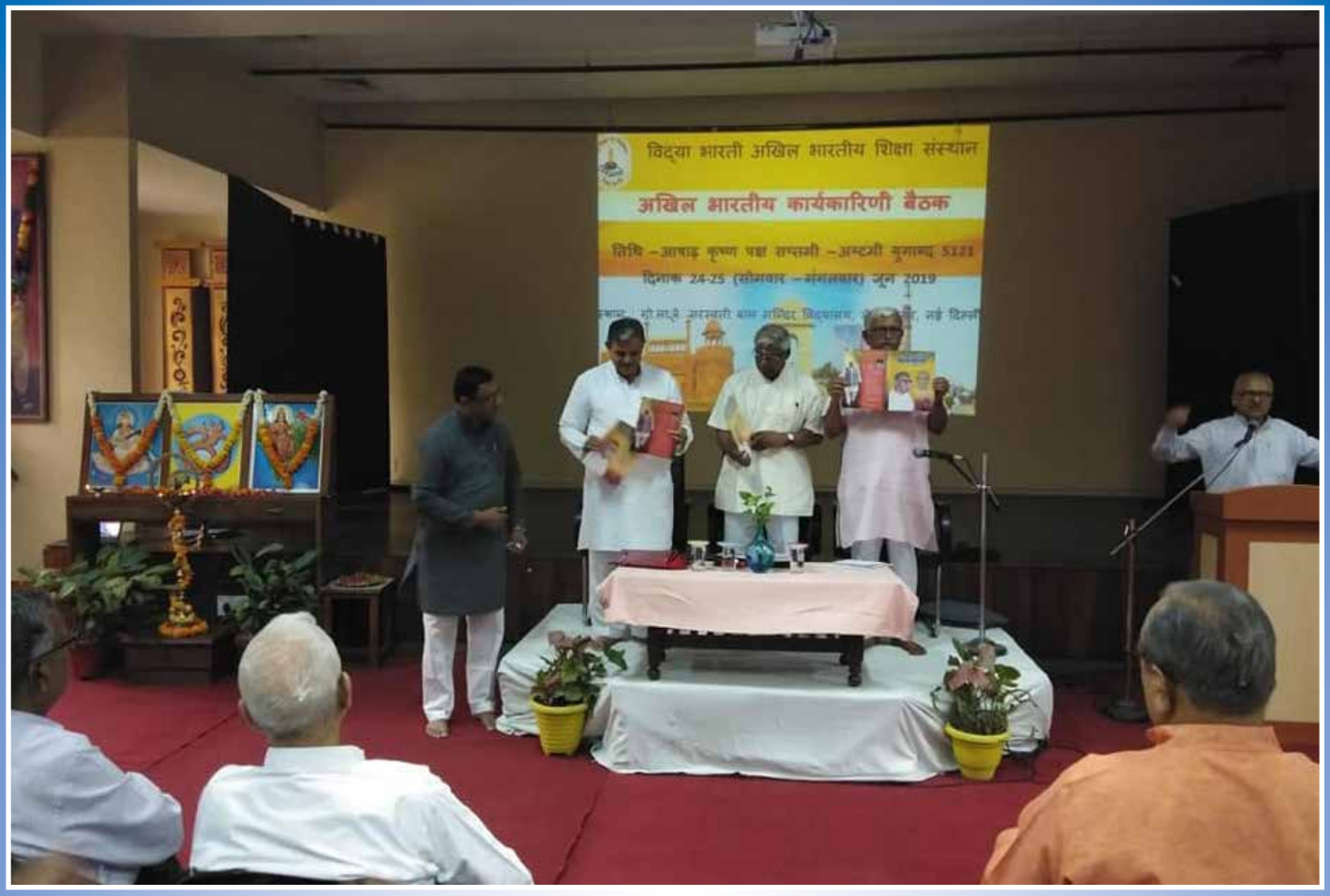

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान
अखिल भारतीय कार्यकारिणी बैठक

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान
उत्तराखण्ड

मिले सब भारत संतान,
एकतान एक प्राण
गाओ भारत का यशगान।
भारत भूमि सा है क्या कोई स्थान?
कोई आद्रि हिमाद्रि है क्या इसके समान?
फलदात्री, बसुमती, स्रोतस्वती,
पुण्यवती विविध रत्नों की है खान।
हो भारत की जय, जय भारत की जय।।
भारत का करो जयगान!
डरते हो डरपोक, साहस का करो भरोसा,
धर्म की हो जीत सदा,
रखो विश्वास पर भरोसा।
छिन्न–भिन्न हीनबल छोड़ो,
एकता से मिलेगा बल, सबको जोड़ो।
माँ को निश्चित मिलेगा प्राप्य सम्मान

भारत की जय हो, जय भारत की जय हो।।

(बंकिमचंद चटर्जी का लिखा गीत आज भी प्रेरक है।)

i|dk’kd ,o| e|n|d % डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी के द्वारा विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान (स्वामी) के लिए नक्षत्र आर्ट, बी–255, नारायणा इण्डस्ट्रीयल एरिया फेस–1, नई दिल्ली (प्रेस) से मुद्रित एवं प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065 (प्रकाशन स्थल) से प्रकाशित।
lEikn d–सविता कुलश्रेष्ठ